प्रकाशिका - 7

Prakashika - 7

# रागार्णवम्

(रागचन्द्रिका व्याख्या सहित)

सम्पादक एवं व्याख्याकार

**भगवत्शरण शुक्ल**

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

॥ विज्ञानमृताम्य ॥

National Mission for Manuscripts

# रागार्णवम्

(रागचन्द्रिका व्याख्या सहित)

NMM

Prakashika Series
No. 7

General Editor
Dipti S. Tripathi

# रागार्णवम्

## (रागचन्द्रिका व्याख्या सहित)

सम्पादक एवं व्याख्याकार

भगवत्शरण शुक्ल

NMM

NATIONAL MISSION FOR MANUSCRIPTS

and

DK PRINTWORLD

Publishers of Indian Traditions

Cataloging in Publication Data — DK
[Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>]

Rāgārṇavam : Rāgacandrikā ṭīkā sahita / sampādaka evaṁ
vyākhyākāra, Bhagavatśaraṇa Śukla.
p. cm.
Sanskrit and Hindi.
ISBN 13: 978-93-80829050

1. Ragas — Early works to 1800. 2. Music — India — Early works to 1800. I. Śukla, Bhagavatśaraṇa. Rāgacandrikā.

DDC 780.954 23

© राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली, 2013

प्रथम संस्करण, 2013
ISBN 978-93-80829-05-0
978-93-80829-02-9 (series)

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण, या किसी भी विधि (जैसे – इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, कॉपीराइट धारक एवं प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशक
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
11 मानसिंह रोड
नई दिल्ली - 110 001
फोन : (011) 2338 3894, फैक्स : 2307 3340
ई-मेल : director.namanmi@nic.in
वेब : www.namami.org

एवम्

डी॰के॰ प्रिंटवर्ल्ड (प्रा॰) लि॰
पंजीकृत कार्यालय : "*वेदश्री*," एफ-395, सुदर्शन पार्क
(मेट्रो स्टेशन : रमेश नगर) नई दिल्ली – 110 015
फोन : (011) 2545 3975; 2546 6019; फैक्स : (011) 2546 5926
ई-मेल : indology@dkprintworld.com
वेब : www.dkprintworld.com

मुद्रक : डी॰के॰ प्रिंटवर्ल्ड (प्रा॰) लि॰, नई दिल्ली

# विषयानुक्रमणिका

आमुख – दीप्ति शर्मा त्रिपाठी xvii

भूमिका – भगवत्शरण शुक्ल xix

रागार्णवम् – मूल पाठ, सरगम सहित १

रागार्णवम् – रागचन्द्रिका व्याख्या २१

१. राग भैरव २१

१. भैरव राग २. अहीर भैरव ३. नट भैरव
४. आनन्द भैरव ५. बंगाल भैरव ६. शिवमत भैरव
७. सौराष्ट्र भैरव ८. प्रभात भैरव ९. कोमल भैरव
१०. कौंसी भैरव ११. झीलफ भैरव १२. वैरागी भैरव
१३. भटियारी भैरव

२. राग भैरवी २७

१. भैरवी राग २. आदि भैरवी ३. शुद्ध भैरवी
४. आनन्द भैरवी ५. जोगी भैरवी ६. जोग भैरवी
७. चन्द्रिका भैरवी ८. सिन्धु भैरवी ९. नटभैरवी
१०. सोमभैरवी ११. सुरभैरवी १२. सिंहमेल भैरवी
१३. सालगभैरवी १४. पूर्वभैरवी १५. जिंग्लाभैरवी
१६. वसन्तभैरवी

३. राग वराटी ३२

४. राग सैन्धवी ३३

१. राग सिन्धवी २. राग सैन्धवी (दक्षिण भारतीय)

३. छाया सैन्धवी

५. राग मध्यमादि ३५

१. टीकास्थ राग २. मध्यमाद सारंग

६. राग बंगालिका ३६

१. टीकास्थराग बंगालिका २. गौरी बंगाल ३. कल्लोल बंगाल
४. देशिका बंगाल ५. नवरस बंगाल ६. मेच बंगाल
७. सालवि बंगाल

७. राग मालकोश ३९

१. टीकास्थ राग २. मालकौंस ३. चन्द्रकौंस
४. मधुकौंस ५. जोंगकौंस ६. नंदकौंस
७. मोहनकौंस ८. जयकौंस ९. गुणकौंस

८. राग रोडिका ४२

९. राग खम्भावती ४३

१०. राग गौरी ४४

१. राग गौरी (भैरव थाट का) २. राग गौरी (पूर्वी थाट का)
३. ललिता गौरी ४. मालीगौरी
५. मारुवगौरी ६. छायागौरी
७. ललितागौरी (कर्नाटकीय)

११. राग गुणक्रिया ४७

१. टीकास्थ राग गुणकरी २. गुणकली ३. उत्तरी गुणकली

१२. राग ककुभ ४९

१३. राग हिडोल ५०

१. टीकास्थ राग २. सांझ का हिडोल
३. मार्ग हिडोल ४. नाग हिडोल

१४. राग वेलावली (बिलावल) ५२

दक्षिण भारतीय पद्धति के राग

१.टीकास्थ राग २.नाग वेलावली ३.नटन वेलावली
४.हंस वेलावली ५.जय वेलावली ६.सामंत वेलावली
७.कन्नड वेलावली ८.शुद्ध वेलावली ९.सालग वेलावली

उत्तर भारतीय पद्धति के राग

१.बिलावल राग २.अल्हैया बिलावल ३.देवगिरि बिलावल
४.यमनी बिलावल ५.शुक्ल बिलावल ६.नट बिलावल
७.सरपरदा बिलावल ८.कुकुभ बिलावल ९.हमीर बिलावल

१५. राग देशाख्य ५८

१.टीकास्थराग देशाख्य २.देशाख्य (देवसाख) ३.देशाख

१६. राग पटमञ्जरी ५९

१.टीकास्थराग पटमञ्जरी २. काफी थाट का पटमञ्जरी
३.बिलावल थाट का पटमञ्जरी ४. सम्पूर्ण जाति पटमञ्जरी
५.औडव सम्पूर्ण जाति पटमञ्जरी

१७. राग ललिता ६२

टीकास्थ राग
१.उत्तर भारतीय ललित २. दक्षिण भारतीय ललित
३.अहीर ललित (उत्तर भारतीय) ४. पुष्प ललित (उत्तर भारतीय)
५.पूर्ण ललित (कर्नाटकीय) ६. मारुव ललित (कर्नाटकीय)
७.राम ललित (उत्तर भारतीय) ८. श्रीललित (उत्तर भारतीय)
९.शुद्धललित (कर्नाटकीय) १०. सारंगललित (कर्नाटकीय)

१८. राग रामक्रिया ६६

१.टीकास्थ राग रामक्रिया २. रामक्रिया (उत्तर भारतीय)
३.रामक्रिया (कर्नाटकीय) ४. पूर्व रामक्रिया (कर्नाटकीय)
५.सिन्धु रामक्रिया (कर्नाटकीय)

१९. राग दीपक ६९

१. टीकास्थ राग
२. पूर्वी थाट दीपक राग
३. बिलावल थाट दीपक राग
४. कल्याण थाट दीपक राग
५. कोकिल दीपक
६. नाग दीपक
७. भानुदीपक
८. सोमदीपक
९. हंसदीपक

२०. राग कर्नाटी ७३

१. टीकास्थराग
२. नट भैरवी मेल कन्नड
३. धीरशङ्कराभरणमेल कन्नड

उत्तर भारतीय राग काह्नणा के प्रकार

१. दरबारी काह्नणा
२. मियाँ की काह्नणा
३. गारा काह्नणा
४. कौंसी काह्नणा
५. आभोगी काह्नणा
६. नायकी काह्नणा
७. काफी काह्नणा
८. नवरंग काह्नणा
९. गुँजी काह्नणा
१०. वागेश्री काह्नणा
११. सूहा काह्नणा
१२. हुसेनी काह्नणा
१३. सुघराई काह्नणा
१४. शहाना काह्नणा
१५. रेवती काह्नणा

दक्षिण भारतीय प्रकार

१. गन्धर्व कन्नड
२. नवरस कन्नड
३. पूर्व कन्नड
४. मेच कन्नड
५. वसन्त कन्नड
६. शुद्ध कन्नड
७. मारुव कन्नड
८. मारुव कन्नड
९. वृन्दावन कन्नड
१०. हिन्दोल कन्नड
११. सिन्धु कन्नड
१२. साम कन्नड

२१. राग देशी ८३

१. टीकास्थ राग
२. शुद्ध देशी (उत्तर भारतीय)
३. कोमल देशी (उत्तर भारतीय)
४. शुद्ध देशी (कन्नड)

५. मारुव देशी (कन्नड)

२२. राग कामोदी ८५

१. टीकास्थराग कामोदी २. पहाड़ी कामोदी ३. इरकल कामोदी

२३. राग केदारी ८७

१. टीकास्थ राग २. केदार राग ३. चाँदनी केदार
४. जलधर केदार ५. मूलहा केदार ६. श्याम केदार
७. संगम केदार ८. केदारा ९. केदार (कन्नड)

२४. राग नाटिका ९०

१. टीकास्थ राग

उत्तर भारतीय

१. नट २. गम्भीर नट ३. छाया नट
४. सारंग नट ५. शुद्ध नट ६. हरी नट

दक्षिण भारतीय

१. नाट २. आहीरी नाट ३. इन्दु सारंग नाट
४. गम्भीर नाट ५. छाया नाट ६. सारंग नाट
७. सालंग नाट ८. प्रताप नाट ९. सिन्धु नाट

२५. राग श्रीराग ९६

१. टीकास्थ राग

उत्तर भारतीय राग

१. जैत श्री २. धवल श्री ३. धौल श्री
४. बंगे श्री ५. मगद श्रीराग ६. मापेच श्री
७. लंके श्री ८. हंस श्री ९. श्री रागम्

दक्षिण भारतीय

१. श्री राग २. जय श्री ३. जयन्त श्री
४. मागध श्री ५. मालव श्री ६. विजय श्री

२६. राग वसान्तिका १०२

१. टीकास्थ राग

उत्तर भारतीय

१. वसन्त २. कनक वसन्त ३. कल्याण वसन्त
४. गम्भीर वसन्त ५. गोपी वसन्त ६. जीविका वसन्त
७. जोगी वसन्त ८. तान वसन्त ९. दन्ति वसन्त
१०. मयूर वसन्त ११. हिडोल वसन्त

दक्षिण भारतीय

१. वसन्त २. कनक वसन्त ३. कल वसन्त
४. कल्याण वसन्त ५. गोपिका वसन्त ६. पुष्प वसन्त
७. प्रताप वसन्त ८. भोग वसन्त ९. मारुव वसन्त
१०. राग वसन्त ११. विजय वसन्त १२. वीर वसन्त
१३. शुद्ध वसन्त १४. सिह्लेल वसन्त १५. हिन्दोल वसन्त

२७. राग मालव ११०

२८. राग मालश्री १११

२९. राग धनाश्री ११३

१. टीकास्थ राग २. पूरिया धनाश्री
३. शुद्ध धनाश्री ४. सिन्धु धनाश्री

३०. राग आसावरी ११५

१. टीकास्थ राग २. कोमल ऋषभ आसावरी
३. जोगी आसावरी ४. शुद्ध आसावरी

३१. राग मेघ ११७

३२. राग मल्हारी ११८

१. टीकास्थ राग

उत्तर भारतीय

१. मल्हार २. गौड़मल्हार ३. जयन्तमल्हार
४. नटमल्हार ५. नटमल्हारी ६. मियाँमल्हार

७. मीरामल्हार ८. मेघमल्हार ९. रामदासीमल्हार
१०. साभेरीमल्हार ११. सूरमल्हार १२. सोरठमल्हार
दक्षिण भारतीय
१. गौड़मल्हार २. मेघमल्हार ३. मोहनमल्हार
४. रीतिमल्हार ५. सामन्तमल्हार ६. सुरटिमल्हार
३३. राग देशकार १२५
१. टीकास्थ देशकार
३४. राग भूपाली १२६
१. टीकास्थ राग २. भूपाल ३. गगन भूपाल
४. नाग भूपाल ५. वसन्त भूपाल ६. सोम भूपाल
७. हंस भूपाल
३५. राग गुर्जरी १२९
१. टीकास्थ राग २. गुर्जरी तोडी
३६. राग टंक (उत्तर भारतीय) १३०
१. टीकास्थ राग २. टंकी (उत्तर भारतीय)
३. सौराष्ट्र टंक (उत्तर भारतीय) ४. श्री टंक (उत्तर भारतीय)
५. टंक्क राग (दक्षिण भारतीय)
३७. राग त्रिवण १३२
१. टीकास्थराग त्रिवेणी
३८. राग गौड़ १३४
१. टीकास्थ राग २. देश गौड़ (उत्तर भारतीय)
दक्षिण भारतीय
१. राग गौड़ २. ईशगौड़
३. कन्नड़गौड़ ४. केदारगौड़
५. चन्द्रिकागौड़ ६. छायागौड़
७. देश्यगौड़ ८. पूर्वगौड़

९. भानुगौड़ १०. मारुवगौड़
११. रीतिगौड़ १२. सैन्धवगौड़

३९. राग पहाडी १३८

१. टीकास्थराग पहाडी

४०. राग देवगिरि १४०

१. टीकास्थराग देवगिरि २. बिलावल देवगिरि
३. देवगिरि (कर्नाटकीय)

४१. राग पञ्चम १४१

१. टीकास्थ राग

उत्तर भारतीय

१. पञ्चम राग (भैरव थाट) २. पञ्चम राग (मारवा थाट)
३. पञ्चम राग (मारवा थाट) ४. कोकिला पञ्चमी
५. रुद्र पञ्चम ६. ललित पञ्चम

दक्षिण भारतीय

१. पञ्चम राग २. अमृतपञ्चम
३. आदिपञ्चम ४. कन्नडपञ्चम
५. कोकिलपञ्चम ६. गौड़पञ्चम
७. दिव्यपञ्चम ८. धौतपञ्चम
९. नवनीतपञ्चम १०. नागपञ्चम
११. पूर्णपञ्चम १२. भूपालपञ्चम
१३. रम्यपञ्चम १४. ललितपञ्चम
१५. हंसपञ्चम

४२. राग मारश्री १४९

४३. राग विभास १५०

१. टीकास्थ राग २. विभास (बिलावल थाट)
३. विभास (भैरव थाट) ४. विभास (मारवा थाट)

४४. राग सौराष्ट्री १५२

१. टीकास्थ राग
२. सौराष्ट्र राग (उत्तर भारतीय)
३. सौराष्ट्र राग (दक्षिण भारतीय)
४. कन्नड सौराष्ट्र (दक्षिण भारतीय)

४५. राग सोरठी १५५

१. टीकास्थ राग सोरठी
२. राग सोरठ

४६. राग देश १५७

१. टीकास्थ राग देश
२. आधुनिक देश राग

४७. राग मल्हार १५९

१. मल्हार देश
२. सोरठ देश
३. जैजैवन्ती देश

४८. राग सावेरी १६०

१. टीकास्थ राग सावेरी

उत्तर भारतीय

१. सावेरी
२. शुद्ध सावेरी

दक्षिण भारतीय

१. सावेरी
२. कलासावेरी
३. कल्लोलसावेरी
४. जयसावेरी
५. धीरसावेरी
६. भोगसावेरी
७. मेचसावेरी
८. शुद्धसावेरी
९. सिह्लेलसावेरी
१०. हिन्दोलसावेरी

४९. राग गान्धार १६४

१. टीकास्थ राग गान्धार

उत्तर भारतीय

१. गान्धार
२. रुद्र गान्धार

दक्षिण भारतीय

१. हंस गान्धार

५०. राग देवगान्धार १६६

५१. राग जयश्री १६७

५२. राग कल्याणी १६९

१. टीकास्थ राग
२. पूर्वकल्याणी
३. यमुनाकल्याणी
४. श्यामकल्याणी
५. हमीरूकल्याणी

५३. राग आभीरी १७१

१. टीकास्थ राग आभेरी
२. आभीरी (उत्तर भारतीय)
३. आभेरी (दक्षिण भारतीय)

५४. राग सारंग १७३

१. टीकास्थ राग सारंग

उत्तर भारतीय

१. राग सारंग
२. कुसुमसारंग
३. गौड़सारंग
४. पूर्वीसारंग
५. बड़हंससारंग
६. मदमावतसारंग
७. मध्यमादसारंग
८. मियाँ की सारंग
९. वृन्दावनीसारंग
१०. शुद्धसारंग
११. शुद्धासारंग
१२. सामन्तसारंग

दक्षिण भारतीय

१. राग सारंग
२. कुसुमसारंग
३. प्रतापसारंग
४. भ्रमरसारंग
५. मारुवसारंग
६. वृन्दावनसारंग
७. विजयसारंग
८. शुद्धसारंग
९. हिंदोलसारंग

५५. राग नटनारायण १८०

५६. राग श्याम १८१

५७. राग इमनी (यमनी) १८२

१. टीकास्थ राग
२. यमन कल्याण
३. यमनी बिलावल
४. यमनी मांझ

५८. राग कुडाई १८५

५९. राग नागध्वनि १८६

१. नागध्वनि (उत्तर भारतीय)
२. नागध्वनि (दक्षिण भारतीय)

६०. राग शङ्कराभरण १८८

१.टीकास्थ राग २. शङ्कर (उत्तर भारतीय)

६१. राग बड़हंसी १९१

१.टीकास्थ राग २.बलहंस ३.कलहंस
४.रक्तहंस ५.धवल हंसी ६.नलिन हंसी
७.भ्रमर हंसी ८.बडहंस सारंग ९.बड़हंस

६२. राग बरवा १९४

६३. राग बहार १९६

१.टीकास्थ राग २. बसन्त बहार
३.भैरव बहार ४. परज बहार

६४. राग विहाग १९८

१.टीकास्थ राग विहाग २. राग विहाग
३.मारू विहाग ४. हेम विहाग
५.छायाविहाग ६. नट विहाग
७.पटविहाग ८. चाँदनीविहाग

६५. राग भीमपलासी २०२

१. टीकास्थ राग २.ग्रन्थस्थ भीमपलासी
३. आधुनिक भीमपलासी ४. राग भीम ५. पलासी (पलाश्र)

६६. राग यजेसंज्ञ २०५

६७. राग पूरवी २०६

६८. राग पीलू २०७

६९. राग तैलंगी २०९

७०. राग योगी बंगालिका २१०

७१. राग जानपुरी २११

७२. राग अओठी २१२

७३. राग चैत्री गौरी २१३
७४. राग जैजैवन्ती २१४
७५. राग गौड़मल्हारी २१६
७६. राग छाया २१७
७७. राग छायानट २१८
७८. राग धानी (धनाश्री समुत्पन्न) २१९
७९. राग धानी (सैन्धवी समुत्पन्न) २२१
८०. राग सूहा एवं सुघराई २२२
८१. हस्तलिपि ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ - क मातृका २२४
८२. हस्तलिपि ग्रन्थ का अन्तिम पृष्ठ - ख मातृका २२५

❋

# आमुख

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा वैदिक काल से आज तक अविच्छिन्न रही है। त्रयी में सामवेद का परिगणन होता है और साम, वैदिक मन्त्रों के गान की प्रक्रिया है। उपवेदों में गान्धर्व वेद का नाम आता है जो संगीत का ही दूसरा नाम कहा जा सकता है। गान्धर्व वेद या विद्या के अन्तर्गत संगीत को ही ग्रहण किया जाता है जिसका तात्पर्य गीत, वाद्य एवं नृत्य तीनों से है।

आधुनिक युग में जिस इतिहास दृष्टि का विकास हुआ है उसमें कालक्रम के अनुसार विषय के उपस्थापन को बहुत महत्त्व दिया जाता है। इसका कारण व्यक्तिकेन्द्रित इतिहास-दृष्टि माना जा सकता है। भारतीय पारम्परिक दृष्टि कालक्रम-सापेक्ष न होकर ज्ञान-सापेक्ष एवं परम्परा-सापेक्ष दृष्टि है। पाश्चात्य विद्वानों ने इसे ऐतिहासिक दृष्टि का अभाव कहा है, जो वस्तुत: तथ्यपरक कथन नहीं है। भारतीय ज्ञान परम्परा मौखिक रही है और लिखित साहित्य पर निर्भरता इस परम्परा की विशेषता नहीं है। संगीत यों भी श्रव्य (गीत एवं वाद्य) तथा चाक्षुष (नृत्य) होता है। शास्त्रीय संगीत रागों के नियमों से बँधा होकर भी कलाकार की मौलिक उद्भावनाओं को पूरी स्वतन्त्रता प्रदान करता है। इसीलिए पाश्चात्य संगीत में जहाँ प्रत्येक रचना लिखित होती है वहीं भारतीय संगीत में ऐसी कोई लिखित सामग्री नहीं होती।

उपर्युक्त तथ्यों के बावजूद संगीत सम्बन्धी ग्रन्थों का यहाँ अभाव नहीं रहा है। प्राय: इन ग्रन्थों में संगीत के शास्त्रीय पक्ष पर चर्चा की गयी है। श्री शार्ङ्गदेव का *संगीत रत्नाकर* अत्यधिक प्रसिद्ध और मान्य ग्रन्थ है। लेकिन संगीत सम्बन्धी अधिकांश साहित्य अभी भी पांडुलिपियों के रूप में है और प्रकाशन की अपेक्षा रखता है। *रागार्णव* ऐसा ही ग्रन्थ है जिसकी उपलब्ध दो पाण्डुलिपियों से भगवत्शरण शुक्ल ने प्रकाशन योग्य पाठ प्रस्तुत किया है। जैसा नाम से ही स्पष्ट हो जाता है यह ग्रन्थ रागों का परिचय प्रस्तुत करता है, इसमें राग लक्षण के साथ सरगम भी दिए गए हैं। इसकी उपलब्ध पाण्डुलिपि में ग्रन्थकर्ता का परिचय तो नहीं मिलता लेकिन ग्रन्थ को पढ़ने से लेखक की संगीत -विषयक दृष्टि

और तत्सम्बन्धी ज्ञान स्पष्टतः प्रकाशित होता है। डॉ. शुक्ल के अनुसार इस ग्रन्थ का काल पन्द्रहवीं शताब्दी होना चाहिए। इससे इतना तो स्पष्ट है कि राग-रागिनियों की भारतीय परम्परा तब से अब तक अविच्छिन्न चल रही है।

डॉ. शुक्ल संगीत का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर बाँसुरी-वादन में निपुण हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या संकाय में संस्कृत का अध्यापन करते हुए उन्होंने संगीत साधना को अक्षुण्ण रखा है। भाषा एवं विषय दोनों में निष्णात होने के कारण वे इस पाण्डुलिपि के साथ पूरा न्याय कर सके हैं।

भगवत्शरण शुक्ल ने *रागार्णव* पर *रागचन्द्रिका* नामक टीका लिखी है जिससे इस ग्रन्थ का महत्त्व और उपादेयता दोनों बढ़ गए हैं। स्वरों के स्वरूप को समझने में यह टीका जिज्ञासुओं की सहायता करेगी और संगीत के छात्र तथा शोधार्थी इससे अत्यधिक लाभान्वित होंगे। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के द्वारा, भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक पाठकों के समक्ष लाने का यत्न कर रहा है। संगीत के क्षेत्र में यह हमारी प्रथम प्रकाशित पाण्डुलिपि है। आशा है सुधीजन इसे पसन्द करेंगे।

दिल्ली<br>
दुर्गाष्टमी, २०१२

दीप्ति शर्मा त्रिपाठी<br>
निदेशक

# भूमिका

"वेदानां सामवेदोऽस्मि" अर्थात् वेदों में मैं *सामवेद* हूँ, इस कथन के द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण ने *सामवेद* को अपना स्वरूप स्वीकार किया है *सामवेद* का उपवेद गान्धर्व वेद है जिसे हम संगीत के नाम से जानते हैं। संगीत शब्द से आचार्यगण गीत, वाद्य तथा नृत्य को ग्रहण करते हैं। "गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं सङ्गीतमुच्यते।" इनमें भी स्वर ताल लय तीन की प्रधानता रहती है। श्रुतियों के अन्तर्गत होने वाली कर्णप्रिय अनुरणनात्मक स्वतः उत्पन्न होने वाली श्रोताओं के चित्त को रंजित करने वाली ध्वनि "स्वर" कहलाती है –

श्रुत्यन्तरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः।
स्वतो रंजयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते।।

ये स्वर वेद में उदात्त-अनुदात्त स्वरित भेद से तीन प्रकार के हैं। ये ही संगीत में सात स्वरों में मूल रूप से तथा प्रकृति-विकृति भेद से बारह प्रकार के होते हैं। उदात्त से निषाद गान्धार, अनुदात्त से ऋषभ, धैवत, स्वरित से षडज, मध्यम और पञ्चम स्वर अपने स्वरूप में उपस्थित होते हैं –

उदात्तौ निषादगान्धारावनुदात्तौ ऋषभधैवतौ।
स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यमपञ्चमाः।।

कालक्रिया का मान जिसके द्वारा ज्ञात हो उसे ताल कहते हैं –

तालः कालक्रिया मानम्
तालः करतलेऽङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां च सम्मिते।
गीतकालक्रियामाने करस्फाले द्रुमान्तरे।।

और यह ताल ताली या अँगूठे तथा मध्यमा अंगुली की चुटकी से भी प्रदर्शित की जाती है।

गीत, वाद्य पाद आदि का न्यास और क्रिया तथा काल के साम्य को लय कहते हैं –

"गीतवाद्यपादादिन्यासानां क्रियाकालयोः साम्यं लयः"।

संगीत में तीन संख्या का महत्त्व अत्यधिक परिलक्षित होता है। संगीत शब्द में तीन वर्णों की स्थिति, गीत, वाद्य नृत्य ये तीन संगीत के विभाग, उदात्त अनुदात्त स्वरित तीन स्वर, स्वर ताल लय तीन उपयोगी तत्त्व, तीन संख्या का अतिशय महत्त्व सिद्ध करते हैं। मानो त्रिगुणात्मक सृष्टि का पूर्ण प्रभाव संगीत में व्याप्त है।

संगीत का प्रभाव प्राणिमात्र में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। आज वैज्ञानिक भी संगीत का प्रभाव स्वीकार करते हैं। कहीं-कहीं तो चिकित्सा के क्षेत्र में भी संगीत का प्रयोग किया जा रहा है।

वैदिक काल से ही संगीत का सर्वत्र साम्राज्य रहा है। तभी संगीत के नए नए स्वरूप आते गए हैं। सर्वप्रथम मात्र सामगान के साथ-साथ मार्गी संगीत रहा है। पश्चात् उसका देशी स्वरूप आया, और उसमें भी अनेक परिवर्तन काल-क्रम से निरंतर हो रहे हैं।

संस्कृत भाषा में संगीत के अनेक ग्रन्थ लिखे गए। जिनका आज भी अत्यधिक महत्त्व है। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि संगीतज्ञ आज के संस्कृत ज्ञान से रहित हैं और जो संस्कृतज्ञ हैं वे संगीत के ज्ञान से रहित हैं। आज "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" की स्थिति बनी हुई है। कुछ एकाध संस्कृत एवं संगीत दोनों के जानकर यदि इस दिशा में कोई कार्य करना भी चाहते हैं तो उन्हें दोनों तरफ से असहयोग और उपेक्षा ही अधिक मिलती है। मैंने इस विषय को लेकर एक सेमिनार अपने विद्यालय में आयोजित किया था। जिसमें नगर के सभी प्रतिष्ठित संगीतज्ञ आमन्त्रित थे। किन्तु मात्र रामाश्रय झा, गीता बनर्जी, ओ. पी. मालवीय, साहित्य कुमार नाहर एवं आकाशवाणी के तत्कालीन संगीत के कार्यक्रम अधिकारी संतोष कुमार नाहर एवं उनके सहयोगी कलाकार उपस्थित रहे शेष सभी अनुपस्थित ही रहे। यद्यपि उपस्थित विद्वानों का सहयोग एवं उनके विचार उत्साहवर्द्धक थे तथापि अन्य की उपेक्षा संगीत के संस्कृत ग्रन्थों के प्रति पर्याप्त अरुचि का प्रमाण देती है। उस संगोष्ठी में मैंने संस्कृत संगीत ग्रन्थों में ११० ग्रन्थों का परिचय देकर इस ओर सभी का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया था। इस निवेदन के माध्यम से उन सभी ग्रन्थों का सामान्य परिचय पुनः दे रहा हूँ। आशा है संगीतज्ञ एवं संस्कृतज्ञ जन मिल-जुलकर इनके द्वारा समाज का हित-चिन्तन अवश्य करेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| 1. | *अनूपसंगीतविलासः* | भावभट्ट |
| 2. | *अभिनवमुकुटम्* | भावभट्ट |
| 3. | *अभिनवभारतसारसंग्रहः* | मुम्मडिचिक्कभूपाल |

| | | |
|---|---|---|
| 4. | *अर्जुनभारतम्* | अर्जुन |
| 5. | *अष्टोत्तरशततालक्षणम्* | अर्जुन |
| 6. | *आदिभारतम्* | भरताचार्य |
| 7. | *आनन्दजीवनम्* | राजामण्डनमाल |
| 8. | *अपूर्णांकुशः* | राजमण्डनमाल |
| 9. | *अनूपसंगीतरत्नाकरः* | राजमण्डनमाल |
| 10. | *अग्निपुराणम्* | व्यास |
| 11. | *कल्पतरुः* | गणेशदेव |
| 12. | *गीतालङ्कारः* | अनन्तनारायण |
| 13. | *तालदशप्राणदीपिका* | गोविन्द |
| 14. | *तालदीपिका* | टिप्पभूपाल |
| 15. | *तालप्रस्थम्* | टिप्पभूपाल |
| 16. | *तालप्रस्तारः* | टिप्पभूपाल |
| 17. | *ताललक्षणम्* | नन्दिकेश्वर |
| 18. | *तालादिलक्षणम्* | नन्दिकेश्वर |
| 19. | *तालाभिनवलक्षणम्* | नन्दिकेश्वर |
| 20. | *ध्रौपदटीका* (ध्रुपद) | भावभट्ट |
| 21. | *नर्तननिर्णयः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 22. | *नाददीपिका* | भट्टाचार्य |
| 23. | *नारदीयशिक्षा* | नारद |
| 24. | *नारदीयपुराणम्* | वेदव्यास |
| 25. | *नृत्यरत्नावली* | गणपतिदेवसेन |
| 26. | *नृत्याध्यायः* | अक्षोक |
| 27. | *पञ्चमसारसंहिता* | नारद |
| 28. | *भरतनाट्यशास्त्रम्* | भरतमुनि |
| 29. | *भरतभाष्यम्* | न्यायदेव |

| | | |
|---|---|---|
| 30. | *भरतलक्षणम्* | न्यायदेव |
| 31. | *भरतशास्त्रम्* | रघुनाथ |
| 32. | *भरतशास्त्रसंगीतम्* | रघुनाथ |
| 33. | *मतङ्गभरतम्* | लक्ष्मणभास्कर |
| 34. | *मेलाधिकारलक्षणम्* | भावभट्ट |
| 35. | *मुरलीप्रकारः* | भावभट्ट |
| 36. | *मुक्तावलीप्रकाशिका* | लक्ष्मणभास्कर |
| 37. | *रागकौतूहलम्* | रामकृष्णभट्ट |
| 38. | *रागार्णवम्* | अज्ञातकर्तृक |
| 39. | *रागचन्द्रोदयः* | विमला |
| 40. | *रागतत्त्वविबोधः* | श्रीनिवास |
| 41. | *रागध्यानादिकथनाध्यायः* | श्रीनिवास |
| 42. | *रागनिरूपणम्* | नारद |
| 43. | *रागप्रस्तारः* | नारद |
| 44. | *रागमञ्जरी* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 45. | *रागमाला* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 46. | *रागरत्नमाला* | क्षेमकरक |
| 47. | *रागरत्नाकरः* | गन्धर्वराज |
| 48. | *रागलक्षणम्* | गन्धर्वराज |
| 49. | *रागविचारः* | श्रीराम |
| 50. | *रागविबोधः* | सोमनाथ |
| 51. | *रागविवेकः* | सोमनाथ |
| 52. | *रागादिस्वरनिर्णयः* | रघुनन्दनदास |
| 53. | *रावणीयम्* | रघुनन्दनदास |
| 54. | *रुद्रडमरुभवसूत्रविवरणम्* | रघुनाथप्रसाद |
| 55. | *वीरपराक्रमः* | वासुदेव |
| 56. | *श्रुतिभास्करः* | भीमदेव |

| | | |
|---|---|---|
| 57. | *षड्रागचन्द्रोदयः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 58. | *सप्ताङ्गरागचन्द्रोदयः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 59. | *वीणावाद्यलक्षणम्* | रघुनाथप्रसाद |
| 60. | *सद्रागचन्द्रोदयः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 61. | *संकीर्णरागाध्यायः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 62. | *संगीतकल्पतरुः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 63. | *संगीतचिन्तामणिः* | कमललोचन |
| 64. | *संगीतदर्पणम्* | हरिवल्लभ |
| 65. | *संगीतदर्पणम्* | दामोदर |
| 66. | *संगीतदामोदरः* | शुम्भर |
| 67. | *संगीतदीपिका* | नित्यभूपाल |
| 68. | *संगीतनारायणः* | नित्यभूपाल |
| 69. | *संगीतनारायणः* | पुरुषोत्तम मिश्र |
| 70. | *संगीतपाठः* | पुरुषोत्तम मिश्र |
| 71. | *संगीतपारिजातः* | अहोबल |
| 72. | *संगीतपुष्पाञ्जलिः* | अहोबल |
| 73. | *संगीतमकरन्दः* | वेद |
| 74. | *संगीतमकरन्दः* | नारद |
| 75. | *संगीतमीमांसा* | कुम्भकर्णमहिमहेन्द्र |
| 76. | *संगीतमुक्तावली* | देवान्नाचार्य |
| 77. | *संगीतमुक्तावली* | देवेन्द्र |
| 78. | *संगीतरत्नमाला* | देवेन्द्र |
| 79. | *संगीतरत्नाकरः* | श्रीशार्ङ्गदेव |
| 80. | *संगीतरत्नाकरटीका* | श्रीशार्ङ्गदेव |
| 81. | *संगीतरत्नाकरटीका* | कल्लिनाथ |
| 82. | *संगीतरत्नाकरटीका* | सिंहभूपाल |
| 83. | *संगीतरत्नाकरटीका* | कुम्भकर्णनरेन्द्र |

| | | |
|---|---|---|
| 84. | *संगीतरत्नाकरटीका* | हंसभूपाल |
| 85. | *संगीतराघवः* | वोमभूपाल |
| 86. | *संगीतराजः* | कुम्भकर्ण |
| 87. | *संगीतविनोदः* | कुम्भकर्ण |
| 88. | *संगीतवृत्तरत्नाकरः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 89. | *संगीतशिरोमणिः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 90. | *संगीतसमयसारः* | पुण्डरीकविट्ठल |
| 91. | *संगीतसमयसारः* | पार्श्वदेव |
| 92. | *संगीतसर्वार्थसारसंग्रहः* | पार्श्वदेव |
| 93. | *संगीतसारामृतः* | तुलजेन्द्र |
| 94. | *संगीतसारावली* | तुलजेन्द्र |
| 95. | *संगीतसारोद्धारः* | हरिभट्ट |
| 96. | *संगीतसुधा* | हरिभट्ट |
| 97. | *संगीतसुधाकरः* | सिंहभूपाल |
| 98. | *संगीतसुधाकरः* | हरिपाल |
| 99. | *संगीतसुन्दरः* | सदाशिवदीक्षित |
| 100. | *संगीतसुरामृतम्* | तुलाजी महाराज भोंसले |
| 101. | *संगीतसेतुः* | गंगाराम |
| 102. | *संगीतामृतम्* | कमललोचन |
| 103. | *संगीतोपनिषद्* | सुधाकलाव |
| 104. | *सारसंहिता* | नारद |
| 105. | *स्वरप्रस्तारः* | नारद |
| 106. | *स्वरमंजरी* | नारद |
| 107. | *स्वरमेलकलानिधिः* | नारद |
| 108. | *स्वरमेलकलानिधिः* | रामामात्य |
| 109. | *हृदयप्रकाशः* | हृदयनारायण |
| 110. | *हृदयकौतुकम्* | हृदयनारायण |

इस प्रकार हमें इन ग्रन्थों का उल्लेख प्राप्त होता है। इनमें कुछ तो प्रकाशित हैं। जिसमें *नाट्यशास्त्र, संगीतरत्नाकर, संगीतमकरंद, स्वरमेलकलानिधि, हृदयकौतुकम्, चतुर्दण्डप्रकाशिका* आदि प्रमुख हैं। बहुत से ग्रन्थ आज भी पाण्डुलिपि के रूप में मात्र पुस्तकालयों में कैद हैं। पता नहीं उनका उद्धार कब होगा। इसमें अनेक ग्रन्थ गंगानाथ झा केन्द्रिय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद के हस्तलेख संग्रहालय में विद्यमान हैं। अनेक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन पुस्तकालय के पाण्डुलिपि विभाग, वाराणसी में भी विद्यमान हैं। बहुत से प्राच्य विद्या संस्थान पुणे एवं रघुनाथ हस्तलेख पुस्तकालय जम्मू एवं कलकत्ता के पुस्तकालय में हैं।

हम आज संगीत में नए-नए प्रयोग कर रहे हैं। दक्षिण भारतीय उत्तर भारतीय संगीतों का समायोजन, शास्त्रीय संगीत के साथ पाश्चात्य संगीत का समायोजन बड़े उत्साह और स्वाभिमान से करते हैं।

क्या अन्य विचारों की भाँति जब विदेशी इन संस्कृत संगीत ग्रन्थों का अध्ययन करके हमीं से पूछकर हमारे ही ग्रन्थों से उस प्राचीन विधा को नए ढंग से प्रस्तुत करेंगे हम तभी समझेंगे!

आज इन संस्कृत के संगीत ग्रन्थों का अध्ययन संगीतज्ञ और संस्कृतज्ञ दोनों मिलकर एक लुप्त विधा से सबको परिचय कराकर पुनः उसका लाभ दे सकते हैं। आवश्यकता है कमर कसकर इस ओर उन्मुख होने की। आज संगीत के क्षेत्र में अच्छे पढ़े-लिखे युवा-जन आ रहे हैं। यदि वे मेहनत करके गुरुजनों से परामर्श कर इस ओर प्रयास करते हैं तो न केवल अपने प्राचीन ज्ञान से लोग लाभान्वित होंगे अपितु उनका संगीत जगत् में एक सुन्दर सार्थक प्रयास होगा।

बहुत सी संस्थाएँ हैं संगीत जगत् को उन्नत बनाने के लिए जिनमें प्रयाग संगीत समिति, गान्धर्व कलाकेन्द्र, संगीत नाटक अकादमी, संगीत विश्वविद्यालय एवं अन्य वे विश्वविद्यालय जहाँ समृद्ध संगीत विभाग है। वे इस पर सार्थक प्रयास कर सकते हैं तथा इस पर शोधकार्य कर सकते हैं।

साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी एक प्रोजेक्ट के तहत इस कार्य को कर सकता है जिसमें दोनों संगीतज्ञ एवं संस्कृतज्ञों का पर्याप्त योगदान हो। साथ ही ऐसे संगीतज्ञ जो संस्कृतज्ञ भी हैं उनका योगदान इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

मैंने इन सभी संगीत के ग्रन्थों को जानकर कुछ प्रयास करने का संकल्प गुरुओं की कृपा से किया है। उसी संकल्प की प्रथम कड़ी के रूप में प्राचीन ग्रन्थ *रागार्णवम्* की पाण्डुलिपि का व्याख्यान एवं सम्पादन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ *रागार्णवम्* अति प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें 87 रागों का विवरण सरगम के सहित ग्रन्थकार ने दिया है। जिसमें भैरव, भैरवी, बराटी, सैन्धवी, खम्बावती आदि से लेकर अन्तिम शुघराई राग तक का विवरण है। इसमें कई ऐसे रागों का विवरण है जो आधुनिक प्रचलित रागों से मिलते हैं परन्तु कई रागों का विवरण दिए गए विवरण से भिन्न रूप में भी प्रसिद्ध है। ग्रन्थ में ऐसे रागों का भी विवरण है जिनका उल्लेख सम्प्रति न तो उत्तर भारतीय प्रसिद्ध रागों में है और न ही दक्षिण भारतीय प्रसिद्ध रागों में, इनमें अओठी, रोड़िका, कुडाई, यजेसंज्ञ राग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस ग्रन्थ की दो मात्रिकाएं दतिया स्टेट पुस्तकालय से कथमपि अपने सत्प्रयासों से प्राप्त कर परम पूज्य प्रातःस्मरणीय गुरुवर जी.सी. त्रिपाठी ने उपलब्ध कराई। उन्हीं की प्रेरणा से इसका सम्पादन एवं व्याख्यान मेरे द्वारा लिखा गया है। रागों के विवरण की दृष्टि से यह ग्रन्थ पन्द्रहवीं से सोलहवीं शताब्दी का प्रतीत होता है। इस ग्रन्थ के लेखक का नाम प्राप्त दोनों मात्रिकाओं में नहीं है। मात्रिका के अंत में इति आदि, किसी शब्द का उल्लेख न होने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ अपूर्ण है। परन्तु इससे अधिक ग्रन्थ का स्वरूप भारत के किसी भी हस्तलेख पुस्तकालय में प्राप्त नहीं होता है। अतः इसका इतना ही स्वरूप स्वीकार किया गया है।

इस ग्रन्थ के व्याख्यान के समय मन में यह विचार आया कि क्यों न इन रागों से सम्बन्धित अन्य रागों का विवरण देते हुए ग्रन्थस्थ रागों का व्याख्यान किया जाए। इसी मानसिक स्थिति को रखते हुए उस राग से सम्बन्धित सम्प्राप्त सभी रागों का संक्षेप में उल्लेख कर ग्रन्थस्थ राग का विवरण राग के किस प्रभेद से समानता रखता है इसकी विधिवत् समीक्षा की गई है। जिससे यह ग्रन्थ एक लघु रागकोश में परिणत हो गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में कई कर्नाटक पद्धति वाले रागों का विवरण भी उत्तर भारतीय पद्धति रागों के स्वरों के अनुसार प्रस्तुत किया गया है जो सम्भवतः राग-प्रेमी सुधी जनों के लिए उपादेय होगा।

## ग्रन्थ में प्रयुक्त स्वर परिचय

आधुनिक संगीत ग्रन्थों में स्वरों के लेखन में दो पद्धतियाँ प्रचलन में हैं – (1) भातखण्डे पद्धति, और (२) पलुस्कर पद्धति। अधिक प्रचार भातखण्डे पद्धति का है। अतः ग्रन्थ की स्वर लिपि भी भातखण्डे पद्धति में रखी गई है। ग्रन्थस्थ रागों के परिचय के साथ-साथ उस राग के प्रकार जो उत्तर तथा दक्षिण भारत में प्रचलित हैं उनका भी विचार किया गया है। दक्षिण भारत की स्वरलिपियों के ज्ञान हेतु *संगीत पत्रिका* (प्रकाशक – संगीत कार्यालय, हाथरस), *कर्नाटक राग* विशेषाङ्क प्राप्त किया था। दक्षिण भारतीय मेल (थाट)

का परिचय तथा किस थाट से कौन-कौन राग उत्पन्न है इसका विवरण *राग कोष* (संगीत कार्यालय हाथ रस पृ. 43–71) में 72 मेल (थाट) के साथ दिया गया है। हमने दक्षिण भारतीय स्वरों को उत्तर भारतीय स्वरों के स्वरूप के आधार पर उनकी स्वर लिपि देने का प्रयास किया है उनका परिचय इस प्रकार है —

1. सा अचल स्वर है इसका मन्द्र सप्तक में नीचे बिन्दु देकर स़ प़ इस प्रकार सभी का परिचय स़ रे़ रे़ ग़ ग़ म़ मं़ प़ ध़ ध़ नि़ नि़ रूप में दिया गया है।
2. मध्य सप्तक में कोई चिह्न नहीं लगाया जाता, फलतः यहाँ भी कोई चिह्न अलग से नहीं दिया गया है।
3. तार सप्तक में ऊपर एक बिन्दु देकर स्वरों का परिचय तार सं रें गं मं पं धं निं, इस प्रकार दिया गया है।
4. उत्तर भारतीय संगीत में रे ग म ध नि इन स्वरों के विकृत स्वर भी प्रचलित हैं जैसे रे ग ध नि ये चार स्वर शुद्ध के साथ-साथ कोमल भी होते हैं जिनका चिह्न नीचे आड़ी रेखा लगाकर रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ इस रूप में दिया जाता है। लेकिन म स्वर शुद्ध तथा तीव्र प्रयुक्त होता है अतः उसके तीव्र स्वरूप का बोध उसके ऊपर खड़ी रेखा देकर (इस रूप में – मे) किया जाता है।
5. ग्रन्थ में रे ग म ध नि इन सभी स्वरों को तीव्र कहा गया है जैसे ग नि के विषय में गकोमला गतीव्रा मतीव्रा धैवतोज्झिता वा नीतीव्रा (*रागार्णव* श्लोक 53) इस पंक्ति में ग तथा नी को भी तीव्र कहा गया है। मेघः पूर्णो धत्रयस्स्यात् (का. सं. ३१)। इस प्रकार इसमें ध के शुद्ध, कोमल तथा तीव्र भेदों का उल्लेख प्राप्त होता है। तथैव 'म' यद्यपि शुद्ध एवं तीव्र प्रयुक्त होता है पर इसे यहाँ तीव्रतर रूप में भी ग्रहण किया गया – गौरी तु सादिमा प्रोक्ता धैवतर्षभकोमला/मतीव्रतरसंयुक्ता . . .." (*रागार्णव* 10) जिसका चिह्न दो खड़ी रेखा देकर (मॅं) दिया गया है। इसी प्रकार अन्य स्वरों के भी यत्र-तत्र तीव्र या तीव्रतर स्वरों के चिह्न क्रमशः एक तथा दो खड़ी रेखा लगाकर उनका परिचय दिया गया है।
6. म तीव्रतर के समान म के तीव्रतम स्वर का भी उल्लेख मिलता है जैसे – "रिधौ तु कोमलौ यत्र मस्तु तीव्रतमो मतः" (*रागार्णव* 25) इसमें भी दो खड़ी रेखा ही दी गई हैं। ग्रन्थ में कोमलतर या कोमलतम कोई भी प्रकार स्वरों का प्रयुक्त नहीं हुआ है। ग्रन्थ में इस प्रकार के स्वरों के विषय में जो निर्देश प्रयुक्त हुए हैं उनका विशेष विवरण क्रमश इस प्रकार है –

(१) मस्तु तीव्रतरो मत: – का. सं. ३

(२) मतीव्रतर संयुक्त: – का. सं. १०

(३) गनितीव्रा शास्त्रविद्भि: – का. सं. १४

(४) नितीव्रा च गतीव्रा च – का. सं. २०

(५) शुद्धतीव्र निषादाद्या – का. सं. २४

(६) मस्तु तीव्रतमो मत: – का. सं. २५

(७) मस्तु तीव्रतरो मत: – का. सं. २७

(८) मस्तु तीव्रतर: प्रोक्त: – का. सं. २८

(९) मस्तु तीव्रतरो मत: – का. सं. २९

(१०) मेघ: पूर्णो धत्रयस्स्यात् – का. सं. ३१

(११) मस्तु तीव्रतर: प्रोक्त: – का. सं. ३५-३६

(१२) मनि तीव्रौ त्रिधा प्रोक्तो – का. सं. ४३

(१३) नितीव्रा वा गतीव्रा वा – का. सं. ४५

(१४) गतीव्रा, गतीव्रा च – का. सं. ५३, ५६

(१५) शुद्धतीव्रनिसंयुक्त: – का. सं. ५९

(१६) गनी, तीव्रौ गनीतीव्राथवा – का. सं. ३४, ६३

(१७) पीलू मध्यमगान्धारशुद्धतीव्र समन्वित: – का. सं. ६७

इस विवरण में रे॑ ग॑ ध॑ नि॑ का तीव्र प्रकार भी माना गया है। ध के तीव्र प्रकार का यद्यपि स्पष्ट अलग से उल्लेख नहीं है, तथापि मेघ राग के विवेचन में "धत्रय: स्यात्" इस कथन से "ध" के शुद्ध, कोमल तथा तीव्र प्रकार सूचित होते हैं जिससे इसके तीव्र प्रकार की सत्ता स्पष्ट होती है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है, म के शुद्ध, तीव्र, तीव्रतर तथा तीव्रतम ये चार प्रभेद ग्रन्थकार ने निर्दिष्ट किए हैं। स्वर विवेचन की दृष्टि से म के प्रकार क्रमश: १३, १४, १५, १६ श्रुतियों में म म॑ म॑॑ म॑॑ इन चिन्हों के साथ जब हम स को चौथी श्रुति में स्थापित करते हैं तो म के प्रकार क्रमश: १०, ११, १२, १३ श्रुतियों में म म॑ म॑॑ म॑॑ इन चिह्नों के साथ स्थापित होंगे। इस प्रकार ग्रन्थ के निर्देशानुसार सभी स्वरों का विवरण इस प्रकार होगा "स रे॒ रे रे॑ ग॒ ग ग॑ म म॑ म॑॑ म॑॑ प ध॒ ध ध॑

नि̲ नि नि॑।" ग्रन्थ में अतिकोमल प्रकार किसी भी राग में निर्दिष्ट नहीं है।

7. कर्नाटक पद्धति के रागों के उल्लेख में धीर शंकराभरण को – जो उत्तर भारतीय बिलावल थाट के समान स्वरों वाला है – आधार मानकर विचार किया गया है। *कर्नाटक संगीत* विशेषाङ्क के आधार पर बाइस श्रुतियों में स्वरों का विभाजन इस प्रकार किया गया है –

इन्हीं स्वर चिह्नों के आधार पर दक्षिण भारतीय रागों का परिचय बनता है। परन्तु इस चिह्न परिचय से मैं बहुत सन्तुष्ट नहीं हूँ। यदि विशिष्ट विद्वान् मुझे इस विषय में मार्गदर्शन और

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| नि॑ | नि॑॑ | – | स | रे̳ | रे̲ | रे | रे॑<br>ग̲ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ग | ग॑ | ग॑॑ | म̲ | म | म॑ | म॑॑ | म॑॑ |
| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | | |
| प | ध̳ | ध̲ | ध | नि̲<br>ध॑ | नि | | |

देंगे तो मैं उनका आभारी रहूँगा। क्योंकि अति कोमल ग̳ और तीव्र रे॑ की श्रुति (६) एक पड़ती है तथैव अति कोमल नि̳ तथा तीव्र धैवत की एक श्रुति (१९) पड़ती है। किन्तु यदि शुद्ध रे तथा शुद्ध धैवत को क्रमशः चौथी एवं सत्रहवीं श्रुति में माना जाए तो पूर्वोक्त दोनों स्वरों में अन्तर माना जा सकता है। परन्तु सिद्धान्ततः

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपञ्चमाः ।
द्वे द्वे निषादगान्धारौ त्रिस्त्री ऋषभधैवतौ ।। – *संगीतदर्पण*

इस वचन के आधार प्राचीन मत में स चौथी, रे सातवीं, ग नवमी, म तेरहवीं, प सत्रहवीं ध बीसवीं और नि बाइसवीं श्रुति में सम्बद्ध होता है नवीन मत में सा को चौथी श्रुति में न रखकर प्रथम श्रुति में रखा जाता है। उस आधार पर कर्नाटक स्वरों का स्वरूप निम्न रूप में रखना तर्क संगत प्रतीत होता है –

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| स | – | रे̳ | रे̱ | रे | रे॑॑<br>ग̳ | ग̱ | ग |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ग॑ | म<br>ग॑॑ | म॑ | म॑॑ | म॑॑ | प | – | ध̳ |
| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | | |
| ध̱ | ध | ध॑<br>नि̳ | नि̱ | नि | नि॑ | | |

इस तालिका में रे ग ध नि के अति कोमल स्वरूप भी दिए गए हैं। क्योंकि कर्नाटक तथा हिन्दुस्तानी पद्धति के कुछ रागों में अति कोमल रे̳ ग̳ ध̳ नि̳ का गुणीजन प्रयोग करते हैं यथा राग तोड़ी में अतिकोमल गान्धार। उनके ग्रन्थों में भी इसका निर्देश है। (यथा – *अभिनव गीताञ्जलि* – लेखक रामाश्रय झा) यद्यपि पूर्व-प्रदर्शित प्राचीन एवं नवीन मत के स्वरों की स्थापन-पद्धति में अपने-अपने मतानुसार उपयुक्त हैं तथापि मेरे मत में कर्नाटक तथा उत्तर भारतीय संगीत पद्धति दोनों में प्रथम श्रुति में ही स को रखना चाहिए। जैसा नवीन संगीतकार सम्प्रति प्रथम श्रुति में स्वरों की स्थापना करते हैं। स्वरों के प्रयोग की दृष्टि से यदि विवेचन किया जाए तो गायक यद्यपि कठिन एवं सूक्ष्म अभ्यास के द्वारा इन सभी स्वरों का प्रयोग कर सकता है, तथापि इन स्वरों का प्रयोग उन वाद्यों में असम्भव है, जिनमें स्वर एक स्थान पर स्थित रहते हैं। परन्तु भारतीय सुषिर वाद्यों, तन्त्र-वाद्यों तथा गज-वाद्यों में इनका प्रयोग अभ्यास से किया जा सकता है। इसीलिए कर्नाटक संगीत में

एक स्थान पर स्थित स्वरों वाले वाद्यों (हारमोनियम आदि) का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में नहीं देखा जाता। उत्तर भारतीय संगीत में एक स्थान पर स्थित स्वर के वाद्य बहुत कम प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार अन्य अतिकोमल तथा तीव्र स्वर वाले रागों का तथा कर्नाटक संगीत के रागों का भी परिश्रम से उत्तर भारतीय संगीत में अभ्यास के आधार पर प्रयोग किया जा सकता है। एतदर्थ ग्रन्थ में रागों के विवरण के समय मूल ग्रन्थस्थ रागों के विवरण के साथ उन रागों का विवरण दिया गया है। परिश्रमी संगीत मनीषी उनका प्रयोग अभ्यास द्वारा करके नाद ब्रह्म की उपासना में अपना सफल एवं उत्कृष्ट योगदान देंगे। इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इस *रागार्णविम्* मूल ग्रन्थ की *रागचन्द्रिका* नामक व्याख्या लिखी गई है जो आप सभी अध्येताओं को प्रीतिकर होगी।

संगीत जगत् एवं संस्कृत जगत् में प्रवेश दिलाने वाले मेरे ताऊ (बड़े दद्दा जी) स्व. पण्डित रामप्रमोद शुक्लजी रहे जिनका अपार स्नेह मेरे ऊपर था। पिता स्व. पण्डित रामकृष्ण शुक्लजी का उत्साहवर्द्धन एवं आशीर्वाद सदा मार्ग-दर्शक रहा। स्वामी रामचन्द्रदासजी एवं स्वामी रामप्रपन्नाचार्यजी मेरा उत्साहवर्द्धन करते रहे। पर समुचित शिक्षा स्व. भोलानाथ प्रसन्नाजी के द्वारा सम्पन्न हुई जिन्होंने संगीत में कुछ विचार एवं प्रस्तुति करने लायक बनाया। संगीत के विषय में मेरे पास जो कुछ है इन्हीं पुण्यशाली महापुरुषों की कृपा से प्राप्त हुआ है। अतः इन सभी को नमन करता हूँ। इस ग्रन्थ का लेखन भी इन्हीं की कृपा से सम्पन्न हुआ है। सर्वाधिक विनयावत श्रद्धेय गुरुवर आचार्य गयाचरण त्रिपाठी जी के प्रति हूँ जिन्होंने सदैव उत्साहवर्द्धन करते हुए न केवल इस ग्रन्थ की दो पाण्डुलिपियाँ प्रदान की अपितु इनके सम्पादन एवं व्याख्यान में सदैव प्रेरित कर अपने आशीर्वाद से इस ग्रन्थ की पूर्णता में मुझे सशक्त बनाया।

मेरे लेखन में स्वभावतः कुछ-न-कुछ स्खलन अवश्य होगा । सुधी संगीतविद् जनों से नम्र निवेदन है कि वे अपने नीर-क्षीर विवेक बुद्धि से ग्रन्थ का आकलन करके ग्रन्थ की न्यूनता से मेरा परिचय अवश्य कराएं, मैं उनका आभारी रहूँगा।

भगवत्‌शरण शुक्ल

# रागार्णवम्
## (मूल पाठ, सरगम सहित)

अथ रागार्णवे रागसरगमाः ।
भैरवो धैवतादिः स्यात् कोमलौ तु रिधौ मतौ ।
रिमहीनः परैः प्रोक्तो अन्यैर्ऋषभ-वर्जितः ॥[१]
षाडवौडवसम्पूर्णभेदेन त्रिविधो मतः ॥१॥

सरगम – ध ध ध प म ग रे रे स नी ग ग ग ग म ग, ग म म नी ध ध ध ध प ध ध म प म ग ग म म रे रे ग म नी ध ध ध ध ग म म प ध प ध ध नी नी नी प ध ध नी स स नी ध प म नी नी ध प म म ग प ध ध नी ध प म ग ग म म रे रे स स ग ग रे रे ग ग म म म रे ग म ॥१॥

धैवतर्षभगान्धारनिषादाः कोमला मताः ।
मध्यमाद्या धैवताद्या भैरवी शास्त्रसम्मता ॥२॥

सरगम – म म प प म ग ग ग ग स रे रे म म ग रे रे सा ध ध ध ध ध स स स स स नी ग ग ग म म ग रे रे सा सा ॥२॥

रिधौ तु कोमलौ ज्ञेयौ मस्तु तीव्रतरो मतः ।
वराटी बहुधा शास्त्रे साद्या गायनकोविदैः ॥३॥

सरगम – स ध ध ध नी स रे ग म प म म ग रे स नी ध नी स ध प म प म म ग रे ग ग रे ग रे नी ध ध नी स स नी स नी स नी स ध प म प म प म म म प म ग ग रे ग ग ग रे रे स नी स स ॥३॥

स्वराद्या सैन्धवी प्रोक्ता निगधाः यत्र कोमलाः ॥४॥

सरगम – स रे ग म ग रे स नी स नी ध प ध प नी ध ध नी स रे ग म

---

१. क मातृका – रिमहीनः परैः प्रोक्तो अन्यै रिषभवर्जितः।
ख मातृका – रिमहीनः परैः प्रोक्तोऽन्यैस्वर्षभवर्जितः॥

प ध नी सा नी ध प म ग रे स रे स स नी स नी ध नी ध प ध प ध नी स स ॥४॥

मध्यमादिर्मध्यमाद्या निगौ यत्र च कोमलौ ॥५॥

सरगम – म नी नी प म रे रे रे म म म प प नी नी स स नी प स नी नी प म रे रे रे स रे रे म रे स स रे स स नी प म म म रे रे रे नी स रे म म रे स स ॥५॥

सम्पूर्णा मस्वराद्या तु कल्लिनाथेन कीर्त्तिता ।
बंगालिका स्वराद्यान्यैर्गधौ कोमलसंज्ञकौ ॥६॥[२]

सरगम – स स रे म म प ध ध प म प प ध ध प प म ध ध प म ग रे सा, स नी रे रे स नी ध प प म ध ध प म ग रे सा ॥६॥

मालकोशः स्वराद्यः स्याद् रिधौ कोमलसम्मतौ ।
पञ्चमेन विहीनोऽयं वार्षभस्वरवर्जितः ॥
उभाभ्यां वर्जितः कैश्चित् कथितो रागवित्तमैः ।
षाडवौडवसम्पूर्णभेदेन त्रिविधोऽथवा ॥७॥

सरगम – स स नी ध ध म ग म ध ध नी सा, नी ध ध म ग ग स स स नी स स नी नी ध नी नी स ग म ध ध ध ध ग ग स ग ग ग म ध ध नी स ग ग ग ग नी नी नी ध ध ग ग स ॥७॥

धैवतर्षभगान्धारा कोमला रोडिका मता ।
तीव्रमध्यमसंयुक्ता कैश्चिदुक्ता विचक्षणैः ॥
शुद्धस्वरा कैश्चिदुक्ता एवं बहुविधा मता ॥८॥

---

२. क मातृका – सम्पूर्णा मस्वराद्या तु कल्लिनाथेन कीर्त्तिता।
बंगालिका स्वराद्यन्यै . . .

ख मातृका – पूर्वलिखितः . . . .

क मातृका – स स रे म म प ध ध प

ख मातृका – स स रे म म ध ध प . . . .

श्लोक संख्या सप्त में '*वर्जितो*' इति पाठो मातृकाद्वये

सरगम – म ग रे स नी सा रे ग ग म म प प ध प म ग रे सा ग ग ग म म प ध नी स स नी ध म ध नी स रे स स ग रे स स नी ध प म म ग रे ग नी नी ध म ग रे सा ।।८।।

खम्भावती धादिमा स्यान्निषादस्वरकोमला ।।९।।[३]

सरगम – ध नी स नी स स स स नी स स रे रे रे स स नी ध ध प स स नी ध प ग ग म म प स नी ध प म ग ग म ग ग रे स स रे रे नी स स ग म प ध ध नी स ध नी ध रे स स नी ध ग ग म म म प स नी ध प म ग ग ।।९।।

गौरी तु सादिमा प्रोक्ता धैवतर्षभकोमला ।
मतीव्रतरसंयुक्ता गांधारस्वरवर्जिता ।।
सम्पूर्णा षाडवा चैव गायनज्ञैर्निरूपिता ।।१०।।[४]

सरगम – स रे रे स रे नी स रे ग ग रे स स नी ध नी नी स स नी स स ग म ध नी रे रे स नी नी ध ध ग नी नी नी नी स स रे ग रे स नी ग ग रे स नी नी नी नी स स ।।१०।।

ज्ञेया गुणक्रिया न्याद्या धैवतर्षभकोमला ।।११।।

सरगम – नी ध स ध प म प प म म रे स स ध ध ध ध प म प प म म रे सा सा रे ग ग रे सा ध रे स ध रे स स स स ध ध स स स स म रे स स स रे स ।।११।।

ककुभा धैवताद्या स्यात् सम्पूर्णा सर्वसम्मता ।।१२।।

सरगम – ध प म ग ग ग ग रे स नी नी स ग ग रे स स नी नी नी नी प

---

३. क मातृका – उल्लिखितपाठः,
ख मातृका – खम्भावती धारीमास्यान्निषादस्वरकोमला।

४. क मातृका – गौरी . . . .
सम्पूर्णा षाडवा चैव गायनज्ञैर्निरूपिता
ख मातृका – गौरी . . . . गायनज्ञैर्नियता।।

प ध ध ध प म प प प प प ध ध नी स स नी नी सा ग रे ग रे स रे रे स नी नी प ध ध प प म ग म प ध प ध ध ध म म ॥१२॥

मनी तीव्रौ रिधौ चात्र कोमलौ काकलीयुतः ।
स्वराद्यः स्वरसम्पूर्णो हिडोलो रिविवर्जितः ॥
पञ्चमेन विहीनो वा चोभाभ्यां सर्वसम्मतः ।
षाडवौडवसम्पूर्णभेदेन त्रिविधो मतः ॥१३॥

सरगम – स ग म ध नी स नी ध नी ध म ग स स ग म ध ध नी स म ग स नी ध नी स नी ध नी ध म ध नी स ध नी ध नी स म ग स ध नी ध म ग सा ॥१३॥

गनितीव्रा शास्त्रविद्भिः प्रोक्ता ऋषभपूर्विका ।[५]
वेलावली बहुविधा मतीव्रा षाडवाऽथवा ।
सम्पूर्णा धस्वराद्या वा स्वराद्या पूर्वसूरिभिः ॥१४॥

सरगम – रे रे ग प प ध नी स स स स स ध नी नी स नी ध प ग म म ग रे रे स स ग ग ग ग प प ध ध प प स नी ध प ग ग रे स स ॥१४॥

देशाख्यः पादिमः प्रोक्तस्सम्पूर्णस्वरभूषितः ॥१५॥[६]

सरगम – प नी नी ध प म ध ध प म ग प प म रे स स नी नी स ग ग म म ग रे स स स स स नी नी ध प ॥१५॥

सम्पूर्णस्वरसंयुक्ता पादिमा पटमञ्जरी ॥१६॥

सरगम – प म ग म प म म म म ग प ग रे स स रे ग म प प प म ग म ध नी ध प म प प ग रे सा, स स स नी ध ग म प ध नी ध ग म प ध नी ध ध प ग म प म ग रे सा ॥१६॥

---

५. क मातृका – पूर्वलिखित ग्रन्थस्थ
ख मातृका – गनीतीव्राशास्त्रवद्भिः प्रोक्ता ऋषभपूर्विका।

६. क, ख, मातृका – देशाख्य पादिमः प्रोक्तः/ शुद्धपाठ – देशाख्यः पादिमः।

ललिता धादिमा ज्ञेया धैवतर्षभकोमला ॥१७॥

सरगम – ध नी सा ग ग रे ग म म म म प प म ग ग रे ग रे स नी ध ध ध प प म ग म प ध नी ध नी नी स नी ध प प ध ध म ग ग म ग रे स नी ॥१७॥

रामक्रिया सादिमा स्याद् धैवतर्षभकोमला ॥१८॥

सरगम – स रे रे म म प ध नी नी स स ध प म ग रे रे रे स स स नी नी ध ध प म ग स स रे रे स ॥१८॥

दीपको मालवोत्पन्नो गादिमः सादिमस्तथा।[७]
सम्पूर्णः कथितः शास्त्रे गानविद्याविशारदैः ॥१९॥

सरगम – स स स स ग रे स नी ध ध ध ध प म ग ग प म ग रे स रे स रे स स स स ग प ध नि ध ध प म ग रे स स रे स रे ग प म ग रे, वा ग प प स ग रे स नि ध ध प म ग प म ग रे स रे स स स स ग प ध नि ध प म प ग रे स, स रे स रे ग प म प रे सा ॥१९॥

कर्नाटी बहुधा प्रोक्ता निपूर्वा गनिकोमला ।
गनिशुद्धा नितीव्रा च गतीव्रा चोभयात्मिका ।
चतुष्षष्टिमितान् भेदानूचुरेके विचक्षणाः ॥२०॥[८]

सरगम – नी नी प प म प प नी स ग ग म म रे स स नी, प प प रे रे स नी नी ध प प ध ध ध ध म ग ग म प रे स स ॥२०॥

धैवतर्षभगान्धारनिषादाः कोमला मताः ।
देशी तु सादिमा शास्त्रे प्रोक्ता गायनसूरिभिः ॥२१॥

---

७. क मातृका – दीपको . . . ./ सम्पूर्णः कथिते शास्त्रे गानविद्याविशारदैः।
ख मातृका – दीपको मालवोत्पन्नौ गादिमः सादिमस्तथा। सम्पूर्णः कथितः शास्त्रे . . .।

८. क मातृका – चतुषष्टिमिता भेदानूचुरेके विचक्षणाः॥
ख मातृका – चतुषष्टिमाता भेदारुचुरेके विचक्षणाः॥

सरगम – स रे म प ध स नी नी ध, म प ग ग रे स रे म प नी ध म प ध स रे ग रे स स रे सा नी ध प म प ग रे स रे स ग रे स ग रे स नी ध म प म प म प ध नी ध म ध म प ग रे सा ॥२१॥

कामोदी धादिमा ज्ञेया सम्पूर्णा सर्वसम्मता ॥२२॥

सरगम – ध प ध स रे स स नी ध प ध स ध स रे ग म ग रे ग रे स स नी ध प ध ध ॥२२॥

सशुद्धतीव्रमध्या स्यात् केदारी रिधवर्जिता ।
रिवर्जा धवर्जा वा त्रिविधा परिकीर्तिता ॥२३॥

सरगम – नी ग म प नी सा नी प म ग स नी प नी स म ग स नी, स स म ग म प नी ध म ग म प म स नी स स ॥२३॥

शुद्धतीव्रनिषादाद्या सम्पूर्णा नाटिका मता ।
गान्धारकोमलाद्या च गमकैर्बहुभिर्युता ॥२४॥[१]

सरगम – स रे ग म प ध नी स नी प म म प रे स रे ग म प म म प प म म रे स स रे ग म प ध नी स, स नी प नी प नी नी स स म प प म म रे स रे स स नी प स स नी प रे प नी प म म प म रे सा ॥२४॥

रिधौ तु कोमलौ यत्र मस्तु तीव्रतमो मतः ।
श्रीरागः सादिमः प्रोक्तः सर्वस्वरविभूषितः ।
रिषभेण वियुक्तश्च षाडवः कैश्चिदीरितः ॥२५॥

सरगम – स स ग रे रे रे प म स स स नी नी स रे रे स नी ध प म प ध ध प म म ग रे रे प प प प म ध ध प म ग रे स ग ग ग म म प ध नी स स स स स स स रे ग रे स नी रे स नी नी ध प स नी नी ध प स नी नी

---

१. क ख मातृका – शुद्धतीव्रनिषादा सा सम्पूर्णा नाटिका मता।
ख मातृका – शुद्धतीव्रनिषादाद्या सम्पूर्णा नाटिका मता।
क मातृका – 'स नी नी घ प' इयान् अंसो रिक्तोऽस्ति।
ख मातृका – पूर्वोक्तपानेऽस्ति।

ध प ध प म ग रे स स ॥२५॥[१०]

रिकोमला मतीव्रा च पञ्चमेन विवर्जिता ।
सम्पूर्णा षाडवा चैव द्विविधापि वसंतिका ॥२६॥

सरगम – स रे ग म ध नी ध म ध म ग म ध नी ध ध म म ग म स स रे ग म म ध नी स रे ग म म ग रे स नी ध म म ग म ॥२६॥

मालवो रिपहीनश्च मस्तु तीव्रतरो मतः ।
धैवतः कोमलो ज्ञेयो यत्र साद्यस्वरैर्मतः ॥
सम्पूर्णः षाडवश्चैवौडवः प्रोक्तः पुरातनैः ॥२७॥

सरगम – स स स नी ध म म ध नी ध म ग म ग म स स स स म ग म स स नी स ग म ध नी स ध नी ध म म म ग सा ॥२७॥

रिधौ तु कोमलौ यत्र मतीव्रतरसंज्ञकः ।[११]
मालश्री रिधपैर्हीना प्रोक्ता कैश्चित् पवर्जिता ॥
रिधवर्जा रिवर्जा वा धवर्जा कैश्चिदीरिता ।
षाडवौडवसम्पूर्णा वाडवा च चतुर्विधा ॥२८॥

सरगम – स स स ग रे ग म प ध ध प म ग रे ग म ग रे सा, स स स स स स स स स ध प रे नी नी ध प म ग ग म म ग रे सा ॥२८॥

धनाश्रीस्सादिमा प्रोक्ता कोमलौ धैवतर्षभौ ।
गान्धार:कोमलश्चात्र मस्तु तीव्रतरो मतः ॥
रिहीना वा धहीना वा सम्पूर्णा षाडवाथवा ॥२९॥

सरगम – स स स ग रे स रे नी नी स ग ध प म ग ग रे स नी नी स ग रे स ग म म प नी स रे स नी नी ध प म म ग ग स रे नी नी ॥२९॥

---

१०. क मातृका – स नी नी ध प – इयान् अंशो रिक्तोऽस्ति।
ख मातृका – पूर्वोक्त पाठेऽस्ति।

११. क मातृका – रिधौ तु कौमलौ यत्र मतीव्रतरसंज्ञकः।
ख मातृका – रिधौ तु कोमलौ यत्र मस्तीव्रतरसंज्ञकः।

आसावरी मरित्यक्ता मत्यक्ता वा रिवर्जिता ।
सम्पूर्णा धादिमा प्रोक्ता सम्पूर्णौडवषाडवा ॥[१२]
रिधकोमलसंयुक्ता गकोमलयुताऽथवा ।
एवं बहुविधा ज्ञेया शास्त्रविद्भिरुदाहृता ॥३०॥

सरगम – ध नी स ग ग रे म म प नी नी ध प ध म प ध ध ध म ग रे स स स रे ग ग रे स नी स स स ध नी रे स स ॥३०॥

मेघः पूर्णो धत्रयस्स्यात्रिगौ कोमलसंज्ञितौ ।
मतीव्रो यत्र वै प्रोक्तश्शास्त्रविद्भिर्विचक्षणैः ॥३१॥

सरगम – ध नी स रे ग म प ध स ध प म प रे म रे सा ध स रे स म प म म रे सा रे स रे स प ध स ध प ध स रे ध सा ध प म म प म प म रे सा ॥३१॥

मल्हारी सपहीना स्यान्निवर्ज्या कैश्चिदीरिता ।
धादिमा वाडवा ज्ञेया सम्पूर्णौडवषाडवा ॥
चतुर्विधा सा निरुक्ता गानशास्त्रविशारदैः ॥३२॥

सरगम – ध नी स रे म प ध प ध प स रे स ध प स ग रे स रे रे प म ग रे स रे रे स ध ध म ध स रे म ग रे स ध रे सा ॥३२॥

देशकारः सादिमः स्यात् सम्पूर्णः सर्वसम्मतः ।
निषादर्षभगांधारधैवता यत्र कोमलाः ॥३३॥

सरगम – स नी स स रे स नी ध ध नी स रे ग म ग रे स रे स नी ध ध नी स रे स नी स नी ध ध नी स ॥३३॥

भूपाली मनिवर्जा तु मवर्जा वा निवर्जिता ।
गनीतीव्राथवा प्रोक्ता धैवतर्षभकोमला ॥
षड्विधा गानकुशलैः सम्पूर्णादिप्रभेदतः ॥३४॥

---

१२. क मातृका – आसावरी-सम्पूर्णा धादिमा प्रोक्ता सम्पूर्णौडवषाडवा।
ख मातृका – आसावरी . . . सम्पूर्णा धादिमा प्रोक्ता सम्पूर्णाडवः षाडवा।

सरगम – ग प ध स रे ग प ध स ग ग प प ध ध प ध ध प प ध प ध स प ध स स ध म ग रे सा ॥३४॥

गुर्जरी द्विविधा प्रोक्ता दक्षिणादिप्रभेदतः ।
निगधाः कोमला यत्र रिषभश्चात्र कोमलः ॥
मस्तु तीव्रतरः प्रोक्तः सम्पूर्णा सर्वसम्मता ॥३५॥

सरगम – रे रे रे रे रे ग ग प म ग म म ध ध ध म ग रे स स स रे रे रे रे प प प म म ग म ध ध रे ग ग रे सा ॥३५॥

टंकः साद्यः स्वरैः पूर्णो रिगौ यत्र च कोमलौ ।
मस्तु तीव्रतरः प्रोक्तो गानशास्त्रविशारदैः ॥३६॥

सरगम – स रे ग म प ध स प ग रे स नी ध प ध ध ध ध प म प प म ग रे स नी स रे नी नी स नी ध प ध ध ध म म प म प प ग रे स प नी स ग रे ग म ग रे स नी स रे स नी स नी स नी ध प ग म प म म ग रे स ॥३६॥

त्रिवणः पविहीनः स्याद् रिधौ यत्र च कोमलौ ।
सम्पूर्णः कैश्चिदित्युक्तः षाडवः सर्वसम्मतः ॥३७॥

सरगम – स रे ग म ध ध नी स स नी ध ग रे ग रे स स ग रे ग म म ग रे स नी स रे ग म म रे ग स ध म म म ग रे स ध म ग रे स, वा स रे ग म प ध नी स नी नी ध ग रे ग रे स स रे ग म ग प ग रे स नी स रे ग म प ग रे स ध प प म ग रे स ध प ग रे स ॥३७॥

गौडः पूर्णः सादिमश्च शुद्धतीव्रमसंयुतः ।
रिहीनो वा धहीनश्च उभाभ्यां वर्जितोऽथवा ॥
त्रिविधोऽयं समुदितस्सम्पूर्णौडवषाडवैः ॥३८॥

सरगम – स रे म म प ध म ग म प ध स नी प ध प म म प म ग रे रे ग रे स ध स रे म म म ध नी ध प म प म ग रे ग म ग रे सा ॥३८॥

पहाडी रिपहीना स्यात् तीव्रशुद्धमसँय्युता ।
पहीना वा रिहीना वा सम्पूर्णा वा त्रिधा मता ॥३९॥[१३]

सरगम – स ग ध नी स नी ध ग म म ग स ग स ध नी स ध नी ग म ग
स ध नी स ग नी स ध ग म म स ग ग ध नी नी ध ग म ग ध नी स ग
ध नी ध ग म ग स ॥३९॥

धहीना देवगिर्युक्ता षाडवा सर्वसम्मता ॥४०॥

सरगम – स रे ग म प नी स स नी नी प म रे स स रे म प ध प म म म
ग रे स स रे ग म प म ग रे स नी स स रे ग म प ध ध प म ग म प म
म प ध प म म ग रे सा ॥४०॥

पहीनो पञ्चमो ज्ञेयो रिहीनो वा धहीनकः ।
रिधौ वा कोमलौ ज्ञेयौ मतीव्रेण समन्वितः ॥[१४]
षाडवौडवभेदेन चतुर्द्धा परिकीर्तितः ॥४१॥

सरगम – स ग रे ग म ध नी स नी ध म ग स स ग म ध ध नी ध नी स
म ग स रे ध नी ध म स ग म ग स नी ध नी स स ॥४१॥

मारश्री सादिमा ज्ञेया रिगकोमलसंयुता ।
मतीव्रेण समायुक्ता पूर्णोक्ता शास्त्रवेदिभिः ॥४२॥

सरगम – स ग म प नी नी ध ध प म ग म म प नी स स रे स नी प ध
प म ग म म प नी नी ध ध प म म ग रे सा ॥४२॥

विभासः सादिमः प्रोक्तो रिधौ यत्र च कौमलौ ।

---

१३. क मातृका – पहीना वा रिहीना वा सम्पूर्णा वा तिनाधपा।
ख मातृका – प हीना वा रिहीना वा सम्पूर्णा वा त्रिधा मता।

१४. क मातृका – रिधौ वा कोमलौ ज्ञेयौ . . .।
ख मातृका – दिधौ वा कोमलौ ज्ञेयौ . . .।

मनी तीव्रौ त्रिधा प्रोक्तो महीनो वा निहीनकः ।।[१५]
उभाभ्यां वा विहीनश्च सम्पूर्णौडवषाडवः ।।४३।।

सरगम – स रे ग प ध स ध प ग रे स स नी नी ध ध स नी ध प ग प ग रे ग रे स ध ध प ग ग रे रे स स रे ग प ध ग प प ग ग रे ग रे ग रे स स स स रे ग रे स नी ध ध स रे ग प ग प प ध ध स ध प ग रे स ।।४३।।

सौराष्ट्री त्रिविधा ज्ञेया रिपहीना रिहीनका ।
पहीना वा समाख्याता मतीव्रा कोमलर्षभा ।।४४।।

सरगम – प ध नी सा रे ग म म ग रे स नी ध ध नी स रे स रे नी स नी ध ध नी स रे ग म नी ध म म ग म ग रे स नी स नी सा रे नी स नी ध म ग रे ग रे स नी ध नी स ।।४४।।

सोरठी च रिहीनोक्ता निगौ यत्र च कौमलौ ।
नितीव्रा वा गतीव्रा वा निगहीनाऽथवा मता ।।
एवं षोडशधा ज्ञेया शास्त्रविद्भिरुदाहृता ।।४५।।

सरगम – रे म प रे स रे स नी ध ध प ध प म ग रे रे रे स स रे प म प स स स नी ध प ध प म ग रे रे स स स नी ध प ध म प ग रे रे रे रे स रे म म प नी ध प ध प म ग रे स। वा। प ध नी स रे ग म ग रे स रे नी ध प म प ध नी स रे ग म प ध नी स नी ध प म ग रे स रे ग रे स नी ध ध नी ध नी ध प म प म प ध नी स ।।४५।।[१६]

देशः पूर्णो रिस्वराद्यो देशभेदादनेकधा ।

---

१५. क मातृका – मनी तीव्रौ त्रिधा प्रोक्ताः महीनो वा निहीनकः।
ख मातृका – मनी तीव्रौ . . .।
उचितपाठ – मनी तीव्रौ त्रिधा प्रोक्तो . . .।

१६. क मातृका – नी ध प म प म प ध नी स
ख मातृका – नी ध प म प म प नी स

चतुष्षष्टिविधो ज्ञेयः शास्त्रविद्भिरुदाहृतः ॥
यस्य देशस्य या छाया तद्युक्तः समुदीरितः ॥४६॥[१७]

सरगम – रे रे म म म म प प प स स नी ध ध प म प प रे रे स नी नी ध प म ग रे म म ग रे रे स नी स स स, 'वा' रे नी स रे स रे ग रे प ध नी स नी ध प म ग रे सा, स नी प नी स रे स म प नी स नी ध प ध प म प ध प म ग रे स, 'वा' स रे म प ध प म ग रे ग रे स रे नी ध प ध प म ग रे स रे नी स प नी स रे स ॥४६॥

मल्हारदेशो विज्ञेयो मल्हारस्वरभूषितः ।
सोरठीस्वरसंयुक्तः सोरठाद्यः समीरितः ॥
जैजैवन्तीयुतो वापि तत्पूर्वः समुदीरितः ।
सावेरी पादिमा प्रोक्ता सम्पूर्णस्वरभूषिता ॥४७॥[१८]

सरगम – प ध ध स रे रे ग रे स नी ध प म प म स ग रे स स रे म प ध ध नी ध नी ध ध प म म ग रे स ग रे स रे म प ध प म प प रे ॥४७॥

गंधारो मादिम : प्रोक्तः सम्पूर्णो रिधकोमलः ॥४८॥

सरगम – म म प ध ध म ग स रे प प प ध ध ध स स स नी ध प प म प प ध ध म ग ग रे स रे रे रे रे स स नी नी नी नी स ध नी स स स रे रे रे रे स स स स स नी नी नी ध प स रे रे ग ग प म ग म म ध ध म ग रे स स ॥४८॥

देवपूर्वोऽथ गान्धारो ज्ञेयो भैरववत्सदा ॥४९॥

सरगम – ध नी स रे ग म प ध प म स रे स नी ध ध नी स रे स नी ध ध नी स रे ग म ग रे स नी ध ध नी स रे स नी ध ध नी स रे स नी ध ध नी स रे ग म ग रे स नी ध नी नी स नी ध प म ग रे स ॥४९॥

---

१७. क मातृका – चतुःषष्टिविधो ज्ञेयः शास्त्रविद्भिरुदाहृतः।
ख मातृका – चतुःषष्टिविधो ज्ञेया शास्त्रद्भिरुदाहृताः।

१८. क मातृका – सोरठी स्वरसंयुक्तसोरठाद्यः समीरिता।
ख मातृका – सोरठीस्वरसंयुक्तः सोरठाद्यः समीरितः।

जयश्री मादिमा ज्ञेया धैवतर्षभकोमला ।
मतीव्रा कथिता पूर्णा शास्त्रज्ञैः सर्वसम्मता ।।५०।।

सरगम – म प प प ध स रे ग ग ग ग ग म म ध प म प रे स ग ग प ध म प स रे स नी ध नी रे स नी ध प ।।५०।।

कल्याणी बहुधा शुद्धस्वरा ज्ञेया बिचक्षणैः ।
यद्रागस्वरसंयुक्ता तत्पूर्वा कथिता च सा ।।५१।।

सरगम – रे ग म प ध म प म ग रे रे ग ग म प ध नी स म ग रे सा, ग ग रे नी स प नी नी नी नी स रे रे ग रे रे ग म प म ग म म म रे नी रे रे ग म ग रे स ।।५१।।

आभीरी गादिमा ज्ञेया धैवतर्षभवर्जिता ।
सम्पूर्णा षाडवा कैश्चित् (उक्ता),
रिधकोमलसंयुता ।।५२।।[१९]

सरगम – ग मं ध प नी स स स नी ध प म प म ग रे स नी नी नी स स स नी स रे ग म प प प म ग रे स नी नी नी स स स स प प स स स नी नी प म ग रे स स स स स ग रे स रे स रे स नी नी नी स स ।।५२।।

सारंगरागिनी ज्ञेया शुद्धा गान्धारवर्जिता ।
गकोमला, गतीव्रात्र मतीव्रा धैवतोज्झिता ।।[२०]
नितीव्रा वा धसंयुक्ता निषादस्वरकोमला ।

---

१९. क मातृका – सम्पूर्णा षाडवा कैश्चिदुक्ता रिधकोमलसंयुता।
ख मातृका – सम्पूर्णा षाडवा कैश्चित् रिध कोमलसंयुता।

२०. क मातृका – गकोमला गतीव्रा च मतीव्रा धैवतोज्झिता।।
ख मातृका – गकोमला गतीव्रात्र मतीव्रा धैवतोज्झिता।।

२०. क मातृका – स ध प म ध म रे प म रे सा।
ख मातृका – स ध प म प म रे प म रे सा। (५३)

एवं बहुविधा ज्ञेया पञ्चविंशतिधाथवा ॥५३॥

सरगम – स स रे म प ध नी ध ध म रे स स प प नी स रे म प ध प म रे स स रे म प नी स स नी रे स रे नी स ध प म ध म रे प म रे स ॥५३॥

नटनारायणो ज्ञेयश्शुद्धतीव्रमसंयुत: ।[२१]
गांधाररहित: कैश्चिदन्यै र्धैवतवर्जित: ।
पूर्णश्च षाडवश्चैव द्विविध: परिकीर्तित: ॥५४॥

सरगम – स रे म प नी स स नी प प ध प म प म रे ग रे स रे स नी स रे म रे ग रे ग रे स रे ग रे म रे स स नी नी म म प म म ग रे रे स नी स रे ग रे स नी स स ॥५४॥

श्यामस्तु गादिम: प्रोक्तो यत्र तीव्रतरस्तु म: ॥५५॥

सरगम – ग ग म प ध ध ध प म प ध प ग ग ग म प ग ग रे स स नी रे रे स स ग रे रे स नी ध प ध म ग रे ग प प म ग रे स स नी ग ग स स ॥५५॥

ईमनी गादिमा प्रोक्ता मध्यमस्वरवर्जिता
मतीव्रा च गतीव्रा च बहुधा शास्त्रसम्मता ।
श्यामपूर्वाथ कल्याणपूर्वा ज्ञेया विचक्षणै: ॥
वेलावल्यादिमा चैव नटपूर्वाथवा युता ।
एवं द्वादशधा स्पष्टा नादविद्याविशारदै: ॥५६॥

सरगम – ग ग रे स स नी स रे रे ग रे ग ध प ग ग रे ग रे स, स रे रे ग ध प प ध नी ध प ग ग रे रे स, नी सा रे ग, वा ग ग रे स नी स रे ग ध प म ग रे स, स नी स रे ग ध प प म म ग ग रे स स, नी स रे ग

---

२१. क मातृका – नटनारायणो ज्ञेयश्शुद्धतीव्रनसंयुत्तः।
गांधारत: कैश्चिदन्यै धैवतर्षभवर्जित:
ख मातृका – नटनारायणो ज्ञेयशुद्धतीव्रमसंयुतः॥
गांधारहित: कैश्चिदन्यैर्धैवतर्षभवर्जित:॥

म प ध नी स नी ध प म ग रे स नी स रे ग ग, वा म प ध प म ग रे स नी ध ध नी स रे ग म प ध प म म ग रे रे स नी स नी नी स रे ग ग वा प म म ग रे स नी स रे ग ध प म ग रे स नी ध प ध नी स रे ग म ध नी ध प म म प म म ग रे स रे ग ग वा ॥५६॥

कुडाई सादिमा ज्ञेया षाडवा धैवतोज्झिता ।
सम्पूर्णा वा कैश्चिदुक्ता द्विविधा कीर्तिता बुधैः ॥५७॥

सरगम – स ग म प म रे ग रे स रे म ध नी स ध नी स प म ध नी स रे ग म प म ध नी स रे स नी नी ध ध ध ध प म प ग रे सा ॥५७॥

नागध्वनी शुद्धतीव्रमध्यमा गनिकोमला ।[२२]
शुद्धस्वराथवा ज्ञेया सम्पूर्णा पादिमा स्मृता ॥५८॥

सरगम – प ध स रे ग ग रे स ध प म ग रे स नी ध प म ग रे ग रे प ध प ध म ग म ग रे स रे ग रे स रे ग म प ध नी ध प म प ध म प रे रे ग ग म म रे रे स स नी नी स रे स ॥५८॥

शंकराभरणो ज्ञेयो गान्धारस्वरवर्जितः ।
शुद्धमध्यमसंयुक्तः शुद्धतीव्रनिसंयुतः ॥
गान्धारस्वरसंयुक्तः शङ्करः परिकीर्तितः ।
सम्पूर्णो वाथ कैश्चित्तु प्रोक्तो गानविशारदैः ॥५९॥[२३]

सरगम – स रे म प ध नी स स नी ध म म प म रे स, स नी ध प ध नी

---

२२. क ख मातृका – नागध्वनी शुद्धतीव्रमध्यमा गनिकोमला
शुद्ध पाठः – नागध्वनीः शुद्धतीव्रमध्यमा गनिकोमला

२३. क मातृका – शंकराभरणो ज्ञेयो गान्धारस्वरवर्जितः।
शुद्धमध्यम . . . विशारदैः॥ उल्लिखितवत्
ख मातृका – शंकराभरणो ज्ञेयो गान्धारस्वरवर्जितः।
सम्पूर्णो वाथ कैश्चित् तु प्रोक्ता गानविशारदैः।
शुद्धामध्यम संयुक्तः शुद्धतीव्रनिसंयुतः।
गान्धारस्वरसंयुक्तः शङ्करः परिकीर्तितः।।

स रे म ग म प, म ग रे स रे ग म प ग रे ग म ग रे प स नी ध नी स रे नी स ध नी स स ॥५९॥

वडहंसी निपूर्वा स्याद् गनीवेलावल्याः स्वरैः ।
ज्ञेया च ऋषभाद्येषा विद्वद्भिः परिकीर्तिता ॥
तीव्रमध्यमसंयुक्ता रागमेलादनेकधा ॥६०॥[२४]

सरगम – रे रे ग प प ध नी स स स स ध नी नी स नी म प ग म म ग रे रे स स ग ग ग प प ध नी नी स नी ध प ग ॥६०॥

रागिनी बरवा ज्ञेया गनिकोमलसंयुता ।
शुद्धतीव्रमसंयुक्ता सम्पूर्णा शास्त्रसम्मता ॥६१॥

सरगम – रे रे रे ध ध प प प ग ग म म प म म म प प ध ध म म म म म म नी स स रे म ग रे स ग ग रे स स नी नी ॥६१॥

बहारो धादिमो ज्ञेयो वसंतीस्वरसम्मतः ।
रागमेलाद् बहुविधो ज्ञेयः प्रोक्तः पुरातनैः ॥६२॥

सरगम – ध नी प म ग म म प प नी नी नी प ध नी स रे नी ध प प प प प प नी नी स स स ध नी स रे स रे ध नी स प ध नी स ग ग ग ग स रे रे नी स नी स प ध रे नी स ध प नी स रे नी स प ॥६२॥

विहागः शङ्करोत्पन्नो रिधवर्जो रिवर्जकः ।

---

२४. क मातृका – बडहंसी निपूर्वा स्याद् गनी वेलावल्याः स्वरैः
ज्ञेयो ह्यलैषा परिकीर्तितः . . . दनेकधा॥
ख मातृका – बड़हंसी . . . सर्गौ ह्यलैषा परिकीर्तितः . . .दनेकधया।
मम मते तु – बड़ हंसी . . .
ज्ञेया च ऋषभाद्येषा विद्वद्भिः परिकीर्तिता॥
. . . . दनेका धा॥
अत्र पाठद्वये द्वितीयपक्तौ छन्दो भङ्गः अस्पष्टार्थश्च।
स्वीकृतपाठो मूलसरगमानुसारी विद्यते॥

धवर्जो वा गनी तीव्रौ शुद्धतीव्रमसंयुतः ॥
एवं बहुविधो ज्ञेयश्शास्त्रे प्रोक्तः पुरातनैः ॥६३॥[२५]

सरगम – नी स स ग म प नी नी स नी प म प म ग स नी प म नी स ग म प नी स स ग म प नी स नी नी नी स प म ग प ग म ग स नी नी प म प नी नी स ग म प नी, वा - नी ध प म नी सा नी ध प म ग रे सा नी नी प नी स ग म प नी स नी स नी ध प म ग म ग रे स नी ॥६३॥

भीमपूर्वा पलासी स्यात् कौमलौ सनिगौ रिधौ ॥६४॥

सरगम – ध प प म प प प प म प प म ग म प म म ग ग रे स स नी नी स ग ग म म रे रे स स स स स नी नी ध प प ग रे स स स स रे ग रे स नी ध स स ध प ॥६४॥

खम्भावत्याः समुत्पन्नो रिधौ यत्र च कोमलौ ।
मतीव्रः यजेसंज्ञस्तु रागमेलादनेकधा ॥६५॥

सरगम – स रे ग म म प ध ध प म ध ध प म म ग रे ग ग ग म म ग रे स स नी स स ग म प ध नी स रे नी स स ॥६५॥

गौरीस्वरसमुत्पन्ना पूरवी रिधकोमला ।
मतीव्रशुद्धयुक्ता वा सम्पूर्णोक्ता स्वरादिमा ॥६६॥

सरगम – स रे स नी नी स रे ग ग म प म ग म प प म म ग ग ग ग रे स स नी ध प ध नी नी स म ध स स नी स प ग म म ॥६६॥

श्रीरागतः समुत्पन्नो रिधकोमलसंयुतः ।
पीलू मध्यमगान्धारशुद्धतीव्रसमन्वितः ॥६७॥[२६]

---

२५. क मातृका – एवं बहुविधो ज्ञेयश्शास्त्रे प्रोक्तः पुरातनः।
ख मातृका – एवं बहुविधो ज्ञेयश्शास्त्रे प्रोक्तः पुरातनैः।

२६. क, ख मातृका – पीलू मध्यमगान्धारशुद्धतीव्रसमन्वितः।
शुद्धपाठः – पीलूर्मध्यमगान्धारशुद्धतीव्रसमन्वितः।

सङ्केतः– इतः परं द्वितीयायाः मातृकायाः स्थितिर्नास्ति।
अतः कमातृकात एव सम्पादनं क्रियते।

सरगम – रे ग रे ग नी स रे ग म प म ग ग नी स रे ग म प म ग रे स नी स रे ग म प म म ग म ग नी स रे ॥६७॥

तैलङ्गी गादिमा ज्ञेया छाया तद्देशजा मता ।
सम्पूर्णा च स्वरैः शुद्धा कैश्चित् तीव्रा स्वरोदिता ॥६८॥

सरगम – ग म प नी स स ग ग म प नी स ग म प नी नी स स नी स प म ग नी स ग म म ग रे रे स स ग म म प नी प नी प नी स नी प म ग म ग नी नी प म ग रे स स नी प म नि स ग ॥६८॥

योगी बंगालिका प्रोक्ता रिधौ यत्र च कोमलौ॥६९॥

सरगम – स स रे म म प ध ध प म प प म ध ध प म ग रे स स नी रे रे स नी रे रे स नी ध प म प प म ध प म ग रे सा ॥६९॥

जानपुर्याः स्वरा ज्ञेया तोडिकासदृशा बुधैः ।
धैवतर्षभगान्धारनिषादस्वरकोमलैः ॥७०॥

सरगम – रे रे म नी नी स रे प म ग ग ग रे स स ग ग रे स स स स स म म म म प प प ध ध ध प नी नी ध प नी नी ध प ध नी नी ध प ध प प ग म ध प प ध म प ग ग ग म म ग रे सा ॥७०॥

कल्याणात्समुत्पन्ना अओठी सर्वसम्मता ।
शुद्धस्वरा पादिमा वा निषादद्वयसंयुता ॥७१॥

सरगम – प ध स रे ग म म ग रे स नि प ध स रे ग म म ग रे स नी प ध प रे ग म प ध नी प ध स रे ग म प म ग रे स नी प नी स रे ग म प म ग रे म ग रे स ॥७१॥

चैत्री गौरीसमुत्पन्ना मतीव्रर्षभकोमला ॥७२॥

सरगम – स स प प प स रे ग ग ग ग ग ग म प ध म प ग रे स ग ग ग म म प ध म प ग रे रे स नी ध नी नी रे सा नी ध प ॥७२॥

सौरठीतः समुत्पन्ना जैजैवन्ती च पादिमा ।
कोमलावत्र गांधारनिषादौ परिकीर्तितौ ॥७३॥

सरगम – प प प रे रे स रे ग ग ग ग ग म प प ग रे स नी नी नी स ग ग रे स स नी नी नी नी प नी रे रे स नी नी प प म म म म म म म ध प प स स नी ध ध प म प स नी नी ध प प ॥७३॥

गौडपूर्वमल्हारी स्यान्निषादस्वरकोमला ॥७४॥

सरगम – म म रे रे रे नी स रे म म ग ग म प प म प म ग रे म म म म म म म रे ग म प ध ध स स ध प म ग रे ॥७४॥

छाया नटदेशजा प्रोक्ता बहुधा धादिमा स्मृता ॥७५॥

सरगम – ध ध प ध प ध प ग रे रे ग ध नी स ध ध प प ध ध प प रे ग रे ग ध ध प प नी स रे रे ग ग प ध नी ध ध नी प म ग ग ग रे रे स ध नी स ध प प प ध ग ग रे रे ध नी सा ॥७५॥

छायापूर्वो नटः प्रोक्तः छायास्वरयुतः सदा ।
शुद्धतीव्रमसंयुक्तः सम्पूर्णो निस्वरादिमः ॥७६॥[२७]

सरगम – नी ध ध म प रे ग ग ग प म ग रे नी नी नी रे रे स स नी नी रे रे रे रे ग ग ग ग म म रे नी नी नी रे रे स स ग ग म म प ध नी प रे रे रे रे रे ग ग ग ग ग ग ग रे सा स नी स स नी स प म म नी स प ग ग ग म प ग रे ॥७६॥

धनाश्रीतः समुत्पन्ना धानी गान्धारकोमला ।
निद्वयेन युता पूर्णा मद्वयेन विभूषिता ॥७७॥[२८]

सरगम – ध नी म ग ग म प ग प प म ग ग रे स रे नी स म स म ग रे रे स नी नी प म म प नी सा ग रे ग ग ॥७७॥

---

२७. क मातृका – छायापूर्वो ततः प्रोक्तः छायास्वरयुतः सदा।
निस्वरादिमः . . . . . .
स्वीकृतपाठः – छार्यापूर्वो नटः . . .

२८. क मातृका – मद्वयाभ्यां युता पूर्णा मद्वयेन विभूषिता।
स्वीकृतपाठः – निद्वयेन युता पूर्णा मद्वयेन विभूषिता।

सैन्धवीत: समुत्पन्ना निगौ यत्र च कोमलौ ॥७८॥

सरगम – स रे म प ध नी ध प म प म म ग ग रे स नी स नी ध प म म
प प ध ध प म प म म ग रे रे स ॥७८॥

कर्नाटीत: समुत्पन्ना: सूहा च निगकोमला ॥७९॥

सरगम – प प म प प ग प म ग ग म रे स स स स रे रे रे म म प प प
प प प प प प रे नी सा ॥७९॥

कर्नाटीत: समुत्पन्ना सुघराई निकोमला ।
गान्धारकोमला चैव सादिमा परिकीर्तिता ॥८०॥

॥ सम्प्राप्तग्रन्थ एतावानेव॥

# रागार्णवम्

## रागचन्द्रिका व्याख्या

### राग भैरव

अथ रागार्णवे रागसरगमाः ।
भैरवो धैवतादिः स्यात् कोमलौ तु रिधौ मतौ ।
रिमहीनः परैः प्रोक्तो अन्यैर्ऋषभ–वर्जितः
षाडवौडवसम्पूर्णभेदेन त्रिविधो मतः ॥१॥

सरगम – ध ध ध प म ग रे रे स नी ग ग ग ग म ग, ग म म नी ध ध
ध ध प ध ध म प म ग ग म म, रे रे ग म नी ध ध ध ध ग म म प ध
प ध ध नी नी नी प ध ध नी स स नी ध प म नी नी ध प म म ग प ध
ध नी ध प म ग ग म म रे रे स स ग ग रे रे ग ग म म म रे ग म ॥१॥

मूलार्थ

इस रागार्णव ग्रन्थ में रागों की सरगमों का विवेचन किया जा रहा है। राग भैरव में आदि स्वर (वादी स्वर) धैवत है। इसमें ऋषभ तथा धैवत कोमल माने गये हैं। शेष स्वर शुद्ध रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। कुछ लोग इसमें ऋषभ तथा मध्यम का प्रयोग नहीं करते। कुछ लोग केवल ऋषभ स्वर को ही वर्जित मानते हैं। इस प्रकार भैरव राग सम्पूर्ण षाडव तथा औडव भेद से तीन प्रकार का माना जाता है।

ध स्वर सभी के मत में आदि स्वर (वादी स्वर) है। इसलिये सरगम का प्रारम्भ उसी स्वर से है। यद्यपि मूल ग्रन्थ में कोमल या तीव्र स्वरों का कोई चिन्ह नहीं दिया गया तथापि हम भातखण्डे लिपि पद्धति से ही सरगमों का परिचय देंगे।

ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ प म ग रे॒ रे॒ सा नी ग ग ग ग म ग, ग म म नी ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ प
ध॒ ध॒ म प म ग ग म म रे॒ रे॒ ग म नी ध॒ ध॒ ध॒ ध॒ ग म म प ध॒ प ध॒ ध॒
नी नी नी प ध॒ ध॒ नी सा सा नी ध॒ प म नी नी ध॒ प म म ग प ध॒ ध॒ नी
ध॒ प म ग ग म म रे॒ रे॒ सा सा ग ग रे॒ रे॒ ग ग म म म रे॒ ग म

विवृत्ति

इस प्रकार इस सरगम में भैरव के सम्पूर्ण भेद को ही दर्शाया गया है। धैवत से प्रारम्भ कर आलाप का मध्यम पर विश्राम दिया गया। आजकल जो भैरव का मुख्य स्वर चलन "म ग-ग म रे॒ रे॒ सा" है इसका एकाधिक बार प्रयोग हुआ है। सम्प्रति सभी राग षड्ज से ही प्रारम्भ होते हैं और उनका समापन भी लगभग उसी स्वर पर माना जाता है। इसीलिये षड्ज ही एक ऐसा स्वर है जिसका आधुनिक समय में प्रसिद्ध भारतीय रागों में किसी में भी वर्जित स्वर के रूप में निषेध है। रागार्णव में इसका कहीं पालन नहीं है। यह अनुपद स्पष्ट होगा। सम्पूर्ण जाति के स्वरूप के बतलाने के बाद षाडव तथा औडव के स्वरूप को ग्रन्थकार ने सरगमों के माध्यम से कहीं बतलाया है, कहीं नहीं बतलाया। सम्भवतः केवल स्वरूप मात्र बोधन में ही उनका तात्पर्य रहा हो। इनका आरोहावरोह के रूप में निम्न स्वरूप हो सकता है।

(१) षाडव-ऋषभ विवर्जित स्वर

सा ग म ध॒ प ध॒ नि सां
सा नि॒ ध॒ प म ग सा

इसमें भैरव राग का आधुनिक स्वरूप नहीं बनता। यद्यपि "सौराष्ट्र भैरव" जिसका विवेचन "साम्प्रतिक भैरव राग" के विवेचन में करेंगे उसमें कुछ स्वरूप प्राप्त होता है। इसमें आरोह में ऋषभ का प्रयोग नहीं होता। जिसका आरोह तथा अवरोह है सा ग म ध॒ म ध॒ सां। सां रें ध॒ प नि ध॒ प म ग रे॒ सा। इसका आरोह में ऋषभ निषाद तथा पञ्चम तीनों वर्ज्य है। किन्तु अवरोह में सभी स्वर हैं अतः ग म रे॒ सा यह स्वरूप बन जाता है।

(२) औडव स्वरूप

इसमें ऋषभ तथा मध्यम वर्ज्य हैं। इसका स्वर –

सा ग प ध॒ नि सां
सां नि ध॒ प ग सा

सम्प्रति यह स्वर-समुदाय इसी रूप में किसी भैरव के प्रकारों में नहीं आता है। हो सकता है कि ग्रन्थकार के समय यह प्रकार भैरव का स्वरूप पूर्ण प्रसिद्ध रहा हो। किन्तु ग्रन्थकार भैरव के इन दोनों षाडव और औडव प्रकारों को "परैः" तथा "अन्यैः" शब्दों से कहा है। अतः यह समझा जा सकता है कि ये दोनों प्रकार ग्रन्थकार को मान्य नहीं थे।

।।साम्प्रतिक भैरव राग।।

आधुनिक समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत में जो भैरव के प्रकार प्रसिद्ध हैं वे ये हैं – भैरव जिसके सामान्य स्वरूप को ग्रहण कर ग्रन्थकार ने विवेचन किया है किन्तु चलन में कुछ अन्तर है।

(१) राग भैरव
(२) अहीर भैरव
(३) नट भैरव
(४) आनंद भैरव
(५) बंगाल भैरव
(६) शिवमत भैरव
(७) सौराष्ट्र भैरव
(८) प्रभात भैरव
(९) कोमल भैरव
(१०) कौंसी भैरव
(११) झीलफ भैरव
(१२) वैरागी भैरव
(१३) भटियारी भैरव

इनका विवेचन पृथक्-पृथक् सम्प्रति प्राप्त स्रोतों से संक्षेप में किया जा रहा है।

(१) भैरव – उत्तर भारतीय राग इस समय दश थाटों में विभाजित हैं, जिसमें भैरव थाट से भैरव राग की उत्पत्ति मानी जाती है। इसका गायन या वादन समय प्रातःकाल अर्थात् रात्रि का चतुर्थ प्रहर सामान्यतः ३-६ है। वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है। आरोहावरोह तथा चलन इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग म रे॒ सा
पकड़ – सा ध॒ ध॒ प म ग म प ग म रे॒ सा

(२) अहीर भैरव – अहीर भैरव राग भैरव का एक विशेष प्रकार है जिसके गायन एवं वादन का पर्याप्त प्रचार है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। गायन समय प्रातःकाल ही है। इसमें ऋषभ तथा निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। सभी

स्वरों का प्रयोग होने से यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें कोई स्वर वर्ज्य नहीं है। इसकी आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म प ग म रे॒ सा
पकड़ – सा ध़ नि़॒ सा रे॒ ग म प म प ग म रे॒ सा

(३) राग-नट भैरव – राग नट भैरव यह भी एक भैरव का प्रकार है। इसका आरोह, अवरोह तथा चलन इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग म रे सा
चलन – सा रे ग म प ध॒ प म ग म रे सा

स्वरूप विवेचन – इस राग का वादी स्वर म तथा संवादी स्वर सा है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। ध॒ स्वर कोमल है; कोई स्वर वर्जित नहीं है।

(४) आनन्द भैरव – यह राग भी भैरव राग का एक प्रकार है। इसका गायन एवं वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर ३-६ बजे का है। किन्तु सूर्योदय के समय भी इसका गायन एवं वादन देखा जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ स्वर इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध नि सां
अवरोह – सां ध नि प म ग म रे॒ सा
पकड़ – सा रे॒ ग म प, सां ध नि प म ग म रे॒ सा

इस राग में केवल ऋषभ स्वर कोमल है बाकी सभी शुद्ध हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है किन्तु अवरोह में नि वक्र लगता सां ध नि प ऐसे, 'सां नि ध प' ऐसे नहीं लगता।

(५) बंगाल भैरव – बंगाल भैरव जैसे कि नाम से ज्ञात हो रहा है बंगाल के किसी संगीतज्ञ के द्वारा रचित रहा होगा। इसका गायन एवं वादन समय अन्य भैरव रागों की ही तरह प्रातः एवं रात्रि का चतुर्थ प्रहर है। इसका वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है। यह षाडव जाति का राग है इसमें निषाद स्वर आरोह तथा अवरोह दोनों में वर्जित रहता है। ऋषभ तथा धैवत कोमल अन्य सभी स्वर शुद्ध रूप से प्रयुक्त हुये। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प म ग म रे॒ सां
पकड़ – ध़ ध़ सा रे॒ ग म प ग म रे॒ सा ध़ ध़ सा

(६) शिवमत भैरव – यह राग सम्पूर्ण जाति का भैरव थाट से उत्पन्न राग भैरव का एक प्रकार है। इसका वादी स्वर धैवत तथा संवादी ऋषभ है। इसमें ऋषभ तथा धैवत दोनों स्वर कोमल तथा ग नि दोनों लगते हैं। वर्ज्य स्वर कोई नहीं है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प नि॒ ध॒ प म ग म रे॒ सा नि़ सा ग॒ रे॒ सा
पकड़ – सा नि़ ध़ प़ ध़ नि़ सा . . . सा रे॒ ग म प ग॒ म रे॒ सा नि़ सा ग॒ रे॒ सा

(७) सौराष्ट्र भैरव – इसके नाम से यह प्रतीत होता है कि सौराष्ट्र देशीय संगीतज्ञों ने इसकी संरचना की है। इस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसके आरोह में ऋषभ पञ्चम तथा निषाद वर्ज्य है। अवरोह में सभी स्वर लगते हैं किन्तु वक्र रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसमें ऋषभ तथा धैवत दोनों शेष स्वर शुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म ध म ध॒ रे॒ सां
अवरोह – सां रें॒ ध॒ प नि ध॒ प म ग
पकड़ – ग म प म रे॒ सा ग म ध म ध सां रे॒ सां ध॒ प

(८) प्रभात भैरव – यह भी भैरव थाट से उत्पन्न राग एक भैरव राग का प्रभेद है। इसका वादी स्वर षड्ज तथा संवादी स्वर मध्यम है। गायन एवं वादन समय प्रातःकाल जैसे कि इसके नाम से ही ज्ञात होता है। अतः इसका वादन समय प्रातः अर्थात् उषःकाल से लेकर सूर्योदय के समय तक ५.३० से ७.३० तक का है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म म॑ प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ म ग रे॒ सा
पकड़ – सा रे॒ रे॒ सा ग म ग रे॒ सा म म ग ध॒ प म॑ म ग म रे॒ ग म॑ म प ग म रे॒ सा

इस प्रकार इसमें दोनों मध्यम तथा ऋषभ और धैवत कोमल लगते हैं। कोई स्वर वर्ज्य न होने से सम्पूर्ण जाति का राग कहा जा सकता है।

(९) कोमल भैरव – यह भी भैरव राग का एक प्रकार है। इसका वादी स्वर धैवत तथा संवादी ऋषभ है। इसमें दोनों निषाद तथा अन्य सभी स्वर कोमल लगते हैं मध्यम शुद्ध है। कोई स्वर वर्ज्य न होने से सम्पूर्ण जाति का राग माना जा सकता है। गायन एवं वादन समय प्रातःकाल ३-६ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे_ ग_ म प ध_ नि सां
अवरोह – सां नि_ ध_ प ध_ नि_ ध_ प म ग_ रे_ सा
पकड़ – सा रे_ ग प ध_ प नि_ ध_ प ध_ नि नि_ ध_ प म ग_ म रे_ सा

इस राग का प्रचलन बहुत कम है। फिर भी लोग इसे गाते या बजाते हैं।

(१०) कौंसी भैरव – इस राग का थाट भैरव है। वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज है। ऋषभ धैवत निषाद दोनों लगते हैं। शेष स्वर शुद्ध है। गायन एवं वादन समय प्रातःकाल है। यह सम्पूर्ण जाति वक्र चलन वाला राग है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग म प म नि ध_ नि सां
अवरोह – रें नि_ ध प म ग म रे_ सा
पकड़ – सा म ग म प म नि ध_ नि रे नि_ ध प म ग म रे_ सा

(११) झीलफ भैरव – इस राग का थाट भैरव है। वादी स्वर ध तथा संवादी स्वर ग है। इसमें ध_ कोमल एवं शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह तथा अवरोह में रे एवं नि स्वर का प्रयोग न होने से यह औडव जाति का राग है। इसके गायन एवं वादन का समय प्रात:काल है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प ध_ सां
अवरोह – सां ध_ प म ग सा
पकड़ – सा ध_ ध_ प ग ध_ प ग म सा ध़_ ध़_ सा

(१२) वैरागी भैरव

आरोह – सा रे_ म प नि_ सां
अवरोह – सां नि_ प म रे_ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे_ रे_ सा रे म प म म रे_ रे_ सा
जाति – औडव

वादी म, संवादी स तथा गायन वादन समय प्रात:काल है।

(१३) भटियारी भैरव

आरोह – सा रे ग म प ध नि प मं ध सां
अवरोह – सां नि ध प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग म प ध नि प ध म म ध प, ग म प, म रे रे सा

वादी म, संवादी सा, जाति सम्पूर्ण तथा समय प्रात:काल है।

## राग भैरवी

धैवतर्षभगान्धारनिषादाः कोमला मताः ।
मध्यमाद्या धैवताद्या भैरवी शास्त्रसम्मता ॥२॥

सरगम – म म प प म ग ग ग ग सा रे रे म म ग रे रे सा ध ध ध ध ध
स स स स स नी ग ग ग म म ग रे रे सा सा ॥२॥

मूलार्थ

भैरवी राग में धैवत, ऋषभ, गान्धार और निषाद कोमल माने गये हैं। इस राग में आदि स्वर मध्यम है, धैवत को भी आदि स्वर माना गया है। भैरवी राग सभी शास्त्रकारों द्वारा अभिमत है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

म म प प म ग ग ग ग सा रे रे म म ग रे रे सा ध ध ध ध ध सा सा सा
सा सा नी ग ग ग म म रे रे सा सा

इस प्रकार सरगम का प्रारम्भ मध्यम से किया गया है समापन का स्वर षड्ज है।

विवृति

इस समय जो भैरवी राग प्रचिलत है उसका भी वही स्वरूप है जो इस ग्रन्थ में दिया गया। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। धैवत वादी स्वर का भैरवी राग इस समय आदि भैरवी नाम से जाना जाता है। इसका वादी धैवत तथा संवादी गान्धार स्वर है। जोग भैरवी, शुद्ध भैरवी रागों के भी वादी स्वर धैवत हैं। सम्प्रति प्रसिद्ध भैरवी रागों का परिचय इस प्रकार है – (१) भैरवी, (२) आदि भैरवी, (३) शुद्ध भैरवी, (४) आनन्द भैरवी, (५) जोगी भैरवी, (६) जोग भैरवी, (७) चन्द्रिका भैरवी, (८) सिन्धु भैरवी, (९) नट भैरवी, (१०) सोम भैरवी, (११) सुर भैरवी,

(१२) सिंहमेल भैरवी, (१३) सालभ भैरवी, (१४) पूर्व भैरवी, (१५) जिंग्ला भैरवी, (१६) वसन्त भैरवी।

(१) भैरवी – इस राग में भैरवी थाट माना गया है उसी से इस राग की उत्पत्ति हुई है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। सभी रे ग ध नि स्वर कोमल तथा मध्यम शुद्ध है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसके गायन एवं वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ – सां ध प ध म प ग म ग रे सा ध़ नि़ सा

(२) आदि भैरवी – इस राग का थाट आसावरी है। षाडव जाति का राग है। इसमें निषाद पूर्णतया वर्ज्य है ग ध कोमल एवं अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी ध संवादी ग है। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर ९-१२ है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे ग म प ध सां
अवरोह – सां ध प म प ग रे सा
पकड़ – सा ग रे ग म प ग रे सा

(३) शुद्ध भैरवी – यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुआ है। इसका वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है, इसमें निषाद तथा गान्धार कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन एवं वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर ९-१२ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे म प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म रे ग म रे सा
पकड़ – सा ग रे म प नि ध प म रे ग म रे सा

इस राग में स्वर वक्र लगते हैं जैसा कि आरोह एवं अवरोह में स्पष्ट रूप से दिया गया है –

(४) आनन्द भैरवी – यह राग आसावरी थाट से उत्पन्न हुआ है। इसका वादी स्वर पञ्चम तथा संवादी षड्ज है। इसमें गान्धार निषाद कोमल तथा दोनों धैवत लगे हैं। इसमें आरोह में निषाद वर्ज्य है तथा धैवत शुद्ध है। अवरोह में धैवत कोमल तथा अन्य सभी स्वर पूर्वोक्तरीत्या लगते हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का तीसरा प्रहर १२-३

है। इस राग के आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
पकड़ – सा नि़॒ ध़॒ प़ ध़॒ सा रे ग॒ म प म ग॒ रे सा

(५) जोगी भैरवी – इस राग का थाट खमाज है। इसका वादी स्वर मध्यम संवादी षड्ज है। इसमें दोनों निषाद तथा शेष सभी स्वर शुद्ध रहते हैं। यह वक्र चलन वाला सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन एवं वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर अर्थात् दिन में ९-१२ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि ध प म नि॒ ध म ग रे म ग सा
पकड़ – सा ग रे म प ध नि ध प म नि॒ ध प म ग रे म ग सा

(६) जोग भैरवी – यह राग आसावरी थाट से उत्पन्न होता है इसका वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है। इसमें गान्धार धैवत तथा निषाद कोमल शेष स्वर शुद्ध है। आरोह में निषाद तथा अवरोह में मध्यम एवं गान्धार वर्ज्य स्वर है। अतः इसकी जाति षाडव औडव है। इसके गायन एवं वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इस राग के आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प रे सा
पकड़ – ध़॒ सा रे ग॒ म प नि॒ ध॒ प रे सा

(७) चन्द्रिका भैरवी – यह भी भैरवी राग का एक प्रकार है। इसका थाट आसावरी है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। पञ्चम वर्ज्य होने से यह षाडव जाति का राग है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है–

आरोह – सा ग॒ रे ग॒ म ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म ग॒ रे सा
पकड़ – सा ग॒ रे ग॒ म नि॒ ध॒ म ग॒ रे सा

इसमें चन्दिका और भैरवी दोनों रागों का प्रयोग दृष्टिगोचर होने से दोनों की सन्धि वाला यह राग कहा जाता है। इसका गायन एवं वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है।

(८) सिन्धु भैरवी – इस भैरवी राग का थाट आसावरी है। गायन एवं वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर ९-१२ है। वादी स्वर मध्यम संवादी स्वर षड्ज है। इसमें ग ध नि कोमल शेष स्वर शुद्ध है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ – सा रे ग रे ग म ध नि ध प म ग रे सा

(९) नटभैरवी – इस राग का भी थाट आसावरी है। गायन एवं वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर प्रातः ६-९ है। वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गान्धार है। इसमें ऋषभ निषाद कोमल तथा दोनों धैवत और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वर्ज्य स्वर कोई न होने से सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ – सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे ग रे सा

(१०) सोमभैरवी – यह दक्षिण भारतीय पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) रूपवती है। वादी स्वर म तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसमें ऋषभ, गान्धार कोमल, तीव्र धैवत तथा शुद्ध मध्यम प्रयुक्त होते हैं। आरोह में धैवत तथा निषाद के वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प सां
अवरोह – सां नि प ध॑ नि प म ग रे सा
पकड़ – सा रे ग म प ध॑ नि प म ग रे ग रे सा

(११) सुरभैरवी – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) हरिकाम्भोजी है जो उत्तर भारतीय खमाज थाट के समान है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। इसमें सभी स्वर शुद्ध तथा नि कोमल है। इसके आरोह ग वर्जित है अवरोह मे रे ग को छोड़कर स्वर लगते हैं। अतः इसकी जाति षाडव-औडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे प म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे प म प ध नि॒ ध प म सा

(१२) सिंहमेल भैरवी – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) गौरी मनोहारी है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। इसमें ग॒ कोमल तथा सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे नि के वर्ज्य होने से तथा अवरोह में प के वर्ज्य होने से यह औडव-षाडव जाति का राग है। इसका गायन-वादन समय प्रातःकाल है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग॒ म प ध सां
अवरोह – सां नि ध म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प नि ध म ग॒ रे सा

(१३) सालगभैरवी – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) खरहर प्रिय है जो उत्तर भारतीय काफी थाट के समान है। इसका वादी स्वर मध्यम संवादी षड्ज है। ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष शुद्ध स्वर हैं। आरोह ग नि वर्ज्य हैं। अवरोह सभी स्वर प्रयुक्त होते हैं। अतः यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन तथा वादन का समय प्रातःकाल है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध नि॒ ध प म प म ग॒ रे सा

(१४) पूर्वभैरवी – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) नट भैरवी है जो उत्तर भारतीय आसावरी थाट के समान है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में पञ्चम वर्ज्य है, अवरोह सभी स्वर प्रयुक्त हैं। इसलिये यह षाडव-सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म नि॒ ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म नि॒ ध॒ प म ग॒ रे ग॒ म नि॒ ध॒ प म ग॒

(१५) जिंग्लाभैरवी – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) रागवर्धनी है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसमें षट्श्रुति रे (कोमल ग के समान) ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग नि वर्ज्य है अवरोह में सभी स्वर लगते हैं। इसलिये यह औडव सम्पूर्ण जाति का है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल

है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प म ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग म रें सा (उत्तर भारतीय पद्धति में म ग सा)
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प म ध नि ध प म ग म रें सा (उत्तर भारतीय पद्धति में म ग सा)

(१६) वसन्तभैरवी – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) बकुला भरण है। वादी स्वर मध्यम संवादी स्वर षड्ज है। इसमें रे कोमल, मं तीव्र ध नि कोमल हैं। शेष शुद्ध स्वर हैं। आरोह में ग वर्ज्य है, अवरोह में सभी स्वर लगते है। अतः यह षाडव सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं ध नि सां
अवरोह – सां नि ध मं प मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग मं ध नि ध मं प म ग रे

## राग वराटी

रिधौ तु कोमलौ ज्ञेयौ मस्तु तीव्रतरो मतः ।
वराटी बहुधा शास्त्रे साद्या गायनकोविदैः ।।३।।

सरगम – स ध ध ध नी सा रे ग म प म म ग रे स नी ध नी सा ध प म
प म म ग रे ग ग रे ग रे नी ध ध नी स स नी स नी स नी स ध प म प
म प म म म प म ग ग रे ग ग ग रे रे स नी स स ।।३।।

मूलार्थ

राग वराटी में रे ध कोमल तथा मँ तीव्रतर प्रयुक्त होता है। गायनशास्त्र को जानने वाले राग वराटी को विशेष रूप में षड्ज आदि स्वर वाला राग मानते हैं। वराटी का सरगम इस प्रकार है –

सा ध़ ध़ ध़ ऩी सा रे ग ग मँ मँ मँ ग रे सा ऩी ध़ ऩी सा ध प मँ प मँ मँ
ग रे ग ग रे ग रे नी ध ध नी सां सां नी सां नी सां ध प मँ प मँ प मँ मँ
प मँ ग ग रे ग ग ग रे रे सा ऩी सा सा

विवृति

वराटी राग आजकल भी उसी नाम से जाना जाता है किन्तु स्वरूप में भिन्नता है। ग्रन्थस्थ का वादी स्वर षड्ज है किन्तु आधुनिक वराटी का वादी स्वर गान्धार संवादी धैवत है, थाट मारवा है। इसमें मध्यम तीव्र तथा ऋषभ कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वादन-गायन का समय सायंकाल है आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे॒ ग म॑ प ध नि ध प ध सां
अवरोह – सां नि ध प ग ग रे॒ सा
पकड़ – ग रे॒ ग रे॒ सा प प नि ध प म॑ ग रे॒ सा प ध प सा सां रे॒ सां

इसकी चलन उत्तरांग में ज्यादा होने से उत्तरा प्रधान राग होगा। इस प्रकार ग्रन्थस्थ वराटी और आधुनिक वराटी में पर्याप्त अन्तर है। ग्रन्थस्थ वराटी राग के आरोह, अवरोह तथा पकड़ का स्वरूप इस प्रकार हो सकता है –

आरोह – नि़ सा रे॒ ग म॑ प ग ग रे॒ नि ध॒ नि सां
अवरोह – नि सां ध॒ प म प म ग रे॒ सा नि़ सा
पकड़ – सां नि ध॒ नि सां रे॒ ग म॑ प म॑ ग रे॒ नि सां

## राग सैन्धवी

स्वराद्या सैन्धवी प्रोक्ता निगधाः यत्र कोमलाः ।।४।।

सरगम – स रे ग म ग रे स नी स नी ध प ध प नी ध ध नी स रे ग म
प ध नी स नी ध प म ग रे स रे स स नी स नी ध नी ध प ध प ध नी
स स ।।४।।

मूलार्थ

सैन्धवी – इस राग में नी॒ ग॒ ध॒ कोमल है, आदि स्वर षड्ज है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा रे ग॒ म ग॒ रे सा नी़॒ सा नी़॒ ध़॒ प़ ध़॒ प़ नी॒ ध़॒ ध़॒ नी॒ सां रे ग॒ म प ध॒ नी॒
सां नी॒ ध॒ प म ग॒ रे सा रे सा सा नी़॒ सा नी़॒ प़ नी़॒ ध़॒ प़ ध़॒ नी़॒ सा सा

विवृत्ति

सैन्धवी राग आधुनिक समय में राग सिन्दूरा के नाम से जाना जाता है। इसका भी आदि स्वर षड्ज है। संवादी स्वर पञ्चम है। इसमें भी ग॒ नी॒ कोमल है किन्तु धैवत शुद्ध है। ग्रन्थस्थ सैन्धवी राग सम्पूर्ण जाति का है किन्तु आधुनिक सैन्धवी में आरोह में गान्धार तथा निषाद वर्ज्य होने से यह औडव-सम्पूर्ण जाति का राग माना गया है। इसका गायन-वादन का समय सायंकाल है इसके आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां रें नि॒ ध प म ग॒ रे म ग॒ रे सा
पकड़ – म प नि॒ सां रें गं॒ रें सां नि॒ ध म प ग॒ रे म ग॒ रे सा

इस आधुनिक सैन्धवी राग का थाट काफी है। जबकि ग॒ ध॒ नि॒ तीनों के कोमल होने से ग्रन्थस्थ राग को आसावरी थाट के अन्दर रखा जा सकता है। इस प्रकार नाम तथा स्वर में प्रभेद है, स्वयं में भी अन्तर है किन्तु वादी स्वर दोनों के एक हैं; चलन में भी कुछ अन्तर है। ग्रन्थस्थ राग में सभी स्वर है किन्तु आधुनिक में आरोह में ग नि वर्ज्य हैं। इस प्रकार दोनों में पर्याप्त अन्तर है।

ग्रन्थस्थ सैन्धवी राग के आरोह, अवरोह तथा पकड़ का स्वरूप इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म ग॒ रे सा नि़ सा नि॒ ध॒ प नि॒ ध॒ नि॒ सां

इस राग के प्रकारों में इससे समानता रखता हुआ राग सिन्धवी है। कर्नाटक पद्धति के रागों में भी सैन्धवी तथा छाया सैन्धवी राग का उल्लेख है। इन तीनों का स्वरूप इस प्रकार है –

सिन्धवी – यह राग काफी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज है। इसमें ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध। आरोह-अवरोह सभी स्वरों का प्रयोग होने से यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ ध़ नि़ सा रे ग॒ म प ध नि॒
अवरोह – नि॒ ध प म ग रे सा नि़ ध़ नि़
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ ध़ नि़ सा रे ग॒ म ग॒ रे सा नि़ ध़ नि़ सा

सैन्धवी – उत्तरीय पद्धति के समान दक्षिणात्य पद्धति का यह राग है। इसका थाट (मेल) खरहरप्रिय है। आरोह में पञ्चम वर्ज्य है। अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग है। अतः यह षाडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका चलन मन्द्र सप्तम तथा मध्य सप्तम के पञ्चम तक है। गायन-वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ ध नि़ सा रे ग म
अवरोह – प म ग रे सा नि़ ध़ नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि़ ध़ नि़ सा रे ग म

छाया सैन्धवी – यह भी कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) कोकिल प्रिय है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पञ्चम है। इसमें रे ग कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। सभी स्वरों का प्रयोग होने से इसकी जाति सम्पूर्ण है। परन्तु आरोह-अवरोह में धैवत का प्रयोग वक्र है। इसका गायन-वादन का समय सायंकाल है।

आरोह – सा रे ग म प ध प नि सां
अवरोह – सां ध नि प म ग रे सां
मुख्य स्वर समुदाय – प ध प नि सां ध नि प म ग रे

## राग मध्यमादि

मध्यमादिर्मध्यमाद्या निगौ यत्र च कोमलौ ॥५॥

सरगम – ग नी नी प म रे रे रे म म म प प नी नी सा सा नी प सा नी
नी प म रे रे रे सा रे रे म रे सा सा रे सा सा नी प म म म रे रे रे नी सा
रे म म रे सा सा ॥५॥

मूलार्थ

मध्यमादि राग का आदि स्वर मध्यम है। इसमें नि और ग कोमल लगते हैं। इसका सरगम इस प्रकार का है –

ग नी नी प म रे रे रे म म म प प नी नी सां सां नी प सां नी प म रे रे
रे सा रे रे म रे सा सा रे सा सा नी प म म म रे रे रे नी़ सा रे म म रे सा
सा

विवृति

मध्यमादि राग का जो स्वरूप ग्रन्थ में बतलाया गया उसका वह स्वरूप सरगम में पूरी तरह से खरा नहीं उतरता। प्रथम इसमें नि॒ ग॒ दोनों को कोमल कहा गया है। किन्तु ग स्वर का सरगम में प्रयोग नहीं है। किसी भी स्वर की वर्जना लक्षण में नहीं है पर सरगम में ग ध पूर्ण वर्ज्य हैं। सरगम के आधार पर लक्षण का स्वरूप "मध्यमादिर्मध्यमाद्या धगवर्ज्या निकोमला" इस प्रकार होना चाहिये परन्तु ग्रन्थकार ने सम्भवतः पूर्व प्रचलन के आधार पर ऐसा लक्षण किया हो। सम्प्रति इसके समान राग मध्यमाद सारंग है जिसका स्वरूप इस प्रकार है –

मध्यमाद सारंग – इसका थाट काफी जाति औडव तथा वर्ज्य स्वर ध ग है। नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध है। वादी स्वर ऋषभ संवादी पञ्चम है। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर ९-१२ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सां रे म प नि॒ सां<br>
अवरोह – सां नि॒ प म रे सा<br>
पकड़ – सा रे नि़॒ सा रे म रे म प नि॒ प म रे नि़॒ सा

इस प्रकार चलन में अन्तर न होते हुये खाली वादी स्वर ही दोनों में अन्तर है।

## राग बंगालिका

सम्पूर्णा मस्वराद्या तु कल्लिनाथेन कीर्त्तिता ।<br>
बंगालिका स्वराद्यान्यैर्गधौ कोमलसंज्ञकौ ।।६।।

सरगम – स स रे म म प ध ध प म प प ध ध प प म ध ध प म ग रे स, स नी रे रे स नी ध प प म ध ध प म ग रे स ।।६।।

मूलार्थ

बंगालिका राग का आदि स्वर मध्यम है, ऐसा कल्लिनाथ कहते हैं। कुछ लोग षड्ज को आदि स्वर मानते हैं। गान्धार और धैवत स्वर कोमल रहते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा सा रे म म प ध॒ ध॒ प म प प ध॒ ध॒ प प म ध॒ ध॒ प म ग॒ रे सा, सा ऩी रे रे सा, नी ध॒ प प म ध॒ ध॒ प म ग॒ रे सा

विवृति

इसके वादी स्वर के विषय में दो मत हुये। एक कल्लिनाथ का दूसरा अन्य किसी का। कल्लिनाथ मध्यम स्वर को वादी कहता है। अन्य लोग षड्ज को वादी स्वर कहते हैं स्वराद्या से तात्पर्य षड्ज से है। सरगम में प्रयुक्त आदि स्वर षड्ज ही माना गया है। सम्प्रति बंगालिका राग का स्वरूप इस प्रकार है –

बंगालिका – एक कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका सम्प्रति नाम बंगाल है। इसका थाट हरि काम्भोजी है। आरोह में ध नि तथा अवरोह में ध वर्जित होने से औडव-षाडव राग की जाति है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज ही कहा जा सकता है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार होगा –

आरोह – सा रे ग म प म रे प सां
अवरोह – सां नि_ प म रे ग रे सा
पकड़ – सा रे ग म प म रे ग रे सा
गायन का समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर

हरि काम्भोजी थाट उत्तर भारतीय दश थाटों में खमाज के लगभग पड़ता है। इस प्रकार इसका केवल नी_ स्वर कोमल होता है। किन्तु ग्रन्थकार ने ग_ ध_ कोमल माना है, जिसके आधार पर इसका आसावरी थाट बैठता है। शेष अन्य विवेचन में इस आधार पर इनका साम्य ही बैठता है।

बंगालिका राग के अन्य जो प्रकार दक्षिण भारत में प्राप्त होते हैं, वे भेद हैं – गौरी बंगाल, कल्लोल बंगाल, देशिका बंगाल, नवरस बंगाल, मेच बंगाल और सालवि बंगाल। उत्तर भारत संगीत में इनका उल्लेख लगभग न के बराबर है। इनका परिचय क्रमशः इस प्रकार है –

(१) गौरी बंगाल – यह धेनुका थाट (मेल) से उत्पन्न है। इसके आरोह में ग तथा अवरोह नि वर्ज्य हैं। इसका चलन मध्य सप्तम के निषाद तक तथा मन्द्र सप्तम में है। रे_ ग_ ध_ कोमल, शुद्ध मध्यम का प्रयोग हुआ है। इसकी जाति षाडव है। वादी स्वर षड्ज संवादी पञ्चम है तथा गायन समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ध़_ सा रे_ म प ध_ नि
अवरोह – ध_ प म ग_ रे_ सा ऩि ध़_ प़
मुख्य स्वर समुदाय – ध़_ सा रे_ म प ध_ प म ग_ रे_ सा ऩि ध़_ प़

(२) कुल्लोल बंगाल – इस राग का योगप्रिय थाट (मेल) है। वादी षड्ज तथा संवादी पञ्चम है। इसमें तीव्र रे (लगभग कोमल ग॒) ध॒ कोमल, नी॒॒ अतिकोमल तीव्र मध्यम का प्रयोग हुआ है। आरोह में ग के वर्ज्य होने से यह षाडव सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय सायं काल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॑ म॑ प नि॒॒ ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒॒ प ध॒ म॑ ग रे॑ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॑ म॑ प नि॒॒ प ध॒ म॑ ग रे

(३) देशिका बंगाल – इसका थाट (मेल) हनुमत्तोड़ी है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी स्वर पञ्चम है। रे॒ ग॒ नि॒ कोमल शेष शुद्ध स्वर हैं। अवरोह में निषाद के वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण षाडव जाति का राग है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प म ध नि॒ सां
अवरोह – सां ध प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ प म ध नि॒ सां ध प म ग॒ रे॒

(४) नवरस बंगाल – इसका थाट (मेल) सुवर्णाङ्गी है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी मध्यम है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग हुआ है। अवरोह में प रे वर्ज्य होने से सम्पूर्ण औडव जाति का यह राग है। गायन-वादन समय तथा इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म॑ ध प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म॑ ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म॑ नि ध म॑ ग॒ सा
गायन का समय – प्रातःकाल

(५) मेच बंगाल – इसका भवप्रिय मेल है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी स्वर मध्यम है। आरोह में धैवत तथा अवरोह में निषाद के वर्ज्य होने से षाडव जाति का है। गायन-वादन समय प्रातःकाल है। इस राग में रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल एवं तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म॑ प नि॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – रे̱ ग म॑ प नि̱ सां ध̱ प म ग̱ रे̱

(६) सालवि बंगाल – इसका थाट (मेल) गौरी मनोहारी है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पञ्चम है। आरोह ग नि तथा अवरोह में ग वर्ज्य होने से यह औडव-षाडव जाति का राग है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ध नि ध प म रे

## राग मालकोश

मालकोशः स्वराद्यः स्याद् रिधौ कोमलसम्मतौ ।
पञ्चमेन विहीनोऽयं वार्षभस्वरवर्जितः ।।
उभाभ्यां वर्जितः कैश्चित् कथितो रागवित्तमैः ।
षाडवौडवसम्पूर्णभेदेन त्रिविधोऽथवा ।।७।।

सरगम – स स नी ध ध म ग म ध ध नी स, नी ध ध म ग ग स स स
नी स स नी नी ध नी नी स ग म ध ध ध ध ग ग स ग ग ग म ध ध नी
स ग ग ग ग नी नी नी ध ध ग ग स ।।७।।

मूलार्थ

मालकोश का आदि स्वर षड्ज है। इसमें ऋषभ तथा धैवत कोमल माने गये हैं। यह सभी स्वर लगने से सम्पूर्ण जाति का, पञ्चम से विहीन होने अथवा ऋषभ से विहीन होने पर षाडव जाति का, दोनों से विहीन होने पर औडव जाति का। इस प्रकार श्रेष्ठ रागवेत्ताओं के द्वारा तीन प्रकार का कहा गया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा सा नी ध̱ ध̱ म ग म ध̱ ध̱ नी सां नी ध̱ ध̱ म ग ग सा सा सा ऩी सा
सा ऩी ऩी ध़̱ ऩी ऩी सा ग म ध̱ ध̱ ध̱ ध̱ ग ग सा ग ग ग म ध̱ ध̱ नी सां
ग ग ग ग नी नी नी ध̱ ध̱ ग ग सा

विवृत्ति

सम्प्रति जो मालकौंश राग प्रसिद्ध है उसका म वादी तथा स संवादी है। ग ध नि स्वर

कोमल तथा पञ्चम ऋषभ वर्ज्य होने से औडव जाति का राग माना गया है। जैसा कि ग्रन्थकार ने भी रे प विवर्जित एक प्रकार में माना है किन्तु गान्धार और निषाद उसके मत में कोमल नहीं, शुद्ध हैं अतः अन्तर बना हुआ है। सरगम का स्वरूप औडव जाति का है। इससे लगता है कि ग्रन्थकार को औडव स्वरूप ही मान्य है किन्तु गान्धार और निषाद को शुद्ध करना उचित नहीं मालूम हो रहा। उस आधार पर "ग ध नी कोमलाः मताः" ऐसा होना चाहिये। हो सकता है ग्रन्थकार के समय मालकोश का ऐसा स्वरूप प्रचार में रहा हो। इसीलिये उन्होंने इस स्वरूप को यहाँ लक्षित किया।

राग मालकोश को मालकौंश शब्द से भी कहा जाता है। अत: सामान्य रूप से उसी का व्यवहार सम्प्रति पुस्तकों में देखा जाता हैं। इसमें 'स' तथा 'श' दोनों का प्रयोग करते हैं। हमने 'स' का प्रयोग करने का विचार किया है।

इस समय मालकौंस के साथ अनेक कौंस अंग के राग प्रचलन में हैं जिनमें कुछ का विवरण इस प्रकार है –

| | |
|---|---|
| (१) मालकौंस | (५) नंदकौंस |
| (२) चन्द्रकौंस | (६) मोहनकौंस |
| (३) मधुकौंस | (७) जयकौंस |
| (४) जोग कौंस | (८) गुणकौंस |

(१) मालकौंस – इस राग का थाट भैरवी है। इसके वादी एवं संवादी क्रमशः मध्यम एवं षड्ज हैं। इसमें ग्रन्धार धैवत तथा निषाद कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। ऋषभ तथा पञ्चम के वर्ज्य होने से यह औडव जाति का राग माना जाता है। इसका गायन एवं वादन का समय रात्रि का तीसरा प्रहर १२-३ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा ग॒ म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा
पकड़ – सा म ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ सा

(२) चन्द्रकौंस – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर गान्धार संवादी स्वर निषाद है। गायन एवं वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर १२-३ है। इसमें गान्धार तथा धैवत कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसमें ऋषभ तथा पञ्चम पूर्णतया वर्ज्य है। इस राग के आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग॒ म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ म ग॒ सा
पकड़ – नि़ ध़॒ नि़ सा ग॒ म ध॒ नि ध॒ म ग॒ म ग॒ सा

कुछ लोग इस राग में ध को शुद्ध तथा नि को कोमल मानते हैं।

(३) मधुकौंस – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर पञ्चम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसमें निषाद गान्धार कोमल तथा मध्यम तीव्र शेष स्वर शुद्ध है। ऋषभ एवं धैवत पूर्णतया वर्ज्य होने से यह राग औडव जाति का राग है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर १२-३ है। इस राग के आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – नि़॒ सा ग॒ म॑ प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प म॑ ग सा
पकड़ – नि़॒ सा ग॒ म॑ प नि॒ प म॑ प ग॒ म॑ ग॒ सा

(४) जोंगकौंस – इस राग का थाट भैरवी है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसमें ध॒ नि॒ कोमल तथा गान्धार दोनों लगता है। ऋषभ और पञ्चम वर्ज्य होने से औडव जाति का राग है। इसके गायन एवं वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर ९-१२ है। जैसा कि नाम से ही लग रहा है इसमें राग जोग और माल कोश दोनों मिश्रित हैं। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म ग म ग॒ सा
पकड़ – सा ग म ध॒ नि॒ ध॒ म ग म ग॒ सा

(५) नंदकौंस – यह राग कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट सरसांगी है। मध्यम वादी तथा षड्ज संवादी है। इसमें धैवत कोमल तथा गान्धार दोनों लगते हैं। आरोह में ऋषभ पञ्चम तथा अवरोह में पञ्चम वर्ज्य होने से यह औडव-षाडव जाति का राग है। गायन एवं वादन का समय रात्रि का तीसरा प्रहर १२-३ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग म ग॒ सा
पकड़ – सा ग म प म ध॒ प म ग म ग॒ सा

(६) मोहनकौंस – यह राग भी कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका पूर्णतया उत्तर-

भारतीयकरण यद्यपि हो गया है फिर भी अप्रचलित रूप में ही है। इसका थाट चारुकेशी है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसमें धैवत निषाद कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। गायन एवं वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर १२-३ है। इस राग के आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग म ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म ग म ग सा
पकड़ – सा रे ग म ध॒ नि॒ ध॒ म ग म ग सा

इस राग के आरोह में पञ्चम तथा अवरोह में ऋषभ पञ्चम दोनों के न लगने से यह राग षाडव-औडव जाति का माना जाता है।

(७) जयकौंस – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। दोनों मध्यम तथा कोमल ग एवं शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह तथा अवरोह में रे प वर्ज्य होने से यह औडव जाति का राग माना जाता है। गायन एवं वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर ९-१२ है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा ग॒ म म॑ म ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म॑ म म ग॒ सा
पकड़ – नि़ सा ग॒ म म॑ म ग॒ म ग॒ सा

(८) गुणकौंस – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसमें दोनों मध्यम तथा कोमल गान्धार और धैवत तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह रे प वर्ज्य होने से और अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा ग॒ म नि ध॒ नि सां
अवरोह – नि ध॒ प म प ग॒ म ग॒ रे सा नि़ ध़ नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ सा ग॒ नि ध॒ प म प ग॒ म ग॒ रे सा नि़ ध़ नि़ सा

## राग रोडिका

धैवतर्षभगान्धारा कोमला रोडिका मता ।
तीव्रमध्यमसंयुक्ता कैश्चिदुक्ता विचक्षणैः ।।
शुद्धस्वरा कैश्चिदुक्ता एवं बहुविधा मता ।।८।।

सरगम – म ग रे स नी स रे ग ग म म प प ध प म ग रे स ग ग ग म म प ध नी स स नी ध म ध नी स रे स स ग रे स स नी ध प म म ग रे ग नी नी ध म ग रे स ॥८॥

### मूलार्थ

रोडिका राग में धैवत ऋषभ तथा गान्धार कोमल है। मध्यम किसी के मत में तीव्र तथा किसी के मत में शुद्ध लगता है। इस प्रकार मध्यम के भेद से दो प्रकार का माना जा सकता है। इसकी सरगम इस प्रकार है जो मध्यम को तीव्र मानकर दी जा रही है –

मं ग रे सा ऩी सा रे ग ग मं मं प प ध प मं ग रे सा ग ग ग मं मं प ध नी सां सां नी ध मं ध नी सां रें सां सां गं रें सां सां नी ध प मं मं ग रे ग नी नी ध मं ग रे सा

### विवृति

इस राग के विवेचन में आदि स्वर (वादी) का कथन नहीं है। किन्तु सरगम का प्रारम्भ मध्यम से है। अतः मध्यम को वादी स्वर माना जा सकता है। आधुनिक समय रोडिका नाम का कोई राग न तो प्रचलन में है न आधुनिक राग सम्बन्धी ग्रन्थों में ही उपलब्ध होता है। यदि इस राग को इस समय गाया बजाया जाय तो इसका पूर्ण परिचय इस प्रकार बनेगा। चूँकि इसका वादी स्वर मध्यम है और वह भी तीव्र हैं। इसलिए संवादी स्वर षड्ज होगा वादन समय प्रातःकाल होगा। चलन तो इसके सरगम से स्पष्ट है। सरगम के आधार पर आरोह एवं अवरोह इस प्रकार बनेगा –

आरोह – सा रे ग मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग रे नि ध मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि सा रे ग ग मं प ध प मं ग रे सा

## राग खम्भावती

खम्भावती धादिमा स्यान्निषादस्वरकोमला ॥९॥

सरगम – ध नी स नी स स स स नी स स रे रे रे स स नी ध ध प स स नी ध प ग ग म म प स नी ध प म ग ग म ग ग रे स स रे रे नी स स ग म प ध ध नी स ध नी ध रे स स नी ध ग ग म म म प स नी ध प म ग ग ॥९॥

मूलार्थ

खम्भावती राग का आदि स्वर धैवत है। इसमें निषाद स्वर कोमल एवं शेष स्वर शुद्ध है। कोई भी स्वर वर्ज्य नहीं है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ध नी सां नी सां सां सां सां नी सां सां रें रें रें सां सां नी ध ध प सां सां नी
ध प ग ग म म प सां नी ध प म ग ग म ग ग रे सा सा रे रे नी सा सा
ग म प ध ध नी सां ध नी ध रें सां सां नी ध ग ग म म म प सं नी ध प
म ग ग

विवृति

खम्भावती राग का स्वरूप लगभग पूरा बताया गया है। आधुनिक खम्भावती तथा ग्रन्थस्थ खम्भावती में कुछ साम्य तथा कुछ भेद है। नाम तथा निषाद स्वर का कोमल होना एवं शेष स्वरों का शुद्ध होना, दोनों में समानता है किन्तु इसका आदि स्वर ग्रन्थ में धैवत है जबकि आधुनिक वादी स्वर गान्धार संवादी स्वर धैवत है। तथा ग्रन्थस्थ राग सम्पूर्ण जाति का है। आधुनिक खम्भावती षाडव है। क्योंकि आरोह में गान्धार तथा अवरोह में ऋषभ वर्ज्य है। निषाद का प्रयोग वक्र रहता है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध ध नि प ध सां
अवरोह – सां नि ध प ध म प ग म सा
पकड़ – रे म प ध ध नि प ध म प ग म सा

ग्रन्थस्थ खम्बावती का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे सा रे ग म प ध नि ध रें सां
अवरोह – सां नि ध प म ग नि ध रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध नि सां नि ध रें सां नि ध ध प

## राग गौरी

गौरी तु सादिमा प्रोक्ता धैवतर्षभकोमला ।
मतीव्रतरसंयुक्ता गांधारस्वरवर्जिता ॥
सम्पूर्णा षाडवा चैव गायनज्ञैर्निरूपिता ॥१०॥

सरगम – स रे रे स रे नी स रे ग ग रे स स नी ध नी नी स स नी स स
ग म ध नी रे रे स नी नी ध ध ग नी नी नी नी स स रे ग रे स नी ग ग
रे स नी नी नी नी स स ॥१०॥

मूलार्थ

गौरी राग में आदि स्वर षड्ज है। धैवत ऋषभ कोमल तथा मध्यम तीव्रतर है। इसमें किसी के मत में गान्धार स्वर नहीं लगता। इस प्रकार गायन को जानने वाले इसे सम्पूर्ण तथा षाडव दो रूपों में निरूपित करते हैं। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा रे॒ रे॒ सा रे॒ नी़ सा रे॒ ग ग रे॒ सा सा नी़ ध़ नी़ नी़ सा सा नी़ सा सा ग म
ध॒ नी रें॒ रें॒ सां नी नी ध॒ ध॒ ग नी नी नी नी सां सां रें॒ गं रें॒ सां नी ग ग रे॒
सा नी़ नी़ नी़ नी़ सा सा

विवृति

इस राग का पूर्ण विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है। आधुनिक गौरी राग दो रूपों में प्रसिद्ध है। प्रथम भैरव थाट का, दूसरी पूर्वी थाट का। दोनों में आरोह में ग ध वर्जित होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग बनता है। भैरव थाट के गौरी राग में रे ध कोमल शेष स्वर शुद्ध तथा पूर्वी थाट के गौरी राग में रे ध कोमल और दोनों मध्यम लगते हैं। दोनों में वादी संवादी ऋषभ पञ्चम हैं। गायन-वादन का समय सायंकाल है। दोनों के आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार हैं –

भैरव थाट का गौरी राग

आरोह – सा रे॒ म प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
पकड़ – सा रे॒ म प नि ध॒ प म ग रे॒ सा

पूर्वी थाट का गौरी राग

आरोह – सा रे॒ प म॑ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म प म रे॒ म॑ म॑ ग रे॒ सा
पकड़ – सा रे॒ प म नि ध॒ प म प ग रे॒ म॑ म॑ ग रे॒ सा

गौरी राग के अन्य प्रकार बहुत कम हैं। किन्तु जो कुछ प्राप्त है उनका विवरण इस प्रकार है –

(१) ललिता गौरी
(२) मालीगौरी
(३) मारुवगौरी
(४) छाया गौरी

(१) ललिता गौरी – इस राग का थाट पूर्वी है। ललित तथा गौरी राग के सम्मिश्रण से यह राग बना है। वादी स्वर मध्यम संवादी स्वर षड्ज है। कोमल ऋषभ दोनों धैवत तथा मध्यम लगते हैं। इसमें कोई स्वर वर्ज्य न होने से यह सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं म म ग प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प ध मं म ग मं रे सा
पकड़ – सा नि़ रे ग म मं म ग मं प म ग रे ग रे सा

(२) मालीगौरी – इस राग का थाट मारवा है। ऋषभ वादी तथा पञ्चम संवादी है। ऋषभ कोमल मध्यम तीव्र तथा दोनों धैवत का प्रयोग इसमें होता है। गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसमें राग मालवी एवं गौरी का सम्मिश्रण है। इसी से यह माली गौरा के रूप में ख्यात है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं प ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प मं नि ध मं ग रे सा
पकड़ – सा रे ग मं प ध नि ध प मं नि ध मं ग रे सा

(३) मारुवगौरी – यह षड्विधमार्गिणी थाट (मेल) जन्य कर्नाटक पद्धति का राग है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसका चलन मन्द्र तथा मध्य सप्तक में है। रे ग ध कोमल तीव्र मध्यम नि शुद्ध स्वर प्रयुक्त होते हैं। आरोह में सभी स्वर लगते हैं पर अवरोह में 'नि' स्वर वर्जित है। अतः यह राग सम्पूर्ण षाडव जाति का है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे ग मं प ध नि सां
अवरोह – सां ध मं प मं ग रे सा नि़
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे ग मं प ध मं प म ग रे सा नि़

(४) छाया गौरी – यह सेनावती थाट (मेल) जन्य कर्नाटक पद्धति का राग है। मध्यम

वादी षड्ज संवादी स्वर इसमें माने जाते हैं। रे ग कोमल, शुद्ध मध्यम, अति कोमल नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त हुए हैं। इसका चलन वक्र है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म ग म प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ग म प नि ध ध प म ग म रे सा

कर्नाटक पद्धति में ललित गौरी राग का भी कथन मायामालव गौड़ मेल (थाट) में है जिसके आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि सां ध प ग रे
थाट (मेल) – मायामालव गौड़
जाति – सम्पूर्ण-औडव

## राग गुणक्रिया

ज्ञेया गुणक्रिया न्याद्या धैवतर्षभकोमला ॥११॥

सरगम – नी ध स ध प म प म प प म म रे स स ध ध ध ध प म प प
म म रे स स रे ग ग रे स ध रे स ध ध रे स स स स ध ध स स स स
म रे स स स रे स ॥११॥

मूलार्थ

गुणक्रिया राग में आदि स्वर निषाद है। इसमें धैवत तथा ऋषभ कोमल लगते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

नी ध सां ध प म प म प प म म रे सा, सां ध ध ध ध प म प प म म
रे सा, सा रे ग ग रे सा ध़ रे़ सा ध़ रे़ सा सा सा ध़ ध़ सा सा सा सा म
रे सा सा सा रे सा

विवृति

आधुनिक सामय में गुणक्रिया राग अपने इस नाम से तो प्रसिद्ध नहीं है पर गुणकरी तथा गुण कली इन दो नामों से प्रसिद्ध है। ये दोनों राग भी भिन्न हैं। इनका विवेचन इस प्रकार है –

(१) गुणकरी

इसका थाट भैरव, जाति औडव है। इसमें वादी स्वर धैवत तथा संवादी गान्धार है। ऋषभ तथा धैवत दोनों कोमल रहते हैं। निषाद तथा गान्धार स्वर पूर्ण वर्जित हैं। गायन एवं वादन समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प ध॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प म रे॒ सा
पकड़ – सा ध़॒ प़ ध़॒ ध़॒ सा रे म प ध॒ प म रे॒ सा

(२) गुणकली – इसका थाट बिलावल हैं, वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पञ्चम है। इसमें सभी स्वर शुद्ध तथा सभी स्वर लगते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका गायन एवं वादन का समय प्रातः काल ही है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ – सा रे ग म प ध प नि ध प म ग रे सा

इस प्रकार गुणकरी तथा गुणकली नाम से दो राग प्राप्त हो रहे हैं कहीं-कहीं गुणकरी ही गुणकली के नाम से लिखित है तथा प्रसिद्धि भी इसी की है। बिलावल थाट के सम्पूर्ण जाति के गुणकली का गायन-वादन अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में यदि गान्धार के प्रयोग को छोड़ दिया जाय तो दोनों गुणक्रिया तथा गुणकरी के स्वर काफी मिलते हैं। ग्रन्थ में यद्यपि नी स्वर आदि स्वर है पर उसका प्रयोग अल्प है, ऐसा सरगम से प्रतीत होता है। गान्धार स्वर भी अवरोह में न्यून दृष्ट है। इससे लगता है कि कालान्तर में अन्य रागों की छाया अधिक आने से निषाद तथा गान्धार को वर्जित कर दिया गया। किन्तु आधुनिक गुणकरी में भी विवादी स्वर के रूप में गान्धार का कहीं कहीं प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार ग्रन्थोक्त गुणक्रिया का आरोह तथा अवरोह इस प्रकार समझना चाहिये –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ नि ध॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प म रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म ध॒ प म रे॒ सा ध़॒ ध़॒ सा ध़॒ रे॒ सा

इसमें आरोह में नि का अल्प प्रयोग है तथा अवरोह में नि ग पूर्ण वर्ज्य है।

(३) उत्तरी गुणकली – गुणकली राग का एक प्रकार उत्तरी गुणकली भी है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म प ध नि॒ प म ग॒

थाट भैरवी जाति सम्पूर्ण सा म वादी संवादी तथा समय प्रातःकाल है। इसमें शुद्ध मध्यम तथा रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ का कोमल प्रयोग होता है।

## राग ककुभ

ककुभा धैवताद्या स्यात् सम्पूर्णा सर्वसम्मता ॥१२॥

सरगम – ध प म ग ग ग ग रे स नी नी स ग ग रे स स नी नी नी नी प
प ध ध ध प म प प प प प ध ध नी स स नी नी स ग रे ग रे स रे रे
स नी नी प ध ध प प म ग म प ध प ध ध ध म म ॥१२॥

मूलार्थ

ककुभ राग में धैवत आदि स्वर है। यह राग सम्पूर्ण जाति का है, ऐसा सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ध प म ग ग ग ग रे सा ऩी ऩी सा ग ग ग रे सा सा नी नी नी नी प प ध
ध ध प म प प प प प ध ध नी सां सां नी नी सां गं रें गं रें सां रें रें सां
नी नी प ध ध प प म ग म प ध प ध ध ध म म

विवृति

यह राग आधुनिक समय में लगभग इसी रूप में प्रसिद्ध है। किन्तु इसमें आदि स्वर धैवत है जिससे संवादी ग होता है और आधुनिक ककुभ में मध्यम वादी तथा षड्ज

संवादी है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका थाट बिलावल है। यद्यपि सभी स्वर लगने से सम्पूर्ण जाति का राग है। किन्तु स्वरों का चलन वक्र है। इसका आरोह, अवरोह एवं पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग सा रे म प ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध नि॒ ध म प म ग म रे सा
पकड़ – सा रे ग सा रे म प ध नि ध नि॒ ध प म प म ग म रे सा

अवरोह में निषाद स्वर का दोनों रूपों में प्रयोग होता है।

ग्रन्थस्थ ककुभ का सरगम के आधार पर आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ऩि ऩि सा ग रे ग म प ध प ध नि सां
अवरोह – सां रें सां नि प ध प म ग रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि नि प ध प म ग प म ध ध म ग

## राग हिंडोल

मनी तीव्रौ रिधौ चात्र कोमलौ काकलीयुतः ।
स्वराद्यः स्वरसम्पूर्णो हिंडोलो रिविवर्जितः ।।
पञ्चमेन विहीनो वा चोभाभ्यां सर्वसम्मतः ।
षाडवौडवसम्पूर्णभेदेन त्रिविधो मतः ।।१३।।

सरगम – स ग म ध नी स नी ध नी ध म ग स स ग म ध ध नी स म ग स नी ध नी स नी ध नी ध म ध नी स ध नी ध नी स म ग स ध नी ध म ग स ।।१३।।

मूलार्थ

हिंडोल राग में म और नी तीव्र तथा ऋषभ और धैवत कोमल हैं। आदि स्वर षड्ज काकली से युक्त है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। कुछ लोग ऋषभ वर्जित मानते हैं। कुछ लोग पञ्चम वर्जित स्वीकार करते हैं। प्रायः सभी लोग दोनों स्वरों को वर्जित मानते हैं। इस प्रकार षाडव औडव तथा सम्पूर्ण भेद से यह तीन प्रकार का माना जाता है। इसकी सरगम इस प्रकार है (जोकि औडव मान कर दी गई है) –

सा ग म॑ ध॒ नीं सां नीं ध॒ नीं ध॒ म ग सा सा ग म॑ ध॒ ध॒ नी सां मं गं सां नीं
ध॒ नीं सां नीं ध॒ नीं ध॒ नीं ध॒ म॑ ध॒ नीं सां ध॒ नीं ध॒ नीं सां मं गं सां नीं ध॒
नीं ध॒ म म ग सा

विवृति

भातखण्डे लिपि में केवल म स्वर ही तीव्र तथा शुद्ध रूप में प्राप्त होता है। शेष रे ग ध नी कोमल एवं शुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु इसमें नी को भी तीव्र कहा गया है। अतः म॑ के समान नीं में भी ऊपर एक लाइन लगाकर इस स्वर को प्रदर्शित किया गया है। नी स्वर जिस श्रुति में निर्धारित है उससे ऊपर की श्रुति में तीव्र नी को समझना चाहिये।

आदि स्वर षड्ज काकली से युक्त होना चाहिये। काकली क्या है इस पर यह कहा जा सकता है कि जब गायन-वादन के समय उन सभी स्वरों के प्रयोग में माधुर्य अन्य रागों की अपेक्षा अधिक हो तो उसे "काकली" कहते हैं। काकली का कोषकारों ने अनेक अर्थ किये हैं। किन्तु संगीत में माधुर्य अर्थ ही गृहीत है।

सम्प्रति हिडोल राग का प्रकार इस रूप में प्राप्त होता है –

हिडोल –

इस राग का थाट कल्याण है। धैवत वादी तथा गान्धार संवादी है। म॑ तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। ऋषभ पञ्चम पूर्ण वर्ज्य होने से यह औडव जाति का राग माना जाता है। इसके गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म॑ ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध म॑ ग सा
पकड़ – सा ग म॑ ध नि ध सां नि ध म॑ ग ध म॑ ग ग सा

इसके अन्य प्रकार हैं –

(१) सांझ का हिडोल
(२) मार्ग हिडोल
(३) नाग हिडोल

(१) सांझ का हिडोल – इसका थाट कल्याण है आरोह तथा अवरोह में पञ्चम तथा ऋषभ वर्ज्य होने से यह औडव जाति का राग है। इसका वादी गान्धार तथा संवादी

निषाद है। मध्यम तीव्र रहता है। इसका चलन कुछ वक्र है। गायन तथा वादन समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह और पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग मं ध मं नि मं ध सां
अवरोह – सां नि ध नि ध मं ग सा
पकड़ – सा ग ग मं ध मं नि मं ध सां नि ध नि ध मं ग सा

(२) मार्ग हिडोल – इस राग का थाट मारवा है। जाति औडव सम्पूर्ण है। क्योंकि आरोह में ऋषभ तथा पञ्चम वर्ज्य है। अवरोह में सभी स्वर लगते हैं। इसमें ऋषभ कोमल दोनों गान्धार तथा मध्यम तीव्र हैं। वादी स्वर धैवत तथा संवादी गान्धार है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का चौथा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह और पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा ग मं ध नि ध सां
अवरोह – सां रें नि ध मं ग़ प ग सा
पकड़ – सा ग मं, ध नि ध सां रें नि ध मं ग़ प ग सा

(३) नाग हिडोल – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट गांगेय भूषणी है। इसमें आरोह में ऋषभ धैवत तथा निषाद वर्ज्य है। अवरोह में गान्धार को छोड़कर सभी स्वर लगते हैं। इसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प सां
अवरोह – सां नि ध़ प म रें सा

इस राग में रें तीव्र कोमल धैवत का प्रयोग हुआ है।

## राग वेलावली (बिलावल)

गनितीव्रा शास्त्रविद्भिः प्रोक्ता ऋषभपूर्विका ।
वेलावली बहुविधा मतीव्रा षाडवाऽथवा ॥
सम्पूर्णा धस्वराद्या वा स्वराद्या पूर्वसूरिभिः ॥१४॥

सरगम – रे रे ग प प ध नी स स स स स ध नी नी स नी ध प ग म म
ग रे रे स स ग ग ग ग प प ध ध प प स नी ध प ग ग रे स स ॥१४॥

### मूलार्थ

शास्त्रवेत्ताओं ने वेलावली राग में गान्धार तथा निषाद को तीव्र माना है। इसका आदि स्वर ऋषभ है। मध्यम भी तीव्र माना गया है। कुछ लोग षाडव जाति का तथा कुछ सम्पूर्ण जाति का मानते हैं। आदि स्वर के विषय में भी मतभेद है। कोई ध स्वर को आदि स्वर मानते हैं तो कोई आदि अर्थात् षड्ज को आदि स्वर मानते हैं। इसका सरगम इस प्रकार का है –

रे रे ग॑ प प ध नीं सां सां सां सां सां ध नीं नीं सां नीं ध प ग॑ म॑ म॑ ग॑ रे
रे सा सा ग॑ ग॑ ग॑ ग॑ प प ध ध ध प प सां नीं ध प ग॑ ग॑ रे सा सा

### विवृति

इस राग को ग्रन्थकार स्वयं सम्पूर्ण जाति का ही मानता है। यद्यपि उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में म से अतिरिक्त कोई स्वर तीव्र नहीं माना जाता। फिर भी व्यवहार में श्रुतियों में भेद अवश्य किया जाता है। इसी आधार पर ग्रन्थकार सामान्य रागों की अपेक्षा इसमें गान्धार तथा निषाद को ऊँचा (तीव्र) स्वर माना है। आधुनिक समय में कर्नाटक संगीत पद्धति में वेलावली राग प्रसिद्ध है। उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में तो इससे मिलता जुलता हुआ (केवल नाम से न कि स्वरों से) राग बिलावल है। सभी का परिचय सामान्यतया दिया जा रहा है –

### वेलावली

यह राग कर्नाटक पद्धति का है। इसका थाट (मेल) गौरी मनोहारी है। इसके आरोह में गान्धार तथा निषाद वर्ज्य है, अवरोह में सभी स्वर लगते हैं। इसका आरोह तथा अवरोह उसी पद्धति से इस प्रकार का है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग॒ रे सा

कर्नाटक पद्धति के रागों में वेलावली के अन्य प्रकारों का आरोह अवरोह सहित परिचय इस प्रकार है –

(१) नाग वेलावली

आरोह – सा रे॒ ग म॑ ध सां
अवरोह – सां नि॒ ध म॑ ग रे॒ सा

जाति – औडव-षाडव, मेल – नवनीत

(२) नटन वेलावली

आरोह – सा रे_ म॑ प ध_ नि सां
अवरोह – सां नि प म ग रे_ सा
जाति – षाडव-षाडव, मेल – झालकवराली

(३) हंस वेलावली

आरोह – सा रे_ ग म॑ प ध॑ प नि सां
अवरोह – सां नि प म॑ ग रे_ सा
जाति – सम्पूर्ण-षाडव, मेल – रघुप्रिय

(४) जय वेलावली

आरोह – सा रे_ ग_ म॑ ध_ प ध_ नि_ सां
अवरोह – सां नि_ ध_ म॑ ग_ रे_ सा
जाति – सम्पूर्ण-षाडव, मेल – गवाम्भोधि

(५) सामंत वेलावली

आरोह – सा रे_ ग_ म॑ ध प ध_ नि_ सां
अवरोह – सां ध_ नि_ प म॑ ग_ रे_ सा
जाति – सम्पूर्ण-सम्पूर्ण, मेल – भवप्रिय

(६) कन्नड वेलावली

आरोह – प नि सां रें_ गं_ मं पं
अवरोह – पं मं गं_ रें सां नि ध॑ नि प
जाति – षाडव सम्पूर्ण
थाट – दिव्यमणि

(७) शुद्ध वेलावली

आरोह – सा रे म प नि_ सां
अवरोह – सां नि_ ध नि_ प म ग_ रे सा

जाति – औडव सम्पूर्ण
थाट – खरहरप्रिय

(८) सालग वेलावली

आरोह – सा रे॒ ग॒ मं प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग सा
जाति – सम्पूर्ण-षाडव
थाट – सुवर्णाङ्गी

बिलावल –

यह राग उत्तर भारतीय पद्धति का है। इसका थाट भी बिलावल ही है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका ध वादी तथा ग संवादी है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग म रे सा
पकड़ – सां ध प म ग म रे सा

बिलावल राग के अनेक प्रकार हैं जिनका विवरण निम्नवत् है –

(१) अल्हैया बिलावल (२) देवगिरि बिलावल
(३) यमनी बिलावल (४) शुक्ल बिलावल
(५) नट बिलावल (६) सरपरदा बिलावल
(७) कुकुभ बिलावल (८) हमीर बिलावल

(१) अल्हैया बिलावल – इसका थाट बिलावल है। यह षाडव सम्पूर्ण जाति का राग है क्योंकि आरोह में मध्यम नहीं लगता। इसमें विवादी स्वर के रूप में कोमल नी॒ का भी कहीं कहीं प्रयोग किया जाता है। धैवत वादी तथा गान्धार संवादी है। गायन एवं वादन समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा पकड़ इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग म रे सा
पकड़ – सा रे ग प ध नि ध प नि॒ ध प म ग म रे सा

(२) देवगिरि बिलावल – इसका थाट बिलावल है। जाति सम्पूर्ण है – कुछ आचार्य सम्पूर्ण औडव मानते हैं। क्योंकि आरोह में सभी स्वर तथा अवरोह में ध ग को वर्ज्य

मानते हैं। यदि अवरोह औडव जाति का माना जाय तो फिर आरोह को भी औडव जाति का मानना चाहिये क्योंकि उसमें भी अवरोह ध ग के समान मध्यम तथा निषाद की स्थिति है। अतः सम्पूर्ण अधिक उचित प्रतीत होता है। वैसे रागकोषकार औडव सम्पूर्ण जाति का माना है। चलन वक्र होने से ये मतान्तर जान पड़ते हैं। इससे प्रायः शुद्ध कल्याण एवं बिलावल का मिश्रण माना जाता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं किन्तु अवरोह में कोमल नी का प्रयोग होता है। वादी स्वर षड्ज (सा) तथा संवादी पञ्चम (प) है। गायन समय प्रातःकाल है। आरोह में 'म' तथा अवरोह में ध ग स्वर दुर्बल हैं। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय (पकड़) इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग, ग म रे ग, ग प, नि ध, नि सां
अवरोह – सां ध नि॒ प, ग म नि॒ ध प, म ग, रे ग, रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि़ ध़, सा रे ग, ग, म ग रे सा, नि़ ध़ नि़ ध़ प़ ग म रे ग, रे सा

(३) यमनी बिलावल – इसका थाट बिलावल है। कुछ विद्वान् इसे कल्याण थाट का मानते हैं। परन्तु परम्परावादी संगीताचार्य अधिकांश बिलावल थाट का मानते हैं। यह यमन तथा बिलावल का सम्मिश्रण माना जाता है। इसमें दोनों मध्यम का, एवं शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया जाता है। वादी स्वर पञ्चम तथा संवादी षड्ज है। गायन समयः प्रातःकाल है। कुछ आचार्य षड्ज वादी तथा पञ्चम संवादी मानते हैं। इसकी सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति मानी जाती है। कहीं कहीं कुशलतापूर्वक अल्प मात्रा में दो धैवत के मध्य कोमल नी का भी प्रयोग होता है। अतः कोमल नी विवादी स्वर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग, म ग, प मं प ग म रे ग प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं प ग म ग रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म ग प मं प ग म ग रे, ग रे सा

(४) शुक्ल बिलावल – इसका थाट बिलावल है। इसमें दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज माना जाता है। गायन समय प्रातःकाल है। इसमें गान्धार स्वर का प्रयोग वक्र होता है तथा ऋषभ (र) का प्रयोग अल्प ही होता है। इसे बिलावल तथा केदार का सम्मिश्रण माना गया है। कुछ विद्वान् दो धैवतों और गान्धारों के बीच कोमल नी का भी प्रयोग करते हैं। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म रे प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध, नि ध प म ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा, सा ग म रे प ध म ग नि ध प म ग म रे सा

(५) नट बिलावल – इस राग का थाट बिलावल है। इसमें दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते हैं। इसमें वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका चलन वक्र है। इसे नट तथा बिलावल का सम्मिश्रण माना जाता है। इसके पूर्वाङ्ग में नट तथा उत्तराङ्ग में बिलावल राग की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा, ग म, प म, ग म रे, ग म प, ध नि सां
अवरोह – सां नि ध नि॒ ध प म ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग ग म, प म, ग म प नि॒ ध प म ग म रे सा

(६) सरपरदा बिलावल – इसका थाट बिलावल है। वादी तथा संवादी सा, प है। जाति सम्पूर्ण है। इसमें दोनों निषाद स्वर प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि॒ नि नि॒ ध प म ग म रे सा

(७) कुकुभ बिलावल

आरोह – सा रे, ग म प, नि ध नि सां
अवरोह – सां ध नि॒ प म ग, रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय –सा ग रे रे ग, म ग रे सा, सा प म प ग म ग रे
जाति एवं समय – सम्पूर्ण, प्रातःकाल
वादी-संवादी – प, रे

(८) हमीर बिलावल

आरोह – सा रे ग म रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध नि॒ प, ग म ध प मॅ प ग म रे सां
मुख्य स्वर समुदाय – ग प ध नि सां, नि ध प, मॅ प ग म नि ध ध प ग म रे सा

जाति एवं समय – सम्पूर्ण, प्रातःकाल

वाँदी-संवादी – प, सा

## राग देशाख्य

देशाख्यः पादिमः प्रोक्तस्सम्पूर्णस्वरभूषितः ॥१५॥

सरगम – प नी नी ध प म ध ध प म ग प प म रे स स नी नी स ग ग
म म ग रे स स स स स नी नी ध प ॥१५॥

### मूलार्थ

देशाख्य राग में 'प' स्वर आदि अर्थात् वादि स्वर के रूप में प्रयुक्त हुआ है। अतः इसके अनुसार इसका संवादी स्वर षड्ज माना जायेगा। इसमें सभी स्वरों का प्रयोग किया जाता है। चलन कुछ वक्र है। इसके स्वर इस प्रकार हैं।

प नी नी ध प म ध ध प म ग प प म रे सा सा ऩी ऩी सा ग ग म म ग
रे सा सा सा सा सा नी नी ध प

### विवृति

देशाख्य राग उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का राग है। रागकोष में इसकी जाति षाडव मानी गयी है। आरोह तथा अवरोह में ध स्वर को वर्ज्य माना है तथा ग और नी को कोमल स्वर स्वीकार किया है। वादी तथा संवादी प-सा ही हैं। थाट काफी है। इसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – ऩि॒ सा म रे प म नि॒ प सां
अवरोह – सां नि॒ प म प ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि॒ सा म रे प म नि॒ प सां नि॒ प म प ग॒ म रे सा

इस आरोह-अवरोह में यह औडव-षाडव जाति का प्रतीत होता है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

मूल में देशाख्य का जो स्वरूप है उससे इसका आरोह-अवरोह यह प्रतीत होता है –

आरोह – ऩि सा ग म रे सा ग प म ध प नि सां

अवरोह – सां नि ध प म ग प म रे सा
पकड़ – प नि नि ध प ग ध प म रे सा नि़ नि़ सा

इसका एक अन्य नाम "देवसाख" *संगीत सागर* नामक पुस्तक में प्रभुलाल गर्ग ने दिया है।

इसी से मिलता राग हुआ राग देशाख है। जिसके स्वर मूल ग्रन्थ स्वर से कुछ साम्यता रखते हैं। फिर भी भिन्नता पर्याप्त है।

देशाख – यह राग *संगीत सागर* के राग कोष में केवल आरोह अवरोह स्वर हैं, जो इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सा नि नि॒ ध प म ग॒ रे सा

इसमें ग॒ कोमल तथा दोनों नि का प्रयोग हुआ है। जाति सम्पूर्ण है। वादी संवादी स्वर प-सा ही हैं। यही एक साम्यता है। पर चलन में कुछ अन्तर दिखायी देता है। मूल में स्वरों के कोमल आदि का उल्लेख न होने पर भी इससे साम्यता मानना कुछ सीमा तक उचित कहा जा सकता है। भिन्नता यही प्रतीत होती है कि मूल देशाख का चलन पूर्णतया वक्र है जबकि इस देशाख का चलन सीधा है।

इस प्रकार यह राग सम्प्रति देशाख और देवसाख्य या देसाख्य इन रूपों में हमें आज भी प्राप्त है।

देशाख्य, देवसाख्य ये दोनों रागों को *संगीत सागर* में अलग अलग होने से ये दोनों भिन्न माने जा सकते हैं।

## राग पटमञ्जरी

सम्पूर्णस्वरसंयुक्ता पादिमा पटमञ्जरी ।।१६।।

सरगम – प म ग म प म म म म ग प ग रे स स रे ग म प प प म ग म
ध नी ध प म प प ग रे स, स स स नी ध ग म प ध नी ध ग म प ध
नी ध ध प ग म प म ग रे स ।।१६।।

मूलार्थ

पटमञ्जरी राग में आदि अर्थात् वादी स्वर प है। (इसके अनुसार संवादी सा होगा) इसमें सभी स्वरों का प्रयोग है। इस राग के चलन के स्वर समुदाय इस प्रकार है –

प म ग म प म म म म ग प ग रे सा सा रे ग म प प प म ग म ध नी
ध प म प प ग रे सा, सा सा सा नी ध ग म प ध नी ध ग म प ध नी ध
ध प ग म प म ग रे सा

विवृति

मूल में पटमञ्जरी के विवेचन से इसके आरोह तथा अवरोह इस प्रकार हो सकते हैं –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म प ग म ग रे सा
वादी स्वर प तथा संवादी स्वर सा है।

पटमञ्जरी

सम्प्रति पटमञ्जरी राग हमें दो रूपों में प्राप्त है। एक काफी थाट का और एक बिलावल थाट का। दोनों का परिचय इस प्रकार है –

(१) काफी थाट का पटमञ्जरी राग – इसमें वादी स्वर षड्ज तथा संवादी प है। गायन समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। आरोह ग-ध वर्ज्य हैं। आरोह सभी स्वर शुद्ध तथा अवरोह में नि॒ ग॒ कोमल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि़॒ सा रे म प ध प म प ध ग॒ रे सा रे नि़ सा

(२) बिलावल थाट का पटमञ्जरी राग – इसमें वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पञ्चम है। गायन समय प्रातःकाल है। इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण है। आरोह में ध वर्जित है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे सा नि़ ध़ नि़ प़ ग रे ग म प म प नि सां
अवरोह – सां नि ध नि प म ग रे सा

यह उपरोक्त विवेचन दोनों प्रकार का भात खण्डे जी के अनुसार है। प्रभुलाल गर्ग

ने अपनी *संगीत सागर* पुस्तक के राग कोष में जिस पटमञ्जरी का स्वरूप प्रस्तुत किया है, उसमें दोनों मध्यम, निषाद ऋषभ गान्धार धैवत कोमल स्वर लगते हैं। जिसके अनुसार यह राग तोड़ी थाट के अन्तर्गत प्रतीत होता है। इसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म म॑ प ध॒ नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ म ग॒ रे॒ सा

राग कोषकार लक्ष्मीनारायण गर्ग के अनुसार पटमञ्जरी राग काफी तथा बिलावल थाट का ही है पर उपरोक्त विवेचन से इनमें भिन्नता है जो इस प्रकार है –

बिलावल थाट का पटमञ्जरी राग –

आरोह – सा रे ग म प ध प म प नि सां

अवरोह – सां नि ध नि प म ग रे सा
जाति – सम्पूर्ण, सा-प वादी संवादी, गायन समय मध्यरात्रि

काफी थाट का पटमञ्जरी राग –

यह इनके अनुसार दो प्रकार का है। पहला सम्पूर्ण जाति का (९१ क्रमांक) दूसरा औडव सम्पूर्ण जाति का (३६९ क्रमांक)। इन दोनों का विवरण इस प्रकार है –

(क) सम्पूर्ण जाति – इसके वादी संवादी स्वर स-प हैं ग॒ नि॒ दोनों स्वर कोमल तथा शुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा

यद्यपि अवरोह में ग ध का प्रयोग अल्प स्वीकार किया गया है, परन्तु वर्ज्य नहीं माना।

(ख) औडव सम्पूर्ण जाति – इसके वादी संवादी स्वर म सा हैं। दो गान्धार तथा कोमल निषाद का प्रयोग है। इसके आरोह में रे प नि तीनों के वर्जित होने मात्र चार स्वरों का प्रयोग होने के कारण औडव स्वरूप भी असुरक्षित प्रतीत होता है। क्योंकि औडव से कम स्वरों की कोई जाति नहीं है। अतः इसे आरोह में औडव स्वरूप में ही माना गया है। सम्भवतः आरोह में नि॒ स्वर का अल्प प्रयोग मानकर इसे औडव कहा गया है।

गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह तथा अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म ध सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे सा

इस प्रकार पटमञ्जरी राग के पूर्वोक्त विवेचन के आधार पर हमें काफी थाट के तीन तथा बिलावल थाट दो स्वरूप और तोड़ी थाट का एक स्वरूप प्राप्त होता है। मूल ग्रन्थ का पटमञ्जरी राग उक्त पाँचों प्रकारों में बिलावल थाट का है जो भातखण्डे जी के विवेचन से मिलता है।

## राग ललिता

ललिता धादिमा ज्ञेया धैवतर्षभकोमला ॥१७॥

सरगम – ध नी स ग ग रे ग म म म म प प म ग ग रे ग रे स नी ध ध
ध प प म ग म प ध नी ध नी नी स नी ध प प ध ध म ग ग म ग रे स
नी ॥१७॥

### मूलार्थ

राग ललिता में आदि अर्थात् वादी स्वर धैवत है। इसमें धैवत तथा ऋषभ कोमल स्वर माने जाते हैं। इस राग के चलन के स्वर समुदाय इस प्रकार है –

ध॒ ऩी सा ग ग रे॒ ग म म म म प प म ग ग रे॒ ग रे॒ सा, नी ध॒ ध॒ ध॒ प प
मं ग म,प ध॒ नी ध॒ नी नी सां नी ध॒ प प ध॒ ध॒ म ग ग म ग रे॒ सा ऩी

### विवृति

मूल में ललिता राग का जो स्वरूप बनता है। उसके अनुसार यह सम्पूर्ण जाति का राग है जिसमें सभी स्वर रे॒ ध॒ को छोड़कर शुद्ध लगते हैं। इसका पूर्ण विवरण सरगम के अनुसार इस प्रकार है – ललिता राग में रे॒ ध॒ का कोमल एवं अन्य स्वरों का शुद्ध प्रयोग होने से इसका थाट भैरव है। सभी स्वरों का प्रयोग होने से तथा ध॒ के वादी होने से यह सम्पूर्ण जाति का प्रात:काल में गाये जाने वाला राग है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग ग रे॒ ग म प ध॒ नि सां

अवरोह – सां नि ध प ध म ग रे सा ऩि
मुख्य स्वर समुदाय – ध ऩि सा, ग ग रे, ग म प ध म ग रे सा ऩि
वादी-संवादी – ध, ग
थाट – भैरव

सम्प्रति ललिता इस रूप में यह राग न तो उत्तर भारत में न ही दक्षिण भारत में प्रसिद्ध है। इस समय सर्वत्र ललित इस रूप में ही इसकी उभयत्र प्रसिद्धि है। ललित राग के उत्तर एवं दक्षिण भारत में अनेक प्रभेद भी प्रसिद्ध हैं जिनका यथासम्भव विवरण इस प्रकार है –

ललित

उत्तर भारतीय पद्धति में यह राग पूर्वी थाट जन्य माना जाता है। इसमें धैवत ऋषभ कोमल तथा दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। पञ्चम के सर्वत्र वर्जित होने से इसकी षाडव-षाडव जाति है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि रे ग म म॑ म ग म ध नि सां
अवरोह – रें नि ध म॑ ध म॑ म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि रे ग म म॑ म ग म॑ ध म॑ म ग म॑ ग रे सा

दक्षिण भारतीय ललित

दक्षिण भारतीय पद्धति में यह राग सूर्यकांत थाट (मेल) जन्य माना जाता है। इसमें ऋषभ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। पञ्चम स्वर के वर्ज्य होने से यह षाडव षाडव जाति का है। इसका वादी संवादी स्वर मध्यम तथा षड्ज है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म ध, म ध नि ध म ग रे सा

इन दोनों में पद्धतियों के रागों में दो प्रमुख अन्तर हैं। पहला – एक में दोनों मध्यम दूसरे में शुद्ध मध्यम, तथा दूसरा – एक में कोमल धैवत दूसरे में शुद्ध धैवत। किन्तु जाति तथा वादी संवादी समान हैं। यद्यपि भातखण्डे जी ललित में शुद्ध धैवत का ही

प्रयोग करते हैं। और मारवा थाट के अन्तर्गत स्वीकार करते हैं। रागकोशकार लक्ष्मीनारायण गर्ग ने भी यही स्वीकार किया हैं तथापि कोमल धैवत का ही ललित अधिक प्रसिद्ध है जिसे पूर्वी थाट के अन्तर्गत मानना ही युक्तिसंगत होता है। दूसरे शुद्ध धैवत स्वर मानते हैं। पर उत्तरांग में सोहनी मारवा तथा पूरिया से बचाने के लिये सर्वदा सावधान भी रहने की आवश्यकता होती है।

राग ललित के इन दोनों स्वरूपों में स्वर प्रयोग के दृष्टि से ग्रन्थस्थ ललिता राग उत्तर भारतीय पद्धति के ललित से मिलता है। पर पञ्चम का प्रयोग तथा वादी-संवादी ध-ग की मान्यता इसे पर्याप्त भिन्न बनाती है।

ललित राग के अन्य प्रभेद इस प्रकार हैं –

(१) अहीर ललित (उत्तर भारतीय)
(२) पुष्प ललित (उत्तर भारतीय)
(३) पूर्ण ललित (कर्नाटकीय)
(४) मारुव ललित (कर्नाटकीय)
(५) रामललित (उत्तर भारतीय)
(६) श्रीललित (उत्तर भारतीय)
(७) शुद्धललित (कर्नाटकीय)
(८) सारंगललित (कर्नाटकीय)

(१) अहीर ललित – यह राग भैरव थाट जन्य है। इसका वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज है। रे॒ नि॒ कोमल तथा दोनों मध्यम स्वरों का प्रयोग होता है। प स्वर के पूर्ण वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का है। इसका गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध मं म ग म रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म ध नि॒ ध मं म ग म रे॒ सा

(२) पुष्प ललित – यह राग यद्यपि उत्तर भारतीय है परन्तु यह उत्तर भारतीय दश थाटों के अन्तर्गत न होने से दक्षिण भारतीय पद्धति के ७२ थाटों में से लतांगी थाट जन्य माना जाता है। इसका वादी गान्धार तथा संवादी धैवत है। आरोह में रे प तथा अवरोह में नि ग के वर्ज्य होने से औडव-औडव जाति का है। इसमें तीव्र मध्यम तथा कोमल धैवत का प्रयोग हुआ है। गायन-वादन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग मं ध॒ नि सां
अवरोह – सां ध॒ प मं रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग मं ध॒ प मं रे सा ऩि

(३) पूर्ण ललित – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) झंकार ध्वनि है। इसका मध्यम वादी षड्ज संवादी है। इसके आरोह में ध नि के वर्ज्य होने से और अवरोह में सम्पूर्ण स्वरों का प्रयोग होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें ग॒ ध॒ कोमल तथा नि॒॒ अति कोमल और शुद्ध मध्यम प्रयुक्त हुए हैं। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प सां
अवरोह – सां नि॒॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प सां नि॒॒ ध॒ प म ग॒

(४) मारुव ललित – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) रघुप्रिय है। इसमें कोमल ऋषभ अति कोमल ग॒॒ तीव्र मध्यम, तीव्र धैवत स्वर प्रयुक्त होते हैं। इसका चलन मध्य तथा तार सप्तक में है। मन्द्र सप्तक में चलन नहीं है। पञ्चम वादी षड्ज संवादी है। आरोह में सम्पूर्ण तथा अवरोह में पञ्चम वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण षाडव जाति का राग है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – प धं नि सां रें॒ गं॒॒ मं पं
अवरोह – पं मं गं॒॒ रें॒ सां नि प
मुख्य स्वर समुदाय – प धं नि सां रें॒ गं॒॒ मं पं मं गं॒॒ रें॒ सां नि प
गायन-वादन का समय – सायंकाल

(५) रामललित – यह उत्तर भारतीय पद्धति का राग है। इसका भैरव थाट है। वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है। रे॒ ध॒ कोमल शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग इसमें है। अवरोह में ऋषभ तथा आरोह में धैवत के वर्ज्य होने से इसकी षाडव जाति है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे॒ ग म प नि प सां
अवरोह – सां नि ध॒ म प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म प नि प सां नि ध॒ म प म ग सा

(६) श्रीललित – यह उत्तर भारतीय पद्धति का राग है। यह मारवा थाट का राग है।

इसमें रे कोमल तीव्र मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। प वादी सा संवादी है। जाति सम्पूर्ण सम्पूर्ण है। परन्तु अवरोह में ध नि का वक्र प्रयोग होता है। जिस कारण यह औडव सम्पूर्ण जाति का प्रतीत होता है। गायन-वादन समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग रे म॑ प नि ध प सां
अवरोह – सां नि ध प म॑ ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग रे म॑ प नि ध प सां नि ध प म॑ ग रे

(७) शुद्धललित – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) कोकिलाप्रिय है। इसमें आरोह में रे ग वर्ज्य होने से तथा अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग माना जाता है। इसका वादी पञ्चम तथा संवादी षड्ज है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। रे ग कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा प म ध नि सां
अवरोह – सां नि सां ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा प म ध नि सां नि सां ध प म ग रे सा

(८) सारंगललित – यह कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका थाट (मेल) गानमूर्ति है। मध्यम वादी षड्ज संवादी है। इसमें रे कोमल तथा ग अति कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में धैवत तथा अवरोह में गान्धार स्वर के वर्ज्य होने से यह षाडव षाडव जाति का है। इसका गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्यस्वरसमुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म रे म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म रे म प नि ध प म रे सा

## राग रामक्रिया

रामक्रिया सादिमा स्याद् धैवतर्षभकोमला ।।१८।।

सरगम – स रे रे म म प ध नी नी स स ध प म ग रे रे रे स स स नी नी
ध ध प म ग स स रे रे स ।।१८।।

### मूलार्थ

रामक्रिया राग में आदि स्वर षड्ज है। इसमें ऋषभ तथा धैवत स्वर कोमल है। इसका स्वर समुदाय इस प्रकार है –

सा रे॒ रे॒ म म प ध॒ नी नी सां सां ध॒ प म ग रे॒ रे॒ रे॒ सा सा सा नी नी ध॒ ध॒
प म ग सा सा रे॒ रे॒ सा

### विवृति

यह राग रामक्रिया नाम से कर्नाटक पद्धति के रागों में प्रसिद्ध है। उत्तर भारत में भी इसका स्वरूप प्राप्त है। ग्रन्थ में इसका विवेचन जिस प्रकार हुआ है उससे इसका पूरा स्वरूप इस प्रकार दर्शाया जा सकता है।

थाट – भैरव, वादी सा संवादी प
आरोह – सा रे॒ म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म प ध॒ नि नि सां ध॒ ध॒ प म ग रे॒ सा
जाति – षाडव-षाडव
गायन-वादन का समय – प्रातःकाल

सम्प्रति प्राप्त उत्तर भारतीय तथा कर्नाटक पद्धति के रामक्रिया का स्वरूप इस प्रकार है –

### रामक्रिया (उत्तर भारतीय)

इसका थाट भैरव है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी प है। रे॒ ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं।

अवरोह में ऋषभ वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण षाडव जाति का राग है। इसका गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग म सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म प म ध॒ नि ध॒ प म ग म सा

रामक्रिया (कर्नाटकीय)

यह कर्नाटक पद्धति का राग कामवर्धिनी थाट (मेल) जन्य है। रे ध कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग हुआ है। जाति सम्पूर्ण है। वादी षड्ज संवादी पञ्चम है। गायन-वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग मं प ध नि ध प म ग रे

कर्नाटक पद्धति के इस राग के दो प्रकार और हैं – १. पूर्व रामक्रिया, २. सिन्धु रामक्रिया, जिनका विवरण इस प्रकार है –

(१) पूर्व रामक्रिया – इसका थाट (मेल) नाटकप्रिय है। रे ग नि कोमल, शेष स्वर शुद्ध हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसका चलन वक्र है। इसमें स प वादी संवादी हैं। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि प ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प नि ध नि प ध म ग रे

(२) सिन्धु रामक्रिया – इसका थाट (मेल) मायामाधव गौड़ है। इसमें ऋषभ वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का है। इसमें ध कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। वादी सा तथा संवादी प है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि प ध प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प ध नि प ध प म ग सा

इन सभी रागों के विवेचन से यह ज्ञात होता है कि ग्रन्थस्थ रामक्रिया सबसे पृथक् है। यद्यपि स्वरों तथा वादी संवादी और थाट की दृष्टि से उत्तर भारतीय रामक्रिया के अधिक समीप है परन्तु जाति के दृष्टि से तथा मूल स्वरों के दृष्टि से दोनों में भिन्नता है।

## राग दीपक

दीपको मालवोत्पन्नो गादिमः सादिमस्तथा ।
सम्पूर्णः कथितः शास्त्रे गानविद्याविशारदैः ।।१९।।

सरगम – स स स स ग रे स नी ध ध ध ध प म ग ग प म ग रे स रे स
रे स स स स ग प ध नि ध ध प म ग रे स स रे स रे ग प म ग रे, वा
ग प प स ग रे स नि ध ध प म ग प म ग रे स रे स स स स ग प ध नि
ध प म प ग रे स, स रे स रे ग प म प रे स ।।१९।।

### मूलार्थ

दीपक राग में आदि स्वर ग तथा सा दोनों माने जाते हैं। अर्थात् वादी स्वर कहीं किसी भेद में ग तथा कहीं सा माना जाता है। यह मालव से उत्पन्न है। गानविद्या में प्रवीण आचार्यों ने शास्त्र में इसे सम्पूर्ण जाति का राग कहा है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा सा सा सा ग रे सा नी ध ध ध ध प म ग ग प म ग रे सा रे सा रे सा
सा सा सा ग प ध नि ध ध प म ग रे सा सा रे सा रे ग प म ग रे, वा ग
प प सा ग रे सा नि ध ध प म ग प म ग रे सा रे सा सा सा सा ग प ध
नि ध प म प ग रे सा, सा रे सा रे ग प म प रे सा

### विवृति

इस राग में कौनसा स्वर कैसा लगता है इसका कोई उल्लेख नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि इसमें सभी स्वर शुद्ध ही प्रयुक्त होते हैं। ग तथा सा इन दो स्वरों को "गादिमः सादिमस्तथा" इस कथन से स्वीकार किया है। इससे यह प्रतीत होता है कि दीपक के दो प्रकार हैं जिसमें एक में 'ग' आदि स्वर है और एक में 'सा' आदि स्वर है। इसीलिए इसका सरगम 'वा' इस कथन के साथ दो रूप में है। प्रथम में स स्वर आदि में प्रयुक्त है तथा द्वितीय में ग स्वर आदि में प्रयुक्त है। ग के आदि अर्थात् वादी स्वर मानने पर संवादी स्वर ध मानना उचित होगा क्योंकि सरगम में ध स्वर का प्रयोग अधिक हुआ है। इसी तरह षड्ज स्वर को आदि अर्थात् वादी स्वर मानने पर पञ्चम को संवादी स्वर मानना पड़ेगा क्योंकि पञ्चम का प्रयोग सरगम में अधिक है।

यद्यपि इसे सम्पूर्ण जाति का मूल ग्रन्थकार ने स्वीकार किया है किन्तु आरोह में

म को वर्जित किया है। अतः इसकी जाति सरगम की दृष्टि से षाडव सम्पूर्ण जाति बनती है। सरगम के अनुसार इसका आरोह तथा अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा सा ग रे सा नि ध ध प म म ग प ग ग रे सा रे सा

इसका गायन-वादन का समय रात्रि ही मानना उचित है। इस राग को ग्रन्थकार ने "मालवोत्पन्नो" इस कथन से मालव से उत्पन्न माना है। यहाँ मालव शब्द प्रदेशवाची है या रागवाची, यह विचारणीय है। यदि रागवाची माना जाय तो किसी राग से कोई राग उत्पन्न नहीं होता अपितु थाट से उत्पन्न होता है। यह सिद्धान्त है। यदि मान भी लिया जाय कि यह मालव राग से उत्पन्न है तो भी अनुपपत्ति होती है क्योंकि ग्रन्थकार ने "मालवो रिपहीनश्च मस्तु तीव्रतरो मतः धैवतः कोमलो ज्ञेयो यत्र साद्य स्वरैर्गतः" इस कथन से मालव को रे प वर्जित तीव्र मध्यम तथा कोमल धैवत वाला स्वीकार किया है। दीपक में न तो म तीव्र या धैवत कोमल है और न ही रे प वर्जित स्वर है। फिर मालव शब्द क्यों न देशवाची ही माना जाये जबकि इसका कुछ और तात्पर्य नहीं प्राप्त होता।

दीपक राग आधुनिक समय में पूर्वी थाट जन्य तथा बिलावल थाट जन्य दो प्रकार का प्रसिद्ध है। पूर्वी थाट जन्य दीपक राग में तीव्र म॑ तथा रे ध कोमल हैं। जो ग्रन्थ में वर्णित मालव से तुल्यता रखते हैं और उसका वादी स्वर सा है। बिलावल थाट जन्य दीपक राग में सभी स्वर शुद्ध तथा दोनों निषाद लगते हैं। हो सकता है पहले केवल शुद्ध नि का ही प्रयोग होता रहा हो तथा बाद में कई रागों की छाया से बचाने के लिये कोमल नि का भी प्रयोग विद्वानों ने स्वीकार किया हो। इसका वादी स्वर ग है। इस प्रकार इसमें वादी स्वर ग तथा सभी स्वर शुद्ध हैं। बिलावल थाट जन्य दीपक राग है और मालव के सदृश होने से मालवोत्पन्न सा वादी स्वर वाला पूर्वी थाट जन्य दीपक राग हैं। ये दोनों राग ग्रन्थकार द्वारा सम्मत हैं, यही विवेचन से स्पष्ट होता है।

उत्तर भारतीय दोनों दीपक रागों का परिचय इस प्रकार है –

(१) पूर्वी थाट दीपक राग – यह राग पूर्वीथाट जन्य है इसकी जाति षाडव-षाडव है, क्योंकि इसमें आरोह में रे तथा अवरोह नि स्वर वर्ज्य है। इसमें रे ध कोमल तथा तीव्र मध्यम स्वर का प्रयोग हुआ है। वादी सा और संवादी पञ्चम है। गायन समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म॑ प ध॒ नि सां
अवरोह – सां ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प ध॒ नि सां ध॒ प म ग रे॒

(२) बिलावल थाट दीपक – यह राग बिलावल थाट जन्य है। इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण है, क्योंकि आरोह में रे वर्जित है। इसमें दोनों नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर ग और संवादी स्वर नि है। गायन-वादन का समय रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म ध नि सां नि॒ ध प म ग रे

भातखण्डे जी ने इसे कल्याण थाट जन्य भी माना है। जिसका परिचय इस प्रकार है –

(३) कल्याण थाट दीपक राग – इसका थाट कल्याण है। इसकी जाति षाडव-षाडव है क्योंकि नि सर्वथा वर्जित है। तीव्र मध्यम शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग है। वादी स्वर ग संवादी ध है। गायन-वादन का समय रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म॑ प ध सां
अवरोह – सां ध प म॑ ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग ग रे ग रे ग म॑ प ग प ध प म॑ ग सा

कर्नाटक संगीत पद्धति में दीपक राग है जिसका थाट कामबर्द्धिनी है जो पूर्वीथाट के समान है। इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। क्योंकि आरोह में रे नि पूर्ण वर्ज्य है आरोह में सभी स्वर लगते हैं नि स्वर का आरोह में वक्र प्रयोग होता है। इसमें तीव्र म॑ कोमल रे॒ ध॒ तथा शेष शुद्ध स्वर प्रयुक्त हुए हैं। इसका वादी स्वर सा तथा संवादी प है। गायन समय सायंकाल है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग म॑ प ध॒ प सां
अवरोह – सां नि ध नि प म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म॒ प ध॒ नि ध॒ नि प म॑ ग रे॒ सा

दीपक राग के अन्य प्रकार भी प्रचलित हैं। ये सभी प्रकार कर्नाटक संगीत पद्धति में ही हैं जो इस प्रकार है –

(१) कोकिल दीपक
(२) नाग दीपक
(३) भानुदीपक
(४) सोमदीपक
(५) हंसदीपक

(१) कोकिल दीपक – यह राग गौरी मनोहरी थाट (मेल) जन्य है। इसमें ग॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसकी जाति औडव-षाडव है। आरोह में रे प और अवरोह में प वर्जित है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी मध्यम है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म ध नि ध म ग॒ रे सा

(२) नाग दीपक – इसका थाट (मेल) कीरवाणी है। इसमें ग॒ ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में ध नि के और अवरोह में रे प के वर्जित होने से यह औडव औडव जाति का राग है। वादी स्वर सा संवादी म है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग॒ म प सां
अवरोह – सां नि ध॒ म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प सां नि ध॒ म म म ग॒ ध॒ म ग॒ सा

(३) भानुदीपक – यह राग वरुण प्रिय थाट (मेल) से उत्पन्न हुआ है। इसमें कोमल गान्धार तथा तीव्र धैवत का प्रयोग है। शेष स्वर शुद्ध हैं। अवरोह में ध ग के वर्जित होने से यह सम्पूर्ण-औडव जाति का राग है। इसका वादी स्वर सा तथा संवादी पञ्चम है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध॑ नि सां
अवरोह – सां नि प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प ध॑ नि प म रे नि प म रे सा।

(४) सोमदीपक – यह राग वरणप्रिय थाट (मेल) जन्य है। इसमें कोमल गान्धार तीव्र धैवत तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे म के तथा अवरोह में ध रे के वर्जित होने के कारण यह औडव-औडव जाति का राग है। इसका वादी षड्ज संवादी पञ्चम है। गायन-वादन का समय रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग̲ प धं नि सां
अवरोह – सां नि प म ग̲ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग̲ प धं नि प म ग̲ सा

(५) हंसदीपक – यह राग गौरी मनोहरी थाट (मेल) जन्य है। इसमें ग̲ कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में प नि के वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी सा तथा संवादी म है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग̲ म ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग̲ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग̲ म ध सां नि ध प म म ग̲ रे ग̲ रे सा

## राग कर्नाटी

कर्नाटी बहुधा प्रोक्ता निपूर्वा गनिकोमला ।
गनिशुद्धा नितीव्रा च गतीव्रा चोभयात्मिका ।
चतुष्षष्टिमितान् भेदानूचुरेके विचक्षणाः ॥२०॥

सरगम – नी नी प प म प प नी स ग ग म म रे स स नी, प प प रे रे
स नी नी ध प प ध ध ध ध म ग ग म प रे स स ॥२०॥

मूलार्थ

कर्नाटी राग अनेक प्रकार का कहा गया है। इसमें नी आदि (वादी) स्वर माना गया है। ग̲ तथा नी̲ कोमल हैं। कोई ग नी को शुद्ध मानते हैं, किसी प्रकार में ग नी तीव्र अर्थात् दोनों प्रकार के माने जाते हैं। कुछ विद्वान् इस कर्नाटी राग के चौंसठ भेद मानते हैं। इसकी सरगम इस प्रकार है –

नी̱ नी̱ प प म प प नी̱ सां गं̱ गं̱ मं गं रें सां सां नी̱, प प प रे रे सा नी̱ नी̱
ध प प ध ध ध ध म ग̱ ग̱ म प रे सा सा

विवृति

यह कर्नाटी राग जिस प्रकार ग्रन्थकार ने इसका विवेचन किया है उस नाम में न ही उत्तर भारत में न ही दक्षिण भारत में प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत में अधुना कन्नड नाम से प्रसिद्ध है तथा उत्तर भारत में काह्नणा नाम से इसकी प्रसिद्धि है। ग्रन्थकार द्वारा प्रतिपादित इस राग का वादी स्वर नी के होने से संवादी स्वर ग होता है। स्वरों का प्रयोग अवरोह क्रम में दिखाई देता है। इसके विवेचन के आधार पर इसका आरोह, अवरोह, मुख्य स्वर समुदाय एवं जाति इस प्रकार है –

आरोह – सा ग̱ म रे सा नि̱ प म प नि̱ सां
अवरोह – सां नि̱ ध प ध म ग̱ म प रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि̱ प म प नि̱ सां नि̱ ध प ध म ग̱ म प रे सा
जाति – षाडव सम्पूर्ण

इस राग के ग्रन्थकार ने चौंसठ प्रकारों की चर्चा की है। स्वतः तीन प्रकारों का उल्लेख किया है ग नि कोमल, ग नी शुद्ध ग नि तीव्र। परन्तु स्वतः सरगम के ग नि कोमल का ही विचार दिया है। जिससे यह प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार को इस राग का यही प्रकार मान्य है।

दक्षिण भारत में कन्नड (कर्नाटी) राग के दो प्रकार हैं। एक नट भैरवी मेल जन्य का, दूसरा धीर शङ्कराभरण मेल जन्य का। इनका विवेचन इस प्रकार है –

(१) नट भैरवी मेल कन्नड राग – इस राग में ग̱ ध̱ नि̱ तीनों कोमल हैं आरोह में रे नि तथा अवरोह प रे के वर्ज्य होने से यह औडव-औडव जाति का राग है, इसका वादी स्वर सा तथा संवादी म बनता है। गायन समय वादी-संवादी की दृष्टि से सायंकाल होना चाहिए। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग̱ म प ध̱ सां
अवरोह – सां नि̱ ध̱ म ग̱ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग̱ म प ध̱ नि̱ ध̱ म ग̱ सा

(२) धीरशङ्कराभरणमेल कन्नड – इस राग में सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त हुए हैं। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। स्वरों का प्रयोग वक्र है। वादी-संवादी इसका 'नि ग' को कथमपि

स्वीकार किया जा सकता है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ग रे सा रे ग म प म ध नि सां
अवरोह – सां नि सां ध प म प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग रे सा रे ग म प म ध नि सां नि सां ध प म प ग म रे सा

उत्तर भारत में इसकी प्रसिद्धि काह्नणा के रूप में है। और इसका प्रतिनिधि मुख्य राग दरबारी काह्नणा माना जाता है। सम्प्रति इसके अनेक प्रकार प्रसिद्ध हैं। जिनमें कुछ अधिक प्रचलित प्रकारों का विवेचन इस प्रकार है –

| उत्तर भारतीय प्रकार | दक्षिण भारतीय प्रकार |
|---|---|
| (१) दरबारी काह्नणा | (१) गन्धर्व कन्नड |
| (२) मियाँ की काह्नणा | (२) नवरस कन्नड |
| (३) गारा काह्नणा | (३) पूर्व कन्नड |
| (४) कौंसी काह्नणा | (४) मेच कन्नड |
| (५) आभोगी काह्नणा | (५) वसन्त कन्नड |
| (६) नायकी काह्नणा | (६) शुद्ध कन्नड |
| (७) काफी काह्नणा | (७) मारुव कन्नड |
| (८) नवरंग काह्नणा | (८) मारुव कन्नड |
| (९) गुँजी काह्नणा | (९) वृन्दावन कन्नड |
| (१०) वागेश्री काह्नणा | (१०) हिन्दोल कन्नड |
| (११) सूहा काह्नणा | (११) सिन्धु कन्नड |
| (१२) हुसेनी काह्नणा | (१२) साम कन्नड |
| (१३) सुघराई काह्नणा | |
| (१४) शहाना काह्नणा | |
| (१५) रेवती काह्नणा | |

कर्नाटी राग के उत्तर भारतीय प्रकार इस प्रकार हैं –

(१) दरबारी काह्नणा – यह राग असावरी थाट से उत्पन्न है। इसका वादी स्वर रे संवादी प है। ग॒ ध॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। यह वक्र सम्पूर्ण जाति का है। इसका गायन-वादन समय अर्धरात्रि है। पूर्व का कर्णाट राग ही सम्प्रति काह्नणा बन

गया है। मध्यकाल में अकबर आदि के समय सम्भवतः दरबारी विशेषण लग गया है। इसमे ग॒ँ स्वर म के कण को लेकर 'मग॒' इस रूप में प्रयुक्त होता है। इसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म रे सा म प नि॒ ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां ध॒ नि॒ प म प ग॒ म सा रे सा नि़॒ ध़॒ प़ नि़॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ ग॒ (म) सा रे, सा ध़॒ नि़॒ प़

(२) मियाँ की काह्नणा – यह काफी थाट जन्य है। इसका म वादी सा संवादी है। ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़॒ सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां ध नि॒ प म प ग॒ म रे सा नि़॒ ध़ नि़॒ सा

(३) गारा काह्नणा – यह राग काफी थाट जन्य है। वादी म तथा संवादी सा है। दोनों ग तथा नि स्वरों का प्रयोग होता है। शेष स्वर शुद्ध हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग॒ ग म प ध नि॒ ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध नि ध प म प ग॒ म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ ग म प ध नि ध नि॒ ध प म प ग॒ म ग रे सा

(४) कौंसी काह्नणा – यह असावरी थाट जन्य है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ऋषभ पञ्चम के वर्ज्य होने से अवरोह में सभी का प्रयोग होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर म तथा संवादी सा है। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म प म ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म प म ग॒ म रे सा

(५) आभोगी कान्हणा – यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुआ है। इसका वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज है। आरोह तथा अवरोह में प नि के वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव-औडव है। इसमें ग॒ कोमल तथा शेष शुद्ध स्वर प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म ध सां
अवरोह – सां ध म ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ध़ सा रे ग॒ म रे सा

(६) नायकी कान्हणा – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। आरोह तथा अवरोह में ध के वर्ज्य होने से इसकी जाति षाडव-षाडव है। इसमें ग॒ कोमल तथा दोनों नि का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह और मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प नि सा
अवरोह – सां नि॒ प म प ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प नि॒ प म प ग॒ म रे सा

(७) काफी कान्हणा – यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुआ है। इसका वादी प तथा संवादी सा है। आरोह में मध्यम के वर्ज्य होने से तथा अवरोह में सभी स्वरों के प्रयुक्त होने से यह षाडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वरों का शुद्ध प्रयोग होता रहता है। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां रें नि॒ ध प म प म$_{ग}$ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ सा रे ग॒ म रे सा नि॒ ध प म प ध ग॒ रे म$_{ग}$ म रे सा

(८) नवरंग कान्हणा – यह राग खमाज थाट से उत्पन्न है। इसका वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज है। इसमें दोनों निषाद का प्रयोग हुआ है। आरोह रे नि तथा अवरोह में ध प के वर्ज्य होने से यह औडव-औडव जाति का राग है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प ध प सां
अवरोह – सां नि॒ प म ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प ध सां नि_ प ग म रे सा

(९) गुँजी काह्नणा – इसका थाट आसावरी है। वादी ग तथा संवादी नि है। इसमें दोनों गान्धार शुद्ध मध्यम कोमल ध_ नि_ का प्रयोग होता है। आरोह में धैवत वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण षाडव जाति का राग है। इसका वादन समय का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा रे ग म प ध_ नि_ सां
अवरोह – सां नि_ प म प ग_ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ सा रे ग म प ध_ नि_ प म प ग_ म रे सा

(१०) वागेश्री काह्नणा – यह काफी थाट जन्य राग है। इसमें सभी स्वरों का प्रयोग होता है। इसलिये यह सम्पूर्ण जाति का राग है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। इसमें ग_ नि_ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसका गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग_ म प ध नि_ सां
अवरोह – सां नि_ ध प म ग_ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग_ म प ध नि_ सां नि_ ध प म प ग_ म रे सा

(११) सूहा काह्नणा – यह राग काफी थाट जन्य है। इसका वादी स्वर मध्यम संवादी स्वर षड्ज है। धैवत वर्ज्य होने से जाति षाडव-षाडव है। इसमें ग_ नि_ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह-अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा ग_ म प नि_ म प सां
अवरोह – सां नि_ प म प ग_ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ सा ग_ म प नि_ म प सां नि_ प म प ग_ म रे सा

*संगीत सागर* में इसका आरोह, अवरोह तथा जाति में इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग_ म प ध नि_ नि सां
अवरोह – सां नि नि_ ध प म ग_ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग_ म प ध नि_ नि नि_ ध प म ग_ रे सा
स्वर – सभी स्वर शुद्ध ग_ कोमल दोनों नि नि_
जाति – सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

(१२) हुसेनी कान्हणा – यह राग काफी थाट जन्य है। जाति सम्पूर्ण है। सा वादी तथा प संवादी है। इसमें ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प ध नि॒ ध प ग॒ म रे सा

(१३) सुघराई कान्हणा – यह राग काफी थाट जन्य है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें कोमल ग॒ दोनों नि तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर सा तथा संवादी प है। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ प ध नि सां नि॒ ध प म ग॒ रे

(१४) शहाना कान्हणा – इस राग का थाट काफी है। वादी प तथा संवादी सा है। इसमें ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ध के वर्ज्य होने से यह षाडव-सम्पूर्ण जाति का राग है। इसके गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प नि॒ ध प ग॒ म रे

(१५) रेवती कान्हणा – इस राग का थाट काफी है। आरोह में ग नि वर्ज्य होने से औडव सम्पूर्ण जाति है। वादी स्वर प संवादी सा है। इसमें ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध म प सां
अवरोह – सां ध नि॒ प म प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ध म प सां ध नि॒ प म प म ग॒ रे

कान्हणा अंग के दक्षिण भारतीय पद्धति के कन्नड रागों का विवरण इस प्रकार है –

(१) गन्धर्व कन्नड – इसका योगप्रिय थाट (मेल) है। इसमें प वादी तथा सा संवादी है। आरोह में मध्यम तथा निषाद के वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। इसमें तीव्र रे तीव्र मध्यम, ध् कोमल तथा नि अति कोमल का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग प ध् सां
अवरोह – सां नि ध् प म॑ प ग म॑ रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग प ध् नि ध् प म॑ प ग म॑ रें सा

(२) नवरस कन्नड – इस राग का थाट (मेल) हरिकाम्बोजी है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसके आरोह रे ध नि के वर्ज्य होने से तथा अवरोह में पञ्चम के वर्ज्य होने से लगभग औडव-षाडव जाति का राग है। इसमें नि कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी संवादी की दृष्टि से तथा चलन के आधार पर इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह-अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प सां
अवरोह – सां नि ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प सां नि ध म ग म रे सा

(३) पूर्व कन्नड – यह मानवती थाट (मेल) जन्य राग है। इसमें रे कोमल ग अति कोमल शुद्ध मध्यम तीव्र धैवत स्वर लगते हैं। आरोह में धैवत निषाद के वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी पञ्चम संवादी षड्ज है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह और मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प म प सां
अवरोह – सां ध॑ नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प म प सां ध॑ नि ध॑ प म ग रे

(४) मेच कन्नड – यह राग नाम नारायणी थाट (मेल) से उत्पन्न हुआ है। इसमें तीव्र मध्यम ध् नि कोमल तथा शेष शुद्ध स्वर प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे ग तथा अवरोह में रे स्वर वर्ज्य होने से यह औडव-षाडव जाति का राग है। इसमें वादी स्वर पञ्चम तथा सा संवादी है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा म॑ प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म॑ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म॑ प ध॒ नि॒ ध॒ प म॑ ग सा

(५) वसन्त कन्नड – यह राग नाटकप्रिय थाट (मेल) जन्य है। इसका चलन मन्द्र तथा मध्य सप्तक है। इसमें रे॒ ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध रूप में प्रयुक्त हुए हैं। आरोह में धैवत अवरोह में निषाद स्वर वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का राग है। इसका वादी स्वर प संवादी स्वर सा है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म प नि॒
अवरोह – ध म प ग॒ रे॒ सा नि़॒
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म प नि॒ ध म प ग॒ रे॒ सा नि़॒

(६) शुद्ध कन्नड – इस राग का थाट (मेल) हाटकाम्बरी है। इसमें आरोह में रे ग के वर्ज्य होने से तथा अवरोह में रे ध के वर्ज्य होने से यह औडव-औडव जाति का राग है। इसका वादी स्वर प संवादी स्वर सा है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म प ध प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म प ध प नि, नि प म ग सा

(७) मारुव कन्नड – यह राग माया मालव गौड़ थाट (मेल) जन्य है। धैवत स्वर वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का राग है। रे॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। चलन वक्र है। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी स्वर पञ्चम है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म रे॒ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म ग म प नि प म रे॒ ग रे॒ सा

(८) मारुव कन्नड – इस राग का यह द्वितीय प्रकार शूलिनीथाट (मेल) जन्य है। इसके अवरोह में ध ग वर्ज्य हैं। अतः यह सम्पूर्ण औडव जाति का राग है। रे तीव्र तथा शेष

स्वर शुद्ध हैं। वादी सा तथा संवादी प हैं। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग म प ध प नि सां
अवरोह – सां नि प म रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध प नि प म रें सा

(९) वृन्दावन कन्नड – इसका थाट (मेल) धातुबर्धनी है। रें तीव्र (कोमल ग) तथा ध् कोमल, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे नि तथा अवरोह नि के वर्ज्य होने से जाति औडव-षाडव है। इसका सा वादी तथा प संवादी हैं। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प ध् सां
अवरोह – सां ध् प म ग रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म ध् प म ग रें सा

(१०) हिन्दोल कन्नड – यह राग योगप्रिय थाट (मेल) जन्य है। इसमें तीव्र म, कोमल ध, अति कोमल नि स्वर लगते हैं। आरोह में रे प तथा अवरोह म रे वर्जित होने से यह औडव-षाडव जाति का राग है। इसका वादी सा संवादी म है। गायन-वादन का समय मध्य रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग मं ध् नि सां
अवरोह – सां नि प ध् मं ग सा
मुख्य समुदाय – सा ग मं ध् नि प ध् मं ग सा

(११) सिन्धु कन्नड – इसका थाट (मेल) हरिकाम्भोज हैं। आरोह में ध नि वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का है। सा प वादी-संवादी हैं। नि् कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग म रे ग म प सां
अवरोह – सां नि् ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग म रे ग म प सां नि् ध प

(१२) साम कन्नड – यह राग सूर्यकांत (थाट) मेल से उत्पन्न है। इसके अवरोह में ग

स्वर वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण-षाडव जाति का है। वादी प संवादी सा है। इसमें रे॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म ग म प ध नि ध प म रे॒

## राग देशी

धैवतर्षभगान्धारनिषादाः कोमला मताः ।
देशी तु सादिमा शास्त्रे प्रोक्ता गायनसूरिभिः ॥२१॥

सरगम – स रे म प ध स नी नी ध, म प ग ग रे स रे म प नी ध म प ध स रे ग रे स स रे स नी ध प म प ग रे स ग रे स नी ध म प म प म प ध नी ध म ध म प ग रे स ॥२१॥

मूलार्थ

देशी राग में ऋषभ, गान्धार, धैवत तथा निषाद कोमल हैं। इसका आदि (वादी) स्वर सा है तथा संवादी स्वर उसके आधार पर पञ्चम है। ऐसा गानाचार्यों ने शास्त्र में कहा है। इसका स्वर समुदाय चलन के रूप में इस प्रकार है –

सा रे॒ म प ध॒ सां नी नी ध॒ म प ग॒ ग॒ रे॒ सा रे॒ म प नि ध॒ म प ध॒ म प ध॒
सां रें॒ गं रें॒ सां सां रें॒ सां नी ध॒ प म प ग॒ रे॒ सा ग॒ रे॒ सा ग॒ नी ध॒ म प म
प म प ध॒ नी ध॒ म ध॒ म प ग॒ रे॒ सा

विवृति

राग देशी उत्तर भारतीय पद्धति का है ग्रन्थकार ने उसी का प्रतिपादन किया है। किन्तु प्रचलित देशी राग से इसमें भिन्नता है। ग्रन्थ प्रतिपादित यह राग भैरवी थाट का प्रतीत हो रहा है। वादी स्वर षड्ज होने से संवादी पञ्चम है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। आरोह में ग नि वर्ज्य होने से औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प ध॒ सां

अवरोह – सां नि ध म प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध सां नि नि ध म प ग रे

सम्प्रति देशी राग का जो स्वरूप प्रचलित है। उसका विवेचन इस प्रकार है –

राग देशी आसावरी थाट से उत्पन्न राग है। इसमें कोमल गान्धार तथा दोनों धैवत एवं कोमल निषाद स्वर प्रयुक्त होते हैं। इसके कोमल धैवत तथा शुद्ध निषाद का अत्यल्प प्रयोग होता है। कुछ लोग प्रयोग नहीं भी करते हैं। इसका वादी पञ्चम तथा संवादी ऋषभ है। आरोह में ग के वर्ज्य होने से इसकी षाडव-सम्पूर्ण जाति है। इसका गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका चलन वक्र है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग सा रे सा नि नि सा रे म प ध म प नि सां
अवरोह – सां प ध म प ग रे ग सा रे नि सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ग सा रे सा नि सां

इस राग के उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति दोनों में कई प्रकार प्राप्त होते हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है –

| उत्तर भारतीय देशी के प्रकार | दक्षिण भारतीय देशी के प्रकार |
|---|---|
| (१) शुद्ध देशी | (१) शुद्ध देशी |
| (२) कोमल देशी | (२) मारुव देशी |

(१) शुद्ध देशी – यह राग आसावरी थाट जन्य है। आरोह ग वर्जित होने से यह षाडव सम्पूर्ण जाति का है। इसका वादी ध संवादी ग है। इसमें ग ध नि कोमल तथा शेष शुद्ध स्वर लगते हैं। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध नि ध प म ग रे

(२) कोमल देशी – यह राग आसावरी थाट जन्य है। आरोह में ग ध के वर्ज्य होने से औडव सम्पूर्ण जाति का है। इसमें ग ध नि कोमल तथा दोनों ऋषभ प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर प संवादी रे है। इसमें गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा

दक्षिण भारतीय देशी के प्रकार

(१) शुद्ध देशी – यह नटभैरवी थाट (मेल) जन्य है। इसमें आरोह में गान्धार वर्जित होने से षाडव-सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी प संवादी रे है। गायन-वादन का समय पूर्वाह्न है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध॒ नि॒ ध॒ प म ग॒ रे

(२) मारुव देशी – इसका थाट (मेल) दिव्यमणि है। इसके आरोह ध नि के वर्जित होने से इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल, म॑ ध॑ तीव्र हैं। वादी प संवादी रे है। गायन-वादन का समय पूर्वाह्न है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ रे॒ ग॒ म॑ प सां
अवरोह – सां प ध॑ नि प म॑ ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ रे॒ ग॒ म॑ प सां प ध॑ नि प

## राग कामोदी

कामोदी धादिमा ज्ञेया सम्पूर्णा सर्वसम्मता ॥२२॥

सरगम – ध प ध स रे स स नी ध प ध स ध स रे ग म ग रे ग रे स स
नी ध प ध ध ॥२२॥

मूलार्थ

कामोदी राग का आदि स्वर (वादी स्वर) ध और इसी आधार पर संवादी स्वर ग है। यह सम्पूर्ण जाति का राग सभी को मान्य है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ध़ प़ ध़ सा रे सा सां नी ध प ध सां, ध़ सा रे ग म ग रे ग रे सा सां नी
ध प ध ध

विवृति

कामोदी राग ग्रन्थकार द्वारा वर्णित सम्पूर्ण जाति का है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। वादी स्वर धैवत के होने से संवादी गान्धार बनता है। इसका थाट बिलावल है। वादी-संवादी की दृष्टि से इसका गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर होना चाहिए। सरगम की दृष्टि से इसकी आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार होने चाहिए –

आरोह – ध़ सा रे ग म ग रे नि ध प ध सां
अवरोह – सां नि ध प ध सा रे ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ सा रे ग म ग रे नि ध प ध

सम्प्रति प्राप्त कामोदी राग का विवरण जो प्राप्त होता है उसका विवरण इस प्रकार है –

कामोदी राग –

इसका थाट खमाज है। इसमें दोनों नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसकी सम्पूर्ण जाति है। वादी स्वर सा संवादी म है। गायन-वादन का समय रात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि॒ नि नि॒ ध प म ग रे

कामोदी राग के प्रकार है पहाड़ी कामोदी और इरकल कामोदी, जिनका विवरण इस प्रकार है –

(१) पहाड़ी कामोदी – यह खमाज थाट का राग है। इसका वादी ग संवादी ध है। इसमें कोमल नि॒ तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। जाति सम्पूर्ण है। समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि॒ ध प म ग रे सा

(२) इरकल कामोदी – इसका थाट खमाज है। इसमें दोनों नि का प्रयोग होता है। वादी सा संवादी म है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि नि॒ सां
अवरोह – सा नि॒ नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि॒ नि ध प, म ग रे सा

## राग केदारी

सशुद्धतीव्रमध्या स्यात् केदारी रिधवर्जिता ।
रिवर्जा धवर्जा वा त्रिविधा परिकीर्तिता ।।२३।।

सरगम – नी ग म प नी स नी प म ग स नी प नी स म ग स नी, स स
म ग म प नी ध म ग म प म स नी स स ।।२३।।

मूलार्थ

राग केदारी में शुद्ध तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। रे ध स्वर वर्जित हैं। रे वर्जित, अथवा ध वर्जित पृथक्-पृथक् मानने पर यह तीन प्रकार का कहा गया है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ऩी ग म प नी सां नी प म ग सा ऩी प़ ऩी सा म ग सा ऩी सा, सा म ग
म प नी ध म ग म प म सा ऩी सा सा

विवृति

राग केदारी के स्वरूप विवेचन में वादी स्वर का उल्लेख नहीं है। रे ध वर्जित, रे वर्जित, ध वर्जित, मानकर इसके तीन स्वरूप माने गये हैं। सरगम में दो प्रकारों का स्वरूप दिखाया गया है। रे ध वर्जित का और रे वर्जित का। सरगम के आधार पर इस राग का स्वरूप इस प्रकार प्रतीत होता है –

इस राग का थाट बिलावल है। वादी सा तथा संवादी म है। जाति औडव-औडव अथवा षाडव-षाडव है। गायन-वादन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसके दोनों प्रकारों का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

(१) आरोह – सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि ग म प नि सां नि प म ग

(२) आरोह – सा ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग म प नि ध म ग म प

ध वर्जित के प्रकार का उल्लेख ग्रन्थकार ने नहीं किया।

सम्प्रति केदारी राग इस नाम या रूप से प्रचलित न होकर इसके मिलते हुए नाम तथा रूप केदार के रूप में विशेष प्रचलित है। एक प्रकार केदारा इसके नाम से भी है। इन सबका यथासम्भव विवेचन इस प्रकार है –

| | |
|---|---|
| (१) केदार | दक्षिण भारतीय रागों में |
| (२) चाँदनी केदार | (१) केदार |
| (३) जलधर केदार | |
| (४) मलूहा केदार | |
| (५) श्याम केदार | |
| (६) संगम केदार | |
| (७) केदारा | |

(१) केदार – यह राग कल्याण थाट का है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे ग तथा अवरोह में ग वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का है। इसका वादी म संवादी सा है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म म प ध प नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प मं प ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म म प मं प ध प म रे सा

(२) चाँदनी केदार – यह राग कल्याण थाट का है। इसमें दोनों मध्यम तथा दोनों निषाद और शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे ग के वर्ज्य होने से और अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने से औडव–सम्पूर्ण जाति का है। वादी म तथा संवादी सा है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा म म $ग_{प}$ म॑ प ध नि̱ ध प नि ध सां
अवरोह – सां नि ध नि̱ ध प म॑ प ध म म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म म $ग_{प}$, म॑ प ध नि̱ ध प नि ध नि̱ ध प म॑ प $ध_{म}$ म रे सा

(३) जलधर केदार – यह राग बिलावल थाट का है। इसमें स्वर शुद्ध हैं। ग नि के सर्वथा वर्ज्य होने से इसकी औडव-औडव जाति है। इसका वादी म संवादी सा है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म $रे_{प}$ ध प म, प ध सां
अवरोह – सां $नि_{ध}$ प, म, $म_{रे}$ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म रे प ध प म, $म_{रे}$ सा

(४) मलूहा केदार – इसका थाट बिलावल है। आरोह रे ध वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका सा संवादी म है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग म प नि सां
अवरोह – सां रें सां नि ध प, ग म प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि सा ग म प नि सां रें सां नि ध प ग म प ग म रे सा ध़ प़ म़ म़ प़ ऩि सा

(५) श्याम केदार – यह राग खमाज थाट जन्य है। इसका वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें दोनों मध्यम तथा नि का प्रयोग है। ग के वर्ज्य होने से जाति षाडव-षाडव है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे सा म रे म॑ प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प ध नि̱ ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे सा म रे म॑ प नि ध प ध नि̱ ध प म रे सा

(६) संगम केदार – यह राग कल्याण थाट जन्य है। आरोह में रे वर्ज्य होने से यह षाडव-सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी म तथा संवादी सा है। दोनों म नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका

आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प मं म प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग मं प ध नि सां नि॒ ध प मं म प ग म रे सा

(७) केदारा – केदार राग के समान ही राग केदारा का भी स्वरूप पृथक् प्राप्त होता है। इसका थाट कल्याण है। जाति सम्पूर्ण है। इसमें दोनों मध्यम का प्रयोग होता है। वादी स्वर सा संवादी प है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे ग म मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म मं प ध नि ध प मं म ग रे सा

कर्नाटक पद्धति का केदार राग

इसका धीर शंकराभरण थाट (मेल) है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे ध के वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका चलन वक्र है। वादी म संवादी सा है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग म ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग म प नि प म ग म ध म ग रे

## राग नाटिका

शुद्धतीव्रनिषादाद्या सम्पूर्णा नाटिका मता ।
गान्धारकोमलाद्या च गमकैर्बहुभिर्युता ।।२४।।

सरगम – स रे ग म प ध नी स नी प म म प रे स रे ग म प म म प प
म म रे स स रे ग ग प ध नी स, स नी प नी प नी नी स स म प प म
म रे स रे स स नी प स स नी प रे प नी प म म प म रे स ।।२४।।

मूलार्थ

शुद्ध अथवा तीव्र निषाद जिसका आदि स्वर है अथवा कोमल गान्धार जिसका आदि स्वर है ऐसी अनेक गमकों से युक्त राग नाटिका विद्वानों के द्वारा मानी गयी है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा रे ग॒ म प ध नी सां नी प म म प रे सा रे ग॒ म प म म प प म म रे
सा, सा रे ग॒ ग॒ प ध नी सां, सां नी प नी प नी नी सां सां म प प म म
रे सा रे सा सां नी प सां सां नी प रे प नी प म म प म रे सा

विवृति

ग्रन्थकार के इस राग को तीन प्रकार से आदि स्वर के आधार पर स्वीकार किया है। जिसमें आदि स्वर शुद्ध निषाद हो, तीव्र निषाद हो, कोमल गान्धार हो। उत्तर भारतीय पद्धति में तीव्र निषाद का प्रयोग या प्रसिद्धि नहीं है। फिर यह तीव्र निषाद क्या माना जाय इस जिज्ञासा का यही एक समाधान समझ में आता है कि आधुनिक स्वर-स्थापन पद्धति के अनुसार इसे प्रथम श्रुति में स्थापित किया जाय तो शुद्ध नि की अपेक्षा में अल्प तीव्रता बनेगी और वही तीव्र निषाद माना जायेगा। इस प्रकार इसे तीनों रूपों में स्वीकार किया जा सकता है। सरगम की दृष्टि से इसमें आदि स्वर नी को ही मानकर ग्रन्थकार को अभीष्ट दिखाई पड़ता है और वह भी शुद्ध निषाद, क्योंकि आरोह-अवरोह दोनों में नी का प्रयोग है। जबकि अवरोह में गान्धार का प्रयोग दिखलाई नहीं पड़ता। थाटों की दृष्टि से यह अन्य किसी उत्तर भारतीय दश थाटों में दिखलाई तो नहीं पड़ता दक्षिण भारतीय पद्धति में गौरी मनोहरी थाट (मेल) के अन्तर्गत इसकी स्थिति बनती है। कथमपि काफी थाट के अन्तर्गत इसे स्वीकार किया जा सकता है पर बहुत अधिक उचित नही कहा जा सकता। निषाद के आदि अर्थात् वादी स्वर मानने पर सरगम की दृष्टि से संवादी स्वर मध्यम मानना अधिक उचित है। गान्धार का प्रयोग अवरोह में न दिखलायी पड़ने से उसे संवादी मानना उचित नहीं है। इसका चलन भी उत्तराङ्ग में अधिक सरगम में दिखाया गया है। अतः मध्य एवं तार सप्तक में ही राग का चलन मानना चाहिये। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर मानना उचित होगा। ग्रन्थकार द्वारा सरगम की दृष्टि से इसके आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हो सकते हैं –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि सां
अवरोह – सां नि प म प म रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग़ म प ध नि प म प म रे सा
जाति – सम्पूर्ण-औडव
स्वर – कोमल ग़ शेष शुद्ध, अथवा तीव्र नि

नाटिका इस रूप में सम्प्रति प्रसिद्ध नहीं है। उत्तर भारतीय पद्धति में नट, तथा दक्षिण भारतीय पद्धति में नाट इस रूप में यह प्राप्त होती है। इसके सम्प्राप्त प्रसिद्ध भेद-प्रभेद इस प्रकार हैं –

| उत्तर भारतीय | दक्षिण भारतीय |
|---|---|
| (१) नट | (१) नाट |
| (२) गम्भीर नट | (२) आहीरी नाट |
| (३) छाया नट | (३) इन्दु सारंग नाट |
| (४) सारंग नट | (४) गम्भीर नाट |
| (५) शुद्ध नट | (५) छाया नाट |
| (६) हरी नट | (६) सारंग नाट |
| | (७) सालंग नाट |
| | (८) प्रताप नाट |
| | (९) सिन्धु नाट |

उत्तर भारतीय राग

(१) राग नट – इस राग का थाट बिलावल है। इसका वादी म तथा संवादी सा है। इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। अवरोह ध ग के वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण औडव जाति का है। इसका गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग प ध नि प म रे सा

(२) गम्भीर नट – इसका थाट बिलावल है। वादी म संवादी सा है। आरोह अवरोह में रे ध के वर्ज्य होने से यह औडव-औडव जाति का राग है। इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प नि सां

अवरोह – सां नि प म ग सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प नि प म ग सा

(३) छाया नट – इसका थाट कल्याण है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी प संवादी रे है। कुछ रे प को वादी संवादी मानते हैं। इसमें दोनों म तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। कभी-कभी कोमल नि का भी प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि ध सां

अवरोह – सां नि ध प म॑ प ध प ग म रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – प रे ऽ रे ग ग म म प ग म रे, सा रे सा

(४) सारंग नट – यह भैरव थाट का राग है। इसका वादी रे संवादी प है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग नि वर्ज्य होने से औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प ध॒ सां

अवरोह – सां नि ध॒ प म रे॒ म ग रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म प नि ध॒ प म रे॒ म ग रे॒ सा

(५) शुद्ध नट – यह राग बिलावल थाट का है। इसका म वादी स संवादी है। इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। अवरोह रे तथा अवरोह में ग स्वर के वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प नि ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प नि ध नि ध प म रे

(६) हरी नट – इस राग का थाट बिलावल है। वादी प संवादी सा है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। रे स्वर वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि प ध नि प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग म प ध नि प ध नि प म ग सा

दक्षिण भारतीय राग

(१) नाट – इस राग का थाट (मेल) चल नाट है। इसका वादी प संवादी सा है। अवरोह ध ग के वर्ज्य होने से यह सम्पूर्ण औडव जाति का है। इसमें रें तथा मं तीव्र, कोमल ध॒, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग मं प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि प मं रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग मं प ध॒ नि प मं रें सा

(२) आहीरी नाट – इसका थाट (मेल) धीरशंकराभरण है। इसका वादी प संवादी सा है। रे स्वर के वर्ज्य होने से यह षाडव-षाडव जाति का राग है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि प ध नि प ग म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग म प ध नि सां नि प ध नि प ग म ग

(३) इन्दुसारंग नाट – इस राग का थाट (मेल) हनुमत् तोड़ी है। अवरोह में नि के वर्ज्य होने से सम्पूर्ण षाडव जाति का है। इसमें रे॒ ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं इसका वादी प संवादी सा है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म प म ध नि॒ सां
अवरोह – सां ध प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म प म ध नि॒ सां ध प म ग॒ रे॒

(४) गम्भीर नाट – इस राग का थाट (मेल) चलनाट है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी रे संवादी प है। इसमें रें तथा मं तीव्र ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग म॑ ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग म॑ ध॒ नि ध॒ प म॑ ग रें

(५) छाया नाट – इस राग का थाट (मेल) वागधीश्वरी है। इसके आरोह में ध नि तथा अवरोह में ग स्वर के वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव-षाडव है। इसमें तीव्र रें कोमल नि तथा शेष स्वर प्रयुक्त होते हैं। इसका वादी रे संवादी प है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग म प म प सां
अवरोह – सां नि॒ ध नि॒ प म रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग म प म प सां नि॒ ध नि॒ प म रें

(६) सारंग नाट – इस राग का थाट (मेल) मायामालव गौड़ है। इसका वादी स्वर रे संवादी प है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में ग नि वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प ध॒ सां
अवरोह – सां नि सां ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म प ध॒ सां नि सां ध॒ प म ग रे॒

(७) सालंग नाट – यह राग मायामालव गौड़ थाट (मेल) जन्य है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ग नि वर्ज्य होने से यह औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी रे संवादी प है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ सा म प ध॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प सां नि सां ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ सा म प ध॒ प सां नि सां ध॒ प म ग रे॒

(८) प्रताप नाट – यह राग हरिकाम्भोजी थाट (मेल) जन्य है। इसमें कोमल नी॒ तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका वादी म संवादी सा है। अवरोह रे वर्ज्य होने से इसकी जाति सम्पूर्ण-षाडव है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म ध प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म ध प ध नि॒ ध प म ग सा

(९) सिन्धु नाट – इस राग का थाट (मेल) सालग है। इसका वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें कोमल रे॒ ध॒, अति कोमल ग॒, नी॒ तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। पञ्चम वर्ज्य होने जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे॒ ग॒ मं नि ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सा नि॒ ध॒ मं॒ ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ रे॒ ग॒ मं नि॒ ध॒ मं ग॒ रे॒ सा

## राग श्रीराग

रिधौ तु कोमलौ यत्र मस्तु तीव्रतमो मतः
श्रीरागः सादिमः प्रोक्तः सर्वस्वरविभूषितः ।
रिषभेण वियुक्तश्च षाडवः कैश्चिदीरितः ॥२५॥

सरगम – स स ग रे रे प म स स स नी नी स रे रे स नी ध प म प ध ध
प म म ग रे रे प प प प म ध ध प म ग रे स ग ग ग म म प ध नी स
स स स स स स रे ग रे स नी रे स नी नी ध प स नी नी ध प स नी नी
ध प ध प म ग रे स स ॥२५॥

मूलार्थ

जिसमें रे॒ ध॒ कोमल हैं, 'मं' तीव्रतम माना गया है, जिसका आदि स्वर सा कहा गया है, यह सभी स्वरों से विभूषित श्री राग कहा जाता है। कुछ विद्वानों द्वारा इसे रिषभ से रहित षाडव जाति का श्रीराग कहा है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा सा ग रे॒ रे॒ प मं सां सां सां नी नी सां रें॒ रें॒ सां नी ध प मं प ध॒ ध॒ प
मं मं ग रे॒ रे॒ प प प प मं ध॒ ध॒ प मं ग रे॒ सा ग ग ग मं मं प ध॒ नी सां
सां सां सां सां सां सां रें॒ गं रें॒ सां नी रें॒ सां नी नी ध॒ प सां नी नी ध॒ प सां
नी नी ध॒ प ध॒ प मं ग रे॒ सा सा

विवृति

ग्रन्थकार ने श्रीराग के विवेचन में रे॒ ध॒ कोमल तथा मध्यम को तीव्रतम माना है। उत्तर एवं दक्षिण दोनों पद्धतियों में मध्यम के दो ही प्रकार शुद्ध एवं तीव्र माने गये हैं। तीव्रतम यह ग्रन्थकार का कथन तेरहवीं श्रुति की ओर इङ्गित करता है। अर्थात् सामान्य तीव्र मध्यम बारहवीं श्रुति पर है किन्तु यह तीव्रतम मध्यम तेरहवीं श्रुति पर होने पर उससे कुछ ऊँचा है। स को आदि स्वर माना गया है। अतः संवादी स्वर प माना जायेगा। ग्रन्थकार ने किसी अन्य आचार्य का मत देकर ऋषभ हीन षाडव जाति का भी श्रीराग बतलाया है। किन्तु सरगम ऋषभ सहित का उल्लेख कर द्वितीय मत में अपनी असहमति व्यक्त की है। इस राग का आरोह, अवरोह, मुख्य स्वर समुदाय, समय तथा जाति इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे॒ प म॑ प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ प ध॒ ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे॒ प म॑ प ध॒ नि ध॒ प म॑ प ध॒ ध॒ प म॑ म॑ ग रे॒ सा
समय – दिन का चतुर्थ प्रहर सायंकाल
जाति – सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

सम्प्रति प्रचालित श्रीराग और ग्रन्थकार द्वारा प्रतिपादित श्रीराग जाति एवं वादी को लेकर अन्तर विशेष है। सम्प्रति श्रीराग में आरोह में ग ध वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। और इसका वादी स्वर ऋषभ सर्वमान्य है। स्वरों का स्वरूप तथा चलन में पर्याप्त साम्यता है। साम्प्रतिक श्रीराग का पूर्ण विवरण इस प्रकार है –

थाट – पूर्वी
आरोह – सा रे॒ रे॒ म॒॑ प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग रे॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा[ग] रे॒[ग] रे॒ सा रे॒ प म॒॑ ग[ग] रे॒[ग] रे॒ सा
जाति – औडव सम्पूर्ण
समय – सायंकाल

श्रीराग के जो प्रभेद उत्तर एवं दक्षिण भारतीय पद्धतियों में प्राप्त होते हैं, उनमें प्रमुख का विवरण इस प्रकार है –

| उत्तर भारतीय | दक्षिण भारतीय |
| --- | --- |
| (१) जैत श्री | (१) श्री राग |

(२) धवल श्री
(३) धौल श्री
(४) बंगे श्री
(५) मगद श्रीराग
(६) मापेच श्री
(७) लंके श्री
(८) हंस श्री
(९) श्री रागम्

(२) जय श्री
(३) जयन्त श्री
(४) मागध श्री
(५) मालव श्री
(६) विजय श्री

उत्तर भारतीय श्री राग के प्रकार

(१) जैत श्री – यह राग पूर्वी थाट जन्य है। आरोह में रे ध के वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। रे॒ ध॒ कोमल तीव्र मध्यम का इस राग में प्रयोग हुआ है। इसका वादी ग तथा संवादी नि है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म॑ प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म॑ प नि ध॒ प म॑ ग रे॒

(२) धवल श्री – इस राग का थाट पूर्वी है। आरोह में रे म वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। वादी ग संवादी नि है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तीव म॑ का प्रयोग हुआ है। इस राग का आरोह, अवरोह मुख्य स्वर समुदाय तथा गायन-वादन समय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग प ध॒ नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा
गायन-वादन समय – रात्रि का तृतीय प्रहर

धवल श्री राग का उपरोक्त विवरण राग कोष के अनुसार है। *संगीत सागर* में सम्पूर्ण जाति का यह राग काफी थाट का वर्णित है जिसका विवरण इस प्रकार है –

थाट – काफी
आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प ध नि॒ ध प म ग॒

(३) धौल श्री – इस राग का थाट काफी है। जाति सम्पूर्ण है। वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर ध है। ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय दिन का चतुर्थ प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म, ग॒ म प ध नि॒ ध प म ग रे

(४) बंगे श्री – इस राग का थाट खमाज है। जाति सम्पूर्ण है। वादी सा संवादी प है। दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – ^नि^सा रे ग म, प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ^नि^सा रे ग म प ध नि॒ ध प ग म ग

(५) मगद श्रीराग – इस राग का थाट भैरवी है। इसमें शुद्ध मध्यम शुद्ध ध तथा रे॒ ग॒ कोमल हैं। वादी प संवादी सा है। आरोह नि अवरोह रे म ध वर्ज्य होने से यह षाडव-औडव जाति का कथमपि माना जा सकता है। अवरोह में चार स्वर (नि प ग सा) औडव के कथन में भी चिन्तनीय है। ग्रन्थकार ने आडव भी एक प्रकार माना है उस दृष्टि से इसे षाडव-आडव जाति का कहा जा सकता है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ प ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म प ध सां नि॒ प ग॒ सा

यह राग वस्तुतः दश थाटों में किसी के अन्तर्गत न होकर दक्षिण भारतीय नाटकप्रिय (सा रे॒ ग॒ म प ध नि॒ सां/ सां नि॒ ध प म ग॒ रे॒ सा) के अन्तर्गत है जो मागधी श्री राग से मिल रहा है।

(६) मापेच श्री – यह राग पूर्वी थाट जन्य है कहा जा सकता है किन्तु दक्षिण भारतीय सुवर्णाङ्गी थाट (मेल) (सा रे॒ ग॒ मं प ध नि॒ सां/ सां नि॒ ध प मं ग॒ रे॒ सा) के अत्यधिक समीप है। इसलिये इसे ही इस राग का थाट मानना उचित है। इसका वादी स्वर प

संवादी सा है। आरोह में ध वर्ज्य होने से षाडव सम्पूर्ण जाति है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ मं प नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग॒ मं रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ मं प नि ध प मं ग॒ मं रे॒

(७) लंके श्री – यह खमाज थाट का राग है। इसका वादी म संवादी सा है। कोमल नि॒ तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म ध प ध नि॒ सां
अवरोह – रें नि॒ सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म ध प ध नि॒ ध प म ग रे सा

(८) हंस श्री – यह खमाज थाट का राग है। इसका वादी प संवादी सा है। आरोह, अवरोह में रे ध वर्ज्य होने से जाति औडव-औडव है। दोनों नि का प्रयोग है। शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि॒ म प, प ग म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प नि सां नि॒ म प, प ग म ग सा

(९) श्री रागम् – यह राग श्री राग से कुछ हटकर है। इसका थाट काफी है। प वादी सा संवादी है। ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग ध वर्ज्य होने से तथा अवरोह में चलन वक्र होने से यह औडव सम्पूर्ण वक्र जाति का राग है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प ध नि॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि॒ प ध नि॒ प म ग॒ रे सा

दक्षिण भारतीय श्री राग के प्रकार

(१) श्री राग – इसका थाट (मेल) खरहरप्रिय है। वादी प संवादी सा है। ग नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग ध वर्ज्य होने से औडव सम्पूर्ण जाति का है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि प ध नि प म रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि प ध नि प म रे ग रे सा

(२) जय श्री – इस राग का थाट (मेल) कीरवाणी है। वादी प संवादी सा है। ग ध कोमल शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसके गायन-वादन का समय सायंकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध, नि ध प म ग रे

(३) जयन्त श्री – इस राग का थाट (मेल) नट भैरवी है। म वादी स संवादी है। आरोह रे प, अवरोह में रे वर्जित होने से इसकी औडव-षाडव जाति है। इसमें ग ध नि कोमल तथा शुद्ध मध्यम का प्रयोग हुआ है। इसका गायन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म ध नि ध म प म ग

(४) मागध श्री – इस राग का थाट नाटकप्रिय है। इसका प वादी, संवादी सा है। आरोह में नि तथा अवरोह में रे म ध वर्जित होने से इसे कथमपि षाडव-औडव जाति का कहा जा सकता है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे म प ध सां
अवरोह – सां नि प ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे म प ध सां नि प ग

(५) मालव श्री – इस राग का थाट (मेल) खरहरप्रिय है। इसका वादी स्वर प संवादी सा है। रे वर्जित होने से इसकी जाति षाडव-षाडव है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसमें ग_ नि_ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग_ म प नि_ ध नि_ प ध नि_ सां
अवरोह – सां नि_ ध प म ग_ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग_ म प नि_ ध नि_ प ध नि_ ध प म ग_ सा

(६) विजय श्री – इस राग का थाट (मेल) सुवर्णाङ्गी है। धैवत वर्ज्य होने से जाति षाडव-षाडव है। इसका वादी स्वर प संवादी सा है। इसमें रे_ ग_ कोमल तीव्र मध्यम शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग_ रे_ ग_ मं प नि सां
अवरोह – सां नि प मं ग_ रे_ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग_ रे_ ग_ मं प नि प मं ग_ रे_

## राग वसन्तिका

रिकोमला मतीव्रा च पञ्चमेन विवर्जिता ।
सम्पूर्णा षाडवा चैव द्विविधापि वसंतिका ॥२६॥

सरगम – स रे ग म ध नी ध म ध म ग म ध नी ध ध म म ग म स स
रे ग म म ध नी स रे ग म म ग रे स नी ध म म ग म ॥२६॥

मूलार्थ

जिसमें रे स्वर कोमल और मध्यम तीव्र माना गया है। पञ्चम स्वर वर्जित है जो सम्पूर्ण अथवा षाडव जाति का है। यह प्रकार राग वसन्तिका दो प्रकार का माना गया है। इसका सरगम इस प्रकार का है –

सा रे_ ग मं ध नी ध मं ध मं ग मं ध नी ध ध मं मं ग मं सा सा रे_ ग मं
मं ध नी सां रें_ गं मं मं गं रें_ सां नी ध मं मं ग मं

विवृति

वसन्तिका राग का विवेचन करते हुए ग्रन्थकार ने इसे सम्पूर्ण और षाडव जाति का स्वीकार करके दो प्रकार का माना है क्योंकि पञ्चम को वर्जित माना है। अतः षाडव जाति का है, उसे ही ग्रन्थकार ने सरगम द्वारा दर्शाया है। सम्पूर्ण जाति को पञ्चम से युक्त माना जायेगा। वादी स्वर का उल्लेख नहीं है। सरगम की दृष्टि से म वादी सा संवादी मानना चाहिये। उस दृष्टि से इसके गायन-वादन का समय रात्रिकालीन ही मानना उचित होगा। थाटों की दृष्टि से यह उत्तर भारतीय दश थाटों में किसी के अन्तर्गत दिखलाई नहीं पड़ता। कथमपि पूर्वी थाट का मान सकते हैं। परन्तु दक्षिण भारतीय थाटों में विश्वम्भरी थाट के अत्यधिक समीप है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म॑ ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म॑ ध नि ध म॑ ग म॑ ध नि ध म॑

इस राग के उत्तर एवं दक्षिण भारतीय रागों के अनेक प्रभेद हैं। किन्तु सम्प्रति वसन्तिका इस नाम से प्रचलित न होकर वसन्त नाम से प्रसिद्ध है। इसके सम्पूर्ण प्रमुख प्रभेद इस प्रकार हैं –

उत्तर भारतीय

(१) वसन्त
(२) कनक वसन्त
(३) कल्याण वसन्त
(४) गम्भीर वसन्त
(५) गोपी वसन्त
(६) जीविका वसन्त
(७) जोगी वसन्त
(८) तान वसन्त
(९) दन्ति वसन्त
(१०) मयूर वसन्त
(११) हिडोल वसन्त

दक्षिण भारतीय

(१) वसन्त
(२) कनक वसन्त
(३) कल वसन्त
(४) कल्याण वसन्त
(५) गोपिका वसन्त
(६) पुष्प वसन्त
(७) प्रताप वसन्त
(८) भोग वसन्त
(९) मारुव वसन्त
(१०) राग वसन्त
(११) विजय वसन्त
(१२) वीर वसन्त
(१३) शुद्ध वसन्त

(१४) सिहोल वसन्त
(१५) हिंदोल वसन्त

(१) वसन्त – इस राग का थाट पूर्वी है। इसमें दोनों मध्यम रे॒ ध॒ कोमल प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे प वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण मानी जाती है। वादी तार सप्तक का सा संवादी प है। इसका चलन उत्तराङ्ग में है। गायन-वादन का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म॑ ध॒ रे॒ं सां नि सां
अवरोह – रे॒ं नि ध॒ प म॑ ग म ऽ ग म॑ ध॒ ग म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – म॑ ध॒ रे॒ं सां नि ध॒ प म॑ ग म॑ ग

ग्रन्थकार द्वारा निर्दिष्ट वसन्तिका तथा पूर्वोक्त वसन्त राग में यही विशेष भेद है कि वसंतिका में केवल रे॒ कोमल है, वसन्त में रे॒ ध॒ दोनों कोमल है। वसन्तिका में तीव्र मध्यम, वसन्त दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। वसन्तिका में आरोह केवल पञ्चम वर्ज्य है, वसन्त रे प दोनों वर्ज्य हैं। अतः वसन्तिका षाडव सम्पूर्ण जाति का तथा वसन्त औडव सम्पूर्ण जाति का है। चलन में भी कुछ अन्तर है। थाट दोनों का लगभग समान है।

(२) कनक वसन्त – इस राग का थाट काफी है। म वादी सा संवादी है। इसमें ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह ग, ध अवरोह ध वर्ज्य होने से औडव-षाडव जाति है। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प म ग॒ रे म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि॒ प म ग॒ रे म ग॒ सा

(३) कल्याण वसन्त – यह राग आसावरी थाट जन्य है। दक्षिण भारतीय कीरवाणी के अत्यधिक समीप है। ग॒ ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे वर्ज्य होने से जाति औडव-षाडव सम्पूर्ण है। प वादी सा संवादी है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग॒ प ध॒ नि सां
अवरोह – सा नि ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग॒ प ध॒ नि ध॒ प म ग॒ रे

(४) गम्भीर वसन्त – इस राग का थाट भैरवी है। अवरोह में नि ग वर्ज्य होने से जाति

सम्पूर्ण औडव है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल दोनों ऋषभ स्वर प्रयुक्त होते हैं। वादी म संवादी स है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग॒ म रे॒ ग॒ म प नि॒ ध॒ नि॒ प सां
अवरोह – सां ध॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग॒ रे॒ ग॒ म प नि॒ ध॒ नि॒ प सां ध॒ प म रे

(५) गोपी वसन्त – इसका थाट आसावरी है। वादी सा संवादी प है। ग॒ ध॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। रे वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प ध॒ नि॒ ध॒ प म ग॒

(६) जीविका वसन्त – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर प संवादी सा है। कोमल नि के अतिरिक्त सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग नि अवरोह में ध ग वर्ज्य होने से जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ध सां नि॒ प म रे

(७) जोगी वसन्त – इस राग का थाट बिलावल है। वादी ध संवादी ग है। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – ध नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे

(८) तान वसन्त – इसका थाट काफी है। आरोह में रे ध वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। वादी स्वर ग तथा संवादी स्वर नि है। ग॒ तथा नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प नि॒ ध प म ग॒ रे

(९) दन्ति वसन्त – इसका थाट पूर्वी है। वादी स्वर रे संवादी ध है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तीव्र मध्यम शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में ग प वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म॑ ध॒ नि सां
अवरोह – सां ध॒ नि ध॒ प म ग म॑ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म॑ ध॒ नि ध॒ म॑ ग म॑ रे॒

(१०) मयूर वसन्त – इस राग का थाट मारवा है। जाति सम्पूर्ण है। वादी स्वर रे संवादी प है। कोमल रे॒, तीव्र मध्यम शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। इसके गायन-वादन का समय दिन का चौथा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म॑ प ध नि सां
अवरोह – सां नि प ध नि ध प म॑ रे म॑ ग रे॒ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म॑ प ध नि प ध नि ध प म॑ रे॒ म ग रे॒ ग सा

(११) हिडोल वसन्त – इस राग का थाट आसावरी है। वादी ग संवादी सा है। ग॒ नि॒ कोमल, दोनों ध तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह रें ग वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध॒ नि॒ ध सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ध॒ म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध॒ नि॒ ध सां नि॒ ध प म ध॒ म ग॒ रे

दक्षिण भारतीय वसन्त रागों के प्रभेद

(१) वसन्त – इस राग का थाट (मेल) मायामालव गौड़ है। इसके आरोह में रे प तथा अवरोह में प के वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। वादी म संवादी सा है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म ध॒ नि ध॒ सां
अवरोह – सां नि ध॒ म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म ध॒ नि ध॒ म ग रे॒ सा

(२) कनक वसन्त – इस राग का थाट (मेल) नटभैरवी है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी प संवादी सा है। अवरोह में रे वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प नि॒ ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प नि॒ ध॒ सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे

(३) कल वसन्त – इस राग का थाट (मेल) गवाम्भोधि है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तीव्र मध्यम स्वर का प्रयोग होता है। आरोह में रे, अवरोह रे ध वर्जित होने से जाति षाडव-औडव है। वादी स्वर प संवादी स है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग॒ म॑ म॑ प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प म॒ ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म॑ प ध॒ नि॒ प म॑ ग

(४) कल्याण वसन्त – इस राग का थाट (मेल) कीरवाणी है। इसमें ग॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी म संवादी सा है। आरोह में रे प वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म ध॒ नि ध॒ प म ग॒ रे

(५) गोपिका वसन्त – इस राग का थाट (मेल) नटभैरवी है। वादी स्वर सा संवादी स्वर प है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। आरोह अवरोह में रे वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प ध॒ नि॒ ध॒ प॒ ध॒ प म ग॒ सा

(६) पुष्प वसन्त – इस राग का थाट (मेल) रत्नाङ्गी है। इसमें रे॒ ध॒ नि॒ कोमल ग॒ अति कोमल शुद्ध मध्यम स्वरों का प्रयोग होता है। वादी स्वर प संवादी सा है। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प म ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां ध॒ नि॒ प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ प म ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ प म ग॒ रे॒

(७) प्रताप वसन्त – इस राग का थाट (मेल) रूपवती है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का वादी स्वर म तथा सा संवादी है। आरोह में ध, अवरोह में ग ध वर्जित होने से जाति षाडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म रे॒ ग॒ म प नि सां
अवरोह – सां नि प म रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म रे॒ ग॒ म प नि प म रे॒ सा

(८) भोग वसन्त – इस राग का थाट (मेल) कामवर्धिनी है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तीव्र मध्यम और शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें प वादी स संवादी है। आरोह में रे नि वर्जित होने से जाति औडव-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग मं प ध॒ प सां
अवरोह – सां ध॒ नि प मं ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग मं प ध॒ प सां ध नि प मं ग रे सा

(९) मारुव वसन्त – इस राग का थाट (मेल) शुभपंतुवराली है। इसमें रे॒ ग॒ ध॒ कोमल, तीव्र मध्यम, शुद्ध नी स्वर का प्रयोग होता है। वादी म संवादी सा है। आरोह में रे स्वर वर्जित होने से जाति षाडव-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म॑ ग_ म॑ प ध_ नि_ सां
अवरोह – सां नि_ प ध_ म॑ ग_ रे_ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म॑ ग_ म॑ प ध_ नि_ प ध_ म॑ ग_ रे_ सा

(१०) राग वसन्त – इस राग का थाट (मेल) बकुला भरण है। आरोह में ग वर्जित होने से जाति षाडव-सम्पूर्ण है। वादी स्वर म संवादी स्वर सा है। इस राग में तीव्र म॑, रे_ नि_ कोमल तथा धैवत अति कोमल प्रयुक्त होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे_ म॑ प नि_ ध‗ सां
अवरोह – सां नि_ ध‗ म॑_ प म॑_ ग रे_ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे_ म॑ प नि_ ध‗ सां नि_ ध‗ म॑ प म॑ ग रे_ सा।

(११) विजय वसन्त – इस राग का थाट (मेल) विश्वम्भरी है। इसमें म॑ तीव्र, ध॑ तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर मध्यम एवं संवादी स्वर षड्ज है। आरोह में रे ग अवरोह रे ध वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म॑ प ध॑ नि सां
अवरोह – सां नि प म॑ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म॑ प ध॑ नि प म॑ ग म॑ ग सा

(१२) वीर वसन्त – इस राग का थाट (मेल) करुणप्रिय है। इसमें ग_ कोमल ध॑ तीव्र शेष शुद्ध स्वर लगते हैं। वादी स्वर प संवादी सा है। आरोह में ध नि के वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग_ म प सां
अवरोह – सां नि ध॑ प म ग_ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग_ म प सां नि ध॑ प म ग_ रे

(१३) शुद्ध वसन्त – इस राग का थाट (मेल) धीरशंकराभरण है। इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर प तथा संवादी सा है। आरोह में ध वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि सां
अवरोह – सां ध नि प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प नि सां ध नि प म ग रे

(१४) सिह्मेल वसन्त – इस राग का थाट (मेल) मार रंजनी है। इसमें ध॒ कोमल, नी॒॒ अति कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर म संवादी सा है। अवरोह में नि के वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प म ध॒ नि॒॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प म ध॒ नि॒॒ सां ध॒ प

(१५) हिन्दोल वसन्त – इस राग का थाट (मेल) नट भैरवी है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष शुद्ध स्वर हैं। इस राग का वादी स्वर ध तथा संवादी स्वर ग है। रे वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प ध॒ नि॒ ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ ध म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प ध॒ नि॒ ध॒ सां नि॒ ध॒ प म ग॒ ध॒ म ग॒ सा

## राग मालव

मालवो रिपहीनश्च मस्तु तीव्रतरो मतः ।
धैवतः कोमलो ज्ञेयो यत्र साद्यस्वरैर्मतः ॥
सम्पूर्णः षाडवश्चैवौडवः प्रोक्तः पुरातनैः ॥२७॥

सरगम – स स स नी ध म म ध नी ध म ग म ग म स स स स म ग म
स स नी स ग ग म ध नी स ध नी ध म म म ग सा ॥२७॥

मूलार्थ

मालव राग में रे प वर्जित हैं, मँ तीव्रतर माना गया है। धैवत स्वर को कोमल जानना चाहिये। इसका आदि स्वर सा है। प्राचीन विद्वानों के द्वारा यह राग सम्पूर्ण षाडव और औडव जाति का कहा गया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सां सां सां नी ध॒ मं मं ध॒ नी ध॒ प ग मं ग मं स सा सा सा मं ग मं सा सा
ऩी सा ग ग मं ध॒ नी सां ध नी ध॒ मं मं मं ग सा

विवृति

ग्रन्थकार ने मालव राग के विवेचन में मध्यम को तीव्रतर माना है। जबकि मध्यम के दो ही स्वरूप प्रचलित हैं शुद्ध और तीव्र। तीव्रतर कथन से यह स्पष्ट होता है तीव्र मध्यम की अपेक्षा एक श्रुति ऊपर उस मध्यम स्वर की स्थापना होगी। प्रथम श्रुति में सा मानने वाले पक्ष में वह तेरहवीं श्रुति कहलायेगी। आदि अर्थात् वादी स्वर सा के मानने पर संवादी स्वर मध्यम माना जायेगा। इस राग को ग्रन्थकार ने सम्पूर्ण, षाडव औडव तीन प्रकार से उल्लेख करके स्वयं औडव जाति का राग माना है। इसके गायन-वादन का समय दिन का चतुर्थ प्रहर है। इसका थाट पूर्वी मानना चाहिए। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा मं ग मं ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ मं ग मं ग मं सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा मं ग मं ध॒ नि ध॒ मं ग मं ग मं सा

सम्प्रति मालव राग खमाज थाट का माना जाता है। इसका वादी स्वर ग संवादी नी है। कोमल नि॒ तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग है। अवरोह में 'ग' स्वर वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि॒ म ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध नि॒ प म ध म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प नि॒ प म ध म रे सा

## राग मालश्री

रिधौ तु कोमलौ यत्र मतीव्रतरसंज्ञकः ।
मालश्री रिधपैर्हीना प्रोक्ता कैश्चित् पवर्जिता ॥
रिधवर्जा रिवर्जा वा धवर्जा कैश्चिदीरिता ।
षाडवौडवसम्पूर्णा वाडवा च चतुर्विधा ॥२८॥

सरगम – स स स ग रे ग म प ध ध प म ग रे ग म ग रे सा, स स स
स स स स स स ध प रे नी नी ध प म ग ग म म ग रे सा ॥२८॥

मूलार्थ

मालश्री राग में रे ध कोमल हैं तथा मँ तीव्रतर है। कुछ आचार्यों ने इस राग को रे ध प से हीन माना है। कुछ प वर्जित, रे ध वर्जित, रे मात्र वर्जित, ध मात्र वर्जित मान कर स्वरों के आधार पर चार प्रकार से षाडव, औडव, सम्पूर्ण और वाडव जाति का माना है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा सा सा ग रे ग मँ प ध ध प मँ ग रे ग मँ ग रे सा, सा सा सा सा सा
सा सा सा सा ध प रें नी नी ध प मँ ग ग सा, मँ ग रे सा

विवृति

मालश्री राग के विवेचन में ग्रन्थकार ने रे ध कोमल म को तीव्रतर माना है। तीव्र मं से इसे कुछ ऊपर अर्थात् पहली श्रुति में सा मानने पर तेरहवीं श्रुति में तीव्रतर में माना जाता है। अन्य आचार्य के मतविवेचन में इस राग को रे ध प वर्जित मान कर वाडव जाति का, रे ध वर्जित मान कर औडव जाति का, प, रे, ध वर्जित (अर्थात् इनमें से किसी एक स्वर को वर्जित मानकर) मानकर षाडव जाति का और सभी स्वरों का प्रयोग कर सम्पूर्ण जाति का माना है। इसका एक भेद वाडव शब्द से ग्रन्थकार ने उल्लेख किया जो सम्पूर्ण षाडव औडव के अतिरिक्त चतुर्थ प्रकार वाडव ज्ञात होता है। सम्भवतः जिसमें चार स्वरों का ही प्रयोग हो वह वाडव जाति का माना जाता है जिसकी सूचना ग्रन्थकार रिधपैर्हीना शब्द से देता है। इसका उल्लेख आधुनिक संगीत ग्रन्थों में प्राप्त नहीं होता। स्वयं ग्रन्थकार ने आरोह में नि वर्जित मानकर षाडव सम्पूर्ण जाति का माना है। वादी स्वर का यद्यपि उल्लेख नहीं है तथापि सरगम की दृष्टि से इसमें वादी स संवादी प मानना उचित दिखाई पड़ता है। रे ध कोमल म के तीव्रतर होने से इसे पूर्वी थाट के अन्तर्गत माना जा सकता है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे ग मँ प ध सां
अवरोह – सां ध प रे नि नि ध प मँ ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे ग मँ प ध प रे नि ध प म ग रे सा

सम्प्रति मालश्री राग कल्याण थाट के अन्तर्गत माना जाता है। इसका वादी स्वर

प संवादी सा है। ग तीव्र शेष स्वर शुद्ध हैं। रे प वर्जित होने से औडव जाति का है। गायन-वादन का समय सायंकाल माना गया है। यह पूर्वोक्त मालश्री के प्रभेदों में एक भेद औडव जाति का माना जा सकता है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग प म॑ ग प नि सां
अवरोह – सां नि प म॑ ग प ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – प प प ग सा, सा सा ग ग प, प प म॑ ग प ग सा

## राग धनाश्री

धनाश्रीस्सादिमा प्रोक्ता कोमलौ धैवतर्षभौ ।
गान्धार:कोमलश्चात्र मस्तु तीव्रतरो मतः ।।
रिहीना वा धहीना वा सम्पूर्णा षाडवाथवा ।।२९।।

सरगम – स स स ग रे स रे नी नी स ग ध प म ग ग रे स नी नी स ग
रे स ग म म प नी स रे स नी नी ध प म म ग ग स रे नी नी ।।२९।।

मूलार्थ

धनाश्री राग में रे॒ ध॒ कोमल ग॒ कोमल म॑॑ तीव्रतर माना जाता है। रे वर्जित अथवा ध वर्जित मानकर इसे सम्पूर्ण अथवा षाडव जाति का स्वीकार किया जाता है। इसका आदि स्वर सा है। इस राग का सरगम इस प्रकार है –

सा सा सा ग॒ रे॒ सा रे॒ ऩी ऩी सा ग॒ ध॒ प म॑॑ ग॒ ग॒ रे॒ सा ऩी ऩी सा ग॒ रे॒ सा
ग॒ म॑॑ म॑॑ प नी सां रें॒ सां नी नी ध॒ प म॑॑ म॑॑ ग॒ ग॒ सा रे॒ ऩी ऩी

विवृति

धनाश्री राग के विवेचन में ग्रन्थकार ने रे॒ ग॒ ध॒ कोमल मानकर म॑॑ को तीव्रतर माना है जो प्रथम श्रुति में सा मानने पर तेरहवीं श्रुति में माना जायेगा। वादी स्वर सा के होने से संवादी स्वर प मानना उचित होगा क्योंकि सरगम में प को सा के बाद महत्वपूर्ण माना गया है। इस राग को सरगम के विवेचन के आधार पर तोड़ी थाट के अन्तर्गत मानना चाहिए। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय जाति इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ रे॒ सा रे॒ ऩि सा ग॒ म॑ प नि सां
अवरोह – सां रें॒ सां नि ध॒ प म॑ ग॒ सा रे॒ ऩि
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ रे॒ सा रे॒ ऩि सा ग॒ म॑ प नि ध॒ प म॑ ग सा रे॒ ऩि
जाति – षाडव सम्पूर्ण

सम्प्रति धनाश्री राग काफी थाट के अन्तर्गत माना जाता है। इसका वादी प संवादी सा है। आरोह में रे ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय दिन का तृतीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि॒ सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म प ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध प ग॒ रे सा ऩि॒ सा ग॒ म प ध प नि॒ ध प

इस राग के प्रमुख प्रकारों का विवेचन इस प्रकार हैं –

(१) पूरिया धनाश्री
(२) शुद्ध धनाश्री
(३) सिन्धु धनाश्री

(१) पूरिया धनाश्री – इस राग का थाट पूर्वी है। वादी स्वर प संवादी रे है। रे॒ ध॒ कोमल तीव्र मध्यम, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि रे॒ ग म॑ प ध प नि सां
अवरोह – रें॒ नि ध॒ प म॑ ग म॑ रे॒ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि रे॒ ग म॑ प ध॒ प म॑ ग म॑ रे॒ ग रे॒ सा

कुछ विद्वान् वादी प और संवादी सा मानते हैं।

(२) शुद्ध धनाश्री – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर प संवादी सा है। ग॒ नि॒ कोमल, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। रे ध वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प नि॒ सां

अवरोह – सां नि̲ प म ग̲ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग̲ म प नि̲ प म ग̲ सा

(३) सिन्धु धनाश्री – इस राग का थाट नाटकप्रिय है। यह दश थाटों के अन्तर्गत नहीं आ पाता। इसका प वादी तथा संवादी सा है। इसमें दोनों रे̲ रे, ग̲ नि̲ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे̲ ग म प नि̲ ध सां
अवरोह – सां नि̲ ध प म ग̲ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे̲ ग म प नि̲ ध प म ग̲ रे

## राग आसावरी

आसावरी मरित्यक्ता मत्यक्ता वा रिवर्जिता ।
सम्पूर्णा धादिमा प्रोक्ता सम्पूर्णौडवषाडवा ।।
रिधकोमलसंयुक्ता गकोमलयुताऽथवा ।
एवं बहुविधा ज्ञेया शास्त्रविद्भिरुदाहृता ।।३०।।

सरगम – ध नी स ग ग रे म म प नी नी ध प ध म प ध ध ध म ग रे स
स स रे ग ग रे स नी स स स ध नी रे स स ।।३०।।

मूलार्थ

आसावरी राग में म रे अथवा केवल म या केवल रे वर्जित स्वर है। इसका आदि स्वर ध है। यह सम्पूर्ण जाति का अथवा औडव या षाडव जाति का माना गया है। इसमें रे̲ ध̲ कोमल अथवा ग̲ कोमल स्वर प्रयुक्त होता है। इस प्रकार संगीतशास्त्र ज्ञाताओं के द्वारा आसावरी राग अनेक प्रकार का माना गया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

ध़̲ नी़ सा ग̲ ग̲ रे̲ म म प नी नी ध̲ प ध̲ म प ध̲ ध̲ ध̲ म ग̲ रे̲ सा सा सा
रे̲ ग̲ ग̲ रे̲ सा नी़ सा सा सा ध़̲ नी़̲ रे̲ सा सा

विवृति

आसावरी का ग्रन्थकार ने तीन प्रकार से विवेचन किया है। रे म वर्जित कर औडव जाति का, म अथवा रे वर्जित कर षाडव जाति का, सभी स्वरों का प्रयोग करके सम्पूर्ण जाति

का माना है। सरगम का जो प्रदर्शन है वह सम्पूर्ण जाति का है। इससे यह सूचित होता है कि ग्रन्थकार इस राग को सम्पूर्ण जाति का मानते हैं। आदि अर्थात् वादी स्वर ध के होने से संवादी स्वर ग और गायन-वादन का समय प्रातःकाल होना चाहिये। स्वरों की दृष्टि से इसका थाट धेनुका है। यह उत्तर भारतीय दश थाटों के अन्तर्गत नहीं आता। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ध़॒ नि़ सा ग॒ रे॒ म प नि ध॒ प सां
अवरोह – सां नि ध॒ प ध॒ म प ध॒ म ग॒ रे॒ सा नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़॒ नि़ सा ग॒ रे॒ म प नि ध॒ प ध॒ म प ध॒ म ग॒ रे॒

सम्प्रति आसावरी का जो स्वरूप प्रसिद्ध है वह इस प्रकार है – आसावरी का थाट भी आसावरी ही है। इसका वादी ध संवादी ग है। इसमें ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग नि के वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि॒ ध॒ प म प ग॒ रे सा

इसके अन्य प्रभेद इस प्रकार हैं –

(१) कोमल ऋषभ आसावरी (२) जोगी आसावरी (३) शुद्ध आसावरी

(१) कोमल ऋषभ आसावरी – इस राग का पूर्ण विवरण आसावरी राग के समान ही है। शेष सब आसावरी के समान जानना चाहिए। केवल ऋषभ का कोमल होना ही भिन्नता है।

(२) जोगी आसावरी – इस राग का थाट भैरव है। वादी ध संवादी रे है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग नि वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प ध॒ सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म प ध॒ सां नि ध॒ प ध॒ प म ग रे॒

(३) शुद्ध आसावरी – इसका थाट भैरवी है। इसमें वादी ध संवादी रे है। रे ग ध नि कोमल शुद्ध म स्वर प्रयुक्त होते हैं। आरोह में ग नि वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम तथा द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि ध प म प ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म प ध सां नि ध प म प ध प ग रे सा

## राग मेघ

मेघः पूर्णो धत्रयस्स्यान्निगौ कोमलसंज्ञितौ ।
मतीव्रो यत्र वै प्रोक्तश्शास्त्रविद्भिर्विचक्षणैः ॥३१॥

सरगम – ध नी स रे ग म प ध स ध प म प रे म रे स ध स रे स म प
म म रे स रे स रे स प ध स ध प ध स रे ध स ध प म म प म प म रे
सा ॥३१॥

मूलार्थ

मेघ राग एक पूर्ण राग है। इसमें तीन प्रकार के ध का (कोमल, शुद्ध, तीव्र) नी ग कोमल मं तीव्र का प्रयोग होता है। शास्त्रकारों ने इसे इसी प्रकार स्वीकार किया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

ध़ नी़ सा रे ग मं प ध सां ध प मं प रे मं रे सा ध़ सा रे सा मं प मं मं रे
सा रे सा रे सा प ध सां ध प ध सं रें ध सां ध प मं मं प मं रे सा

विवृति

इस राग में ग्रन्थकार ने तीन प्रकार का ध माना है जो सामान्य तथा कोमल शुद्ध तथा तीव्र माना जाना चाहिये। यद्यपि उत्तर भारतीय पद्धति में तीव्र ध नहीं है फिर भी उन्नीसवीं श्रुति में इसका निर्धारण कथमपि किया जा सकता है। नी ग कोमल मं तीव्र के प्रयोग से यह दश थाटों के अन्तर्गत नहीं है। दक्षिण भारतीय पद्धति में इसे हेमवती थाट के अन्तर्गत रख सकते हैं। सरगम या लक्षण में इसके वादी संवादी स्वर तथा जाति के विषय में नहीं बताया गया, जिसका निर्धारण सरगम से ही करना चाहिए। सरगम में नि का अत्यल्प प्रयोग होने से इसे विवादी स्वर कह सकते हैं वादी स्वर ध

संवादी रे है। आरोह में निषाद अवरोह नि ग के वर्जित रहने पर जाति षाडव औडव होती है। गायन-वादन का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। इसका गायन-वादन वर्षाकाल में सभी समय में किया जा सकता है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ध़ नि़॒ सा रे ग॒ म॑ प ध सां
अवरोह – सां ध प म॑ प रे म॑ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ नि़॒ सा रे ग॒ म प ध प म॑ प रे म॑ रे सा

सम्प्रति मेघ राग का जो स्वरूप प्रसिद्ध है उसका विवरण इस प्रकार है –

राग मेघ का थाट काफी है। वादी स्वर प तथा संवादी प है। आरोह, अवरोह में ग ध वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। नि॒ कोमल, शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म रे सा नि़॒ प़ नि़॒ सा रे म रे प नि॒ सां नि॒ प रे म रे म प म रे सा

*संगीत सागर* में यह सम्पूर्ण जाति के रूप में भी व्याख्यात है जिसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि॒ नि नि॒ ध प रे म ग रे म रे सा
थाट – खमाज

## राग मल्हारी

मल्हारी सपहीना स्यान्निवर्ज्या कैश्चिदीरिता ।
धादिमा वाडवा ज्ञेया सम्पूर्णौडवषाडवा ।।
चतुर्विधा सा निरुक्ता गानशास्त्रविशारदैः ।।३२।।

सरगम – ध नी स रे म प ध प ध प स रे स ध प स ग रे स रे रे प म
ग रे स रे रे स ध ध म ध स रे म ग रे स ध रे सा ॥३२॥

मूलार्थ

राग मल्हारी सा प स्वर से हीन है। कुछ आचार्य केवल नि स्वर को वर्जित मानते हैं। इसका आदि स्वर ध है। गानशास्त्र विशारद विद्वज्जन इसे वाडव, षाडव, सम्पूर्ण तथा औडव भेद से चार प्रकार का जानना चाहिये, ऐसा कहते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

ध़ ऩी सा रे म प ध प ध प सां रें सां ध प सा ग रे सा रे प ग रे सा रे रे
सा ध ध म ध सा रे म ग रे सा ध़ रे सा

विवृति

इसके विवेचन में ग्रन्थकार इसे सा प से हीन भी बतलाते हैं, जो कि राग के स्वरूप के अनुरूप नहीं है। किसी भी राग में स तथा प दोनों एक साथ वर्जित नहीं रह सकते। किन्तु सा का अभाव तो सम्भव नहीं है। किसी-किसी राग में अल्प प्रयोग अवश्य माना जाता है किन्तु वर्जित नहीं। इसलिये निवर्ज्या कैश्चिदीरिता इस कथन से ये मुख्य अपना ही मत दिखलाते हैं। इस राग को वाडव, षाडव, सम्पूर्ण तथा औडव जाति से चार प्रकार का स्वीकार किया है। किन्तु वाडव जाति का स्पष्टीकरण अभी तक इन्होंने या आधुनिक ग्रन्थकारों ने कहीं नहीं किया। इस राग का सरगम विवेचन की दृष्टि से इस प्रकार किया जा सकता है –

इसका थाट बिलावल है। वादी स्वर ध तथा संवादी रे है। आरोह में रे नि तथा अवरोह में नि वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। नि का विवादी स्वर के रूप में इस राग में भी प्रयोग होता है। सभी शुद्ध स्वरों का प्रयोग हुआ है। गायन-वादन का समय वर्षाकाल सर्वदा अन्य समयों में रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध प सां
अवरोह – सां रें सां ध प सा ग रे सा प ग रे सा ध म सा रे म ग रे सा ध़ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ ऩी सा रे म प ध प सां रें सां ध प ध म सा रे म ग रे सा ध़ रे सा

सम्प्रति मल्हारी राग मल्हार नाम से प्रसिद्ध है जिसका विवरण तथा मल्हार के कुछ प्रमुख प्रभेदों का विवरण इस प्रकार है –

| उत्तर भारतीय मल्हार के भेद | दक्षिण भारतीय मल्हार के भेद |
|---|---|
| (१) मल्हार | (१) गौड़मल्हार |
| (२) गौड़मल्हार | (२) मेघमल्हार |
| (३) जयन्तमल्हार | (३) मोहनमल्हार |
| (४) नटमल्हार | (४) रीतिमल्हार |
| (५) नटमल्हारी | (५) सामंतमल्हार |
| (६) मियाँमल्हार | (६) सुरटिमल्हार |
| (७) मीरामल्हार | |
| (८) मेघमल्हार | |
| (९) रामदासीमल्हार | |
| (१०) साभेरीमल्हार | |
| (११) सूरमल्हार | |
| (१२) सोरठमल्हार | |

(१) मल्हार – इस राग का थाट खमाज है। वादी स्वर सा संवादी ध है। इसमें दोनों नी का प्रयोग होता है। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म ग म प ध नि॒ नि नि॒ ध प ध प म ग रे ग रे सा

(२) गौड़मल्हार – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर म संवादी सा है। दोनों ग नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में ग नि अवरोह ध वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। कुछ आचार्य इसे सम्पूर्ण जाति का भी राग मानते हैं। गायन-वादन का समय वर्षाकाल तथा रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ प म प ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध सां नि॒ प म प ग॒ म रे

सम्पूर्ण जाति में आरोह – सा रे ग म प ध नि_ नि सां
अवरोह – सां नि नि_ ध प म ग रे सा

(३) जयन्तमल्हार – इस राग का थाट काफी है। दोनों ग नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति वक्र सम्पूर्ण है। वादी रे तथा संवादी प है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य रूप इस प्रकार है –

आरोह – सा म रे प, म प नि_ ध नि सां
अवरोह – सां ध नि_ म, प प म ग रे ग_ रे सा, नि़ सा ध़ नि़_ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा, रे सा नि़ सा ध़ नि़_ रे, म ग म ग_ म रे सा

(४) नटमल्हार – इसका थाट काफी है। वादी म संवादी सा है। दोनों ग तथा नि तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय वर्षाकाल तथा रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म रे ग म प नि_ ध सां
अवरोह – सां नि ध नि_ प ग ग_ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म रे ग म प नि_ ध सां नि_ ध नि_ प म ग_ म रे

(५) नटमल्हारी – *संगीत सागर* के रागकोष में इसका विवरण मात्र आरोह-अवरोह में है जिसके अनुसार यह खमाज थाट का माना जा सकता है। जाति सम्पूर्ण है, दोनों नि का प्रयोग होता है। वादी म तथा संवादी सा माना जा सकता है। गायन-वादन का समय वर्षाकाल है। इसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि_ नि सां
अवरोह – सां नि नि_ ध प म ग रे सा

(६) मियाँमल्हार – इस राग का थाट काफी है। इसका वादी स्वर सा, संवादी म है। अवरोह ध के वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण षाडव है। इस राग में कोमल ग_ दोनों नि का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म रे प ग_ ग_ म रे सा म रे प नि_ ध नि सां
अवरोह – सां नि_ प म प ग_ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म रे प ग_ ग_ म रे सा नि़_ ध़ नि़ सा।

(७) मीरामल्हार – इस राग का थाट काफी है। वादी म तथा संवादी सा है। ग ध नि दोनों तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा रे ग॒ म प नि॒ ध नि सां
अवरोह – सां ध॒ नि॒ प म प ग म रे नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ग॒ म प नि॒ ध नि सा ध॒ नि॒ प म प ग म रे नि़ सा

(८) मेघमल्हार – इस राग का थाट काफी है। वादी सा संवादी प है। इसमें दोनों नि का प्रयोग होता है। ध ग के वर्जित होने से जाति औडव है। गायन-वादन का समय वर्षाकाल तथा मध्यरात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म रे प म प नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि॒ प म रे म नि़ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म रे प म प नि॒ नि़ सां नि॒ प म रे प म नि़ रे सा

(९) रामदासीमल्हार – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर म संवादी सा है। दोनों ग नि और शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि तथा वर्षाकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे प म ग म प नि॒ ध नि॒ प नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध नि॒ प ध प म ग म, प ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध प म ग म प ग॒ ग॒ म रे सा

(१०) साभेरीमल्हार – इस राग का थाट बिलावल है। वादी स्वर ग संवादी सा है। आरोह में ग, ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि ध प म ग रे

(११) सूरमल्हार – इस राग का थाट काफी है। आरोह में ग ध और अवरोह में ग वर्जित होने से जाति औडव, षाडव है। इसमें दोनों नी का प्रयोग है। वादी स्वर म

संवादी सा है। गायन-वादन का समय मध्याह्नकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि̱ प म प नि̱ ध प म ऽ रे नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सां म रे प म नि̱ म प नि̱ ध प म रे सा

(१२) सोरठमल्हार – इस राग का थाट खमाज है। वादी म संवादी सा है। इसमें दोनों नि का प्रयोग होता है। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि̱ नि सां
अवरोह – सां नि नि̱ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग, म रे प ध नि̱ नि सां नि नि̱ ध प म ग रे सा।

दक्षिण भारतीय मल्हार रागों के प्रकार –

(१) गौड़मल्हार – इस राग का थाट (मेल) धीर शंकराभरण है। वादी ग संवादी स़ है। आरोह ग ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध सां नि ध प म रे प म ग रे सा

(२) मेघमल्हार – इस राग का थाट (मेल) रामप्रिय है। वादी म संवादी सा है। आरोह में रे वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। मं तीव्र रे̱ नि̱ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग मं प ध नि̱ सां
अवरोह – सां नि̱ ध प मं ग मं रे̱ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग मं प ध नि̱ ध प मं ग मं रे̱

(३) मोहनमल्हार – इस राग का थाट (मेल) कनकांगी है। इसका वादी स्वर म संवादी सा है। आरोह प वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है; नि का प्रयोग वक्र है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसमें रे̱ कोमल ग̳ नि̳ अति कोमल स्वर का

प्रयोग होता है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म ध नि॒ ध सां
अवरोह – सां ध नि॒ ध प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध नि॒ ध सां ध नि॒ ध प म

(४) रीतिमल्हार – इस राग का थाट (मेल) रसिक प्रिय है। वादी स्वर सा, संवादी प है। आरोह में ध नि अवरोह में वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। इसमें रे म॑ तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि या वर्षाकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॑ ग म॑ प सां
अवरोह – सां नि प ध नि प म॑ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॑ ग म॑ प सां नि प ध नि प म॑ ग सा

(५) सामन्तमल्हार – इस राग का थाट (मेल) सूर्यकान्त है। वादी म संवादी सा है। इसमें रे॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प ध म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प नि प ध ग ग रे॒

(६) सुरटिमल्हार – इस राग का थाट (मेल) गानमूर्ति है। वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें रे॒ कोमल ग॒ अति कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ग ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म प नि ध प म ग॒ रे॒ सा

# राग देशकार

देशकारः सादिमः स्यात् सम्पूर्णः सर्वसम्मतः ।
निषादर्षभगांधारधैवता यत्र कोमलाः ॥३३॥

सरगम – स नी स स रे स नी ध ध नी स रे ग म ग रे स रे स नी ध ध
नी स रे स नी स नी ध ध नी स ॥३३॥

मूलार्थ

देशकार राग का आदि स्वर सा है। सम्पूर्ण जाति का यह राग सभी को मान्य है। इसमें रे ग ध नि कोमल स्वर माने जाते हैं। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा नी̣̱ सा सा रे̱ सा नी̣̱ ध̣̱ ध̣̱ नी̣̱ सा रे̱ ग̱ म ग̱ रे̱ सा रे̱ सा नी̱ ध̱ ध̱ नी सां
रें सां नी सां नी̱ ध̱ ध̱ नी̱ सां

विवृति

देशकार राग में आदि अर्थात् वादी स्वर सा है अतः वादी स्वर म को स्वीकार करना चाहिए। इसे सम्पूर्ण जाति का तो कहा गया है किन्तु सरगम में प का प्रयोग नहीं दिखाया गया। इससे यह प्रतीत होता है कि पञ्चम का प्रयोग अल्प है। ग्रन्थ के प्रतिपादन के आधार पर इसका स्वरूप इस प्रकार है –

थाट – भैरवी
आरोह – सा रे̱ ग̱ म प ध̱ नि̱ सां
अवरोह – सां नि̱ ध̱ प म ग̱ रे̱ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि̣̱ स रे̱ सा नि̣̱ ध̣̱ ध̣̱ नि̣̱ सा रे̱ ग̱ म ग̱ रे̱ सा
गायन-वादन समय – प्रातःकाल

सम्प्रति देशकार का यह स्वरूप कहीं भी प्रसिद्ध नहीं है। देशकार इस समय बिलावल थाट में औडव जाति का राग है जिसका वादी ध संवादी ग है। म नि वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग प ध ध प ग रे ग प ध ध प

## राग भूपाली

भूपाली मनिवर्जा तु मवर्जा वा निवर्जिता ।
गनीतीव्राथवा प्रोक्ता धैवतर्षभकोमला ।।
षड्विधा गानकुशलैः सम्पूर्णादिप्रभेदतः ।।३४।।

सरगम – ग प ध स रे ग प ध स ग ग प प ध ध प ध ध प प ध प ध
स प ध स स ध प ग रे स ।।३४।।

मूलार्थ

भूपाली राग में म नी स्वर वर्जित हैं। कुछ आचार्यों के मत में प म को केवल वर्जित करके अथवा केवल नि को वर्जित करके इस राग को माना जाता है। ग नी तीव्र अथवा रे ध कोमल इस राग में कहा गया है। इस प्रकार गानविद्या में कुशल विद्वान् इस राग को सम्पूर्ण षाडव-औडव आदि भेद से छः प्रकार का मानते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

ग प ध सां रे ग प ध सा ग ग प प ध ध प ध ध प प ध प ध सां प़ ध़
सा सां ध प ग रे सा

विवृति

ग्रन्थ में भूपाली राग को सर्वप्रथम औडव जाति का ही राग माना है जो सम्प्रति माना जाता है। पश्चात् म वर्जित करके अथवा नि वर्जित करके षाडव जाति का माना है। तदनन्तर सम्पूर्ण जाति के दो भेद स्वीकार किये हैं। प्रथम गं नीं तीव्र दूसरा रे॒ ध॒ कोमल। और एक भेद सम्भवतः शुद्ध स्वर वाला सम्पूर्ण जाति का राग माना है। यद्यपि उत्तर भारतीय पद्धति में गं नीं तीव्र नहीं माने जाते तथापि एक-एक श्रुति ऊपर करने पर अर्थात् ग को आठवीं श्रुति के स्थान पर नवमी तथा नि को इक्कीसवीं की जगह बाइसवीं श्रुति में मानना पड़ेगा। इस राग का विवरण इस प्रकार है –

यह राग बिलावल थाट का है। जाति औडव-औडव है। विवादी स्वर मध्यम है। वादी स्वर ग संवादी स्वर ध है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग प ध ध प ध सां ध प म ग रे ग प ग रे सा

राग भूपाली का सम्प्रति जो स्वरूप है वह इस प्रकार है –

इस राग का थाट कल्याण है। वादी स्वर ग संवादी ध है। विवादी स्वर कोई नहीं है। जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ सां ग रे ग प ध प ग रे ध़ सा

कर्नाटक पद्धति में इस राग के कई प्रभेद हैं। जो इस प्रकार हैं –

| | |
|---|---|
| (१) भूपाल | (४) वसन्तभूपाल |
| (२) गगनभूपाल | (५) सोमभूपाल |
| (३) नागभूपाल | (६) हंसभूपाल |

(१) भूपाल – इसका थाट (मेल) हनुमत तोड़ी है। वादी ग संवादी ध है। जाति औडव-औडव है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प ध सां
अवरोह – सां ध प ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ध़ सा रे॒ ग॒ प ध प ग॒ रे॒ ध़ सा

(२) गगनभूपाल – इस राग का थाट (मेल) कीरवाणी है। वादी स्वर म संवादी सा है। आरोह में रे तथा अवरोह में प वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। इस राग में ग॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग॒ म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग॒ म प ध॒ नि ध॒ म ग॒ रे
स्वर – ग॒ नि॒ कोमल शेष शुद्ध

(३) नागभूपाल – इस राग का थाट (मेल) गौरी मनोहरी है। वादी स्वर सा संवादी स्वर म है। कोमल ग॒ तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। प ध स्वर के वर्जित होने से जाति

औडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म नि सां
अवरोह – सां नि म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म नि म ग रे सा

(४) वसन्तभूपाल – इस राग का थाट (मेल) रत्नाङ्गी है। इसका वादी स्वर रे संवादी प है। इसमें रे नि कोमल ग अति कोमल स्वर प्रयुक्त होते हैं। आरोह में ग वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ग प ध नि ध प म ध म ग रे

(५) सोमभूपाल – इस राग का थाट (मेल) नागानंदिनी है। इसमें ध तीव्र शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर म संवादी सा है। आरोह में ग नि के वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प म धं सां
अवरोह – सां धं नि प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प म धं सां धं नि प म ग रे

(६) हंसभूपाल – इस राग का थाट (मेल) वरुणप्रिय है। इसमें ग कोमल धं तीव्र शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। वादी स्वर सा संवादी प है। आरोह में ध नि तथा अवरोह में रे वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प सां
अवरोह – सां नि धं नि प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प सां नि धं नि प म ग सा

# राग गुर्जरी

गुर्जरी द्विविधा प्रोक्ता दक्षिणादिप्रभेदतः ।
निगधाः कोमला यत्र रिषभश्चात्र कोमलः ।।
मस्तु तीव्रतरः प्रोक्तः सम्पूर्णा सर्वसम्मता ।।३५।।

सरगम – रे रे रे रे रे ग ग प म ग म म ध ध ध म ग रे सा सा सा रे रे
रे रे प प प म म ग म ध ध रे ग ग रे सा ।।३५।।

मूलार्थ

दक्षिण आदि भेद से गुर्जरी राग दो प्रकार का माना जाता है। इसमें रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग सभी को मान्य है। इसकी सरगम इस प्रकार हैं –

रे॒ रे॒ रे॒ रे॒ रे॒ ग॒ ग॒ प म॑ ग॒ म॑ म॑ ध॒ ध॒ ध॒ म॑ ग॒ रे॒ सा सा सा रे॒ रे॒ रे॒ रे॒ प प
प म॑ म॑ ग॒ म॑ ध॒ ध॒ रे॒ ग॒ ग॒ रे॒ सा।

विवृति

ग्रन्थकार ने "दक्षिणादिप्रभेदतः" कहकर दक्षिण तथा उत्तर भेद से दो प्रकार का माना है। म॑ तीव्र तथा रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल प्रयुक्त होने यह तोड़ी थाट का राग है। यह सम्पूर्ण जाति का है, ऐसा ग्रन्थकार ने कहा है। परन्तु जिस सरगम का प्रदर्शन ग्रन्थ में है वह षाडव जाति का है उसमें नि का प्रयोग नहीं हुआ। यद्यपि इसके वादी स्वर के विषय में कोई चर्चा नहीं है। तथापि सरगम की दृष्टि से रे॒ वादी ध॒ संवादी माना जा सकता है। क्योंकि ग्रन्थकार सरगम का प्रारम्भ उसी स्वर से करते हैं जो राग का आदि (वादी) स्वर होता है। इस राग का प्रारम्भ रे से होने से रे ही वादी स्वर निश्चित होता है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प ग॒ म॑ ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म॑ ग प म॑ ध॒ रे॒ ग॒ ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ प ग॒ म॑ ध॒ नि॒ ध॒ म॑ ग॒ प म॑ ध॒ रे॒ ग॒ ग॒ रे॒ सा

सम्प्रति गुर्जरी राग का स्वरूप ग्रन्थस्थ गुर्जरी से कुछ भिन्न है। यह भी तोड़ी का ही है। इसमें रे॒ ग॒ ध॒ कोमल दोनों मध्यम का प्रयोग है। यह सम्पूर्ण जाति का है। वादी

स्वर ध संवादी ग है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म मं ध नि ध प मं म ग रे ग रे सा

गुर्जरी राग से गुर्जरी तोड़ी अधिक प्रसिद्ध है जिसका स्वरूप इस प्रकार है – इस राग का थाट तोड़ी है इसमें रे ग ध कोमल तीव्र मं का प्रयोग होता है। पञ्चम वर्जित होने से षाडव-षाडव जाति है। वादी ध संवादी रे है। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं ध नि सां
अवरोह – सां नि ध मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि ध मं ग रे ग रे सा

## राग टंक (उत्तर भारतीय)

टंकः साद्यः स्वरैः पूर्णो रिगौ यत्र च कोमलौ ।
मस्तु तीव्रतरः प्रोक्तो गानशास्त्रविशारदैः ॥३६॥

सरगम – स रे ग म प ध स प ग रे स नी ध प ध ध ध ध प म प प म ग रे स नी स रे नी नी स नी ध प ध ध ध म म प म प प ग रे स प नी स ग रे ग म ग रे स नी स रे स नी स नी स नी ध प ग म प म म ग रे स ॥३६॥

मूलार्थ

राग टंक का आदि स्वर सा है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें रे ग कोमल तथा मध्यम तीव्रतर है। ऐसा गानशास्त्र के तत्त्ववेत्ता विद्वानों ने कहा है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा रे ग मँ प ध सां प ग रे सा, नी ध प ध ध ध ध प मँ प प मँ ग रे सा ऩी सा रे ऩी ऩी सा नी ध प ध ध ध मँ मँ प मँ प मँ ग रे सा प़ ऩी सा ग रे ग मँ ग रे सा ऩी सा रे सा ऩी सा, ऩी सा, नी ध प ग मँ प मँ मँ ग रे सा।

विवृति

ग्रन्थकार ने राग टंक में आदि अर्थात् वादी स्वर सा माना हैं। अतः सरगम की दृष्टि से इसका संवादी प होना चाहिये। रे॒ ग॒ कोमल है म॑ तीव्रतर है। दोनों ही संगीत पद्धतियों में मध्यम यद्यपि तीव्रतर नहीं है, अतः इसे तीव्र मध्यम से कुछ ऊँचा तेरहवीं श्रुति में इसका स्थान जानना चाहिए। थाट की दृष्टि से इसे राग तोड़ी थाट के अन्तर्गत मान सकते हैं किन्तु दक्षिण भारतीय पद्धति के सुवर्णाङ्गी मेल (थाट) में मानना अधिक उचित है। इसके गायन-वादन का समय दिन का तृतीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ मँ॑ प ध॒ प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प ध॒ मँ॑ प ग॒ मँ॑ प रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि ध॒ प ध॒ मँ॑ प ग॒ मँ॑ प ग॒ रे॒ सा नि़ स रे॒ सा

सम्प्रति यह राग 'टंकी' नाम से प्रसिद्ध है। इसके अन्य सम्प्रति प्रमुख भेद इस प्रकार हैं –

(१) टंकी
(२) सौराष्ट्र टंक
(३) श्रीटंक

(१) दक्षिण भारतीय पद्धति में टंक्क राग

(१) टंकी – इस राग का थाट पूर्वी है। वादी स्वर प संवादी रे॒ है। रे॒ ध॒ कोमल तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। आरोह में मध्यम का अत्यल्प प्रयोग होने से यह लगभग आरोह में विवादी स्वर माना जाता है। इसलिए इसे सम्पूर्ण जाति का माना जाता है। अन्यथा षाडव-सम्पूर्ण जाति का माना जायेगा। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग प ध॒ प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग प ध॒ प नि ध॒ प म॑ ग प ग रे॒ सा

(२) सौराष्ट्र टंक – इस राग का थाट भैरव है। म वादी तथा सा संवादी है। रे॒ कोमल तथा दोनों ध का प्रयोग होता है। जाति सम्पूर्ण है। आरोह में नि का अत्यल्प प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प म ध सां

अवरोह – सां नि ध म नि ध प म ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प म ध सां नि ध म नि ध प म ग रे सा

(३) श्री टंक – यह राग पूर्वी थाट का है। इसका वादी स्वर प संवादी रे है। आरोह में म वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। इसमें रे ध कोमल तीव्र मध्यम शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म॑ ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग प ध नि ध प म॑ ग रे

दक्षिण भारतीय पद्धति में सम्प्राप्त टक्क राग पृथक् है जिसका इसके साथ कथमपि साम्यता नहीं है। इसका सम्प्राप्त विवरण इस प्रकार है —

आरोह – सा ग म प म ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा

थाट – धेनुका, जाति – षाडव-सम्पूर्ण, वादी-संवादी – म, सा

गायन समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर

## राग त्रिवण

त्रिवण: पविहीन: स्याद् रिधौ यत्र च कोमलौ ।
सम्पूर्ण: कैश्चिदित्युक्त: षाडव: सर्वसम्मत: ।।३७।।

सरगम – स रे ग म ध ध नी स स नी ध ग रे ग रे स स ग रे ग म म
ग रे स नी स रे ग म म रे ग स ध म म म ग रे स ध म ग रे स, वा स
रे ग म प ध नी स नी नी ध ग रे ग रे स स रे ग म ग प ग रे स नी स
रे ग म प ग रे स ध प प म ग रे स ध प ग रे स ।।३७।।

मूलार्थ

त्रिवण राग में प वर्जित है। इसामें रे ध कोमल हैं। कुछ आचार्य इसे सम्पूर्ण जाति का

और कुछ आचार्यों के अनुसार इसकी षाडव जाति ही सर्वसम्मत है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा रे॒ ग म ध॒ ध॒ नी सां सां नी ध॒ ग रे॒ ग रे॒ सा सा ग रे॒ ग म म ग रे॒ सा
ऩी सा रे॒ ग म म रे॒ ग म ध॒ म म म ग रे॒ सा ध म ग रे॒ सा

अथवा – सा रे॒ ग म प ध॒ नी सां नी नी ध॒ ग रे॒ ग रे॒ सा सा रे॒ ग म ग प
ग रे॒ सा ऩी सा रे॒ ग म प ग रे॒ सा, ध॒ प प म ग रे॒ सा ध॒ प ग रे सा

विवृति

ग्रन्थकार ने इस राग के दो भेद बतलाये। पहला षाडव जाति का दूसरा सम्पूर्ण जाति का। वादी स्वर का उल्लेख नहीं है किन्तु सरगम की दृष्टि से ध॒ वादी रे॒ संवादी मानना उचित दिखाई देता है। थाट भैरव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

(१) आरोह – सा रे॒ ग म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म ध॒ ध॒ नि ध॒ ग रे॒ ग म ध म ग रे॒ सा

(२) आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध ग रे॒ ग म ग प ग रे॒ सा ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म ग प ग रे॒ ग म प ध॒ नी ध॒ ग रे सा

सम्प्रति त्रिवण नाम से तो कोई राग प्रसिद्ध नहीं है। पर इससे कुछ समानता त्रिवेणी राग में है जिसका विवरण इस प्रकार है –

त्रिवेणी राग का थाट पूर्वी है। इसका वादी स्वर रे संवादी प है। म वर्जित होने से जाति षाडव है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ सा ग प ग रे॒ सा रे॒ प ध॒ प नि ध॒ सां
अवरोह – सां नि ध॒ प ग प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ रे॒ सा ग प ग रे॒ सा रे॒ प ध॒ प नि ध॒ सां नि ध॒ प ग प ग रे॒ सा

## राग गौड़

गौडः पूर्णः सदिमश्च शुद्धतीव्रमसंयुतः ।
रिहीनो वा धहीनश्च उभाभ्यां वर्जितोऽथवा ॥
त्रिविधोऽयं समुदितस्सम्पूर्णौडवषाडवैः ॥३८॥

सरगम – स रे म म प ध म ग म प ध स नी प ध प म म प म ग रे रे
ग रे स ध स रे म म ध नी ध प म प म ग रे ग म ग रे स ॥३८॥

मूलार्थ

गौड़ राग सम्पूर्ण जाति का है। इसका आदि स्वर सा है। इसमें शुद्ध तीव्र दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इस राग का रे अथवा ध वर्जित अथवा दोनों वर्जित स्वरूप भी माने जाते हैं। इस प्रकार यह राग सम्पूर्ण, षाडव और औडव तीनों रूपों में प्राप्त होता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा रे म म॑ प ध म ग म॑ प ध सां नी प ध प म॑ म॑ प म ग रे रे ग रे सा
ध़ सा रे म म॑ ध नी ध प म॑ प म ग रे ग म ग रे सा

विवृति

ग्रन्थकार ने इस राग को सम्पूर्ण जाति का, रे अथवा ध वर्जित करके षाडव जाति का, दोनों को वर्जित करके औडव जाति का राग माना है। इसका वादी स्वर स के होने से संवादी स्वर म है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म म॑ प ध म ग म॑ ध नि सां
अवरोह – सां नि प नि ध प म॑ प म ग रे ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ सा रे म म॑ प ध म ग म॑ प ध नि ध प म॑ प म ग रे।
थाट – कल्याण

सम्प्रति गौड़ राग काफी थाट के अन्तर्गत है। इसका वादी स्वर म संवादी सा है। आरोह में नि वर्जित होने से जाति षाडव-सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म रे सा ऩि सा ग॒ म रे प म प ध रें सां
अवरोह – सां नि॒ ध नि॒ म प ग॒ म रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – म रे सा नि़ ग॒ म रे प ध नि प म प ग॒ म रे सा

गौड़ राग के अन्य प्रभेदों का विवरण इस प्रकार है –

**उत्तर भारतीय गौड़ के भेद**

**देश गौड़** – इस राग का थाट भैरव है। वादी स्वर रे संवादी प है। ग म स्वर वर्जित होने से जाति औडव है। रे॒ ध॒ कोमल शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ सा प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प सा रे॒ सा म
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ सा प ध॒ नि ध॒ प सा रे॒ सा

**दक्षिण भारतीय गौड़ के भेद –**

| | |
|---|---|
| (१) गौड़ | (७) देश्यगौड़ |
| (२) ईशगौड़ | (८) पूर्वगौड़ |
| (३) कन्नड़गौड़ | (९) भानुगौड़ |
| (४) केदारगौड़ | (१०) मारुवगौड़ |
| (५) चन्द्रिकागौड़ | (११) रीतिगौड़ |
| (६) छायागौड़ | (१२) सैन्धवगौड़ |

**(१) गौड़** – इस राग का थाट (मेल) मायामालवगौड़ है। वादी स्वर म संवादी सा है। ध स्वर वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। इसमें रे॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म रे॒ म प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग म रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म रे॒ म प नि प म ग म रे॒ सा

**(२) ईशगौड़** – इस राग का थाट (मेल) सेनावती है। वादी स्वर ध संवादी ग है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल नि॒॒ अति कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह रे तथा अवरोह नि वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग॒ म प ध नि॒ सां

अवरोह – सां ध प ध म ग॒ रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग॒ म प ध नि॒ सां ध प ध म ग॒ रे॒

(३) कन्नड़गौड़ – इस राग का थाट (मेल) खरहरप्रिय है। इसका वादी स्वर ग संवादी नि है। ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ध अवरोह में रे स्वर वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प नि॒ सां

अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प नि॒ ध प म ग॒ सा

(४) केदारगौड़ – इस राग का थाट (मेल) हरिकाम्भोजी है। वादी स्वर सा संवादी म है। आरोह में ग ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। इसमें नि॒ कोमल तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि॒ सां

अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि॒ ध प म ग रे सा

(५) चन्द्रिकागौड़ – इस राग का हनुमत्तोडी थाट (मेल) है। वादी स्वर सा संवादी स्वर प है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। आरोह में नि अवरोह ग नि वर्जित होने से जाति षाडव-औडव है। इसके गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प प ध सां

अवरोह – सां ध प म रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म प ध प म रे॒ म रे॒ सा

(६) छायागौड़ – इस राग के कर्नाटक संगीत में दो रूप प्राप्त होते हैं। एक का थाट (मेल) गानमूर्ति है। दूसरे का मायामालवगौड़ (मेल) थाट है। पहले का वादी संवादी स्वर रे ध है। रे॒ ध॒ कोमल ग॒ (6 श्रुति) अति कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय प्रात:काल है। दूसरे का सा प वादी संवादी है रे॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-

वादन का समय प्रात:काल है। दोनों का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

(१) गान मूर्ति थाट

आरोह – सा रे ग रे म प ध नि सां
अवरोह – सां ध नि प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि सां ध नि प म ग रे

(२) मायामालव थाट

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि ध प म ग रे ग रे सा

(७) देश्यगौड़ – इस राग का थाट (मेल) मायामालवगौड़ है। वादी स्वर सा, संवादी प है। ग म स्वर वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। रे ध कोमल शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे सा प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प सा रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे सा प ध नि ध प सा रे सा

(८) पूर्वगौड़ – इस राग का थाट (मेल) धीरशङ्कराभरण है। वादी स्वर सा संवादी म है। इसमें ध कोमल तथा शेष शुद्ध स्वर हैं। जाति सम्पूर्ण है। आरोह में कुछ चलन वक्र है। इसके गायन-वादन का समय सायंकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म ग रे म प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ग रे म प नि ध नि ध प म ग रे

(९) भानुगौड़ – इस राग का थाट (मेल) सेनावती है। इसमें वादी ध संवादी ग है। जाति सम्पूर्ण है। इस राग का चलन मन्द्र तथा मध्य सप्तक में ही है। तार सप्तक में चलन अत्यल्प है। इसमें रे ग कोमल नि अति कोमल है। शेष स्वर शुद्ध हैं। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ध़ सा रे॒ ग॒ म प ध नि॒
अवरोह – ध प म ग॒ रे॒ सा नि़॒ ध़ प़
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ सा रे॒ ग॒ प ध नि॒ ध म ग॒ रे॒ सा नि़॒ ध़ प़

(१०) मारुवगौड़ – इस राग का थाट (मेल) गवाम्भोधि है। इसका वादी स्वर सा संवादी प है। इसमें मं तीव्र तथा शेष स्वर कोमल हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प मं ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प मं ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ प मं ध॒ नि॒ ध॒ प मं ग॒ रे॒

(११) रीतिगौड़ – इस राग का थाट (मेल) नटभैरवी है। वादी ग संवादी ध है। ग॒ ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर प्रयुक्त होते हैं। चलन वक्र है तथा जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का चतुर्थ प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ रे ग॒ म नि॒ ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म प ध॒ म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ रे ग॒ म नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ प म ध॒ म ग॒ रे

(१२) सैन्धवगौड़ – इस राग का थाट (मेल) सेनावती है। वादी स्वर सा और संवादी म है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल, नि॒ अति कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ म प ध नि॒ ध प म ग॒ म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा

## राग पहाडी

पहाडी रिपहीना स्यात् तीव्रशुद्धमसँय्युता ।
पहीना वा रिहीना वा सम्पूर्णा वा त्रिधा मता ।।३९।।

सरगम – स ग ध नी स नी ध ग म म ग स ग स ध नी स ध नी ग म ग
स ध नी स ग नी स ध ग म म स ग ग ध नी नी ध ग म ग ध नी स ग
ध नी ध ग म ग स ।।३९।।

मूलार्थ

राग पहाडी रे प से रहित शुद्ध तीव्र मध्यम से संयुक्त, प वर्जित अथवा रे वर्जित अथवा सम्पूर्ण भेद से औडव, षाडव, सम्पूर्ण रूप में तीन प्रकार का माना गया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा ग ध नी सां नी ध ग मं म ग सा ग सा ध नी सां ध नी ग म ग सा ध़
नी सा ग नी सां ध ग म म स ग ग ध नी नी ध ग म ग ध नी सां ग ध
नी ध ग ग ग सा

विवृति

इस राग के विवेचन में ग्रन्थकार ने रे प वर्जित, रे वर्जित, प वर्जित तथा सभी स्वरों का प्रयोग करके इस राग को औडव, षाडव, सम्पूर्ण तीनों जाति का माना है। किन्तु सरगम औडव जाति की दी है। स्वरों की दृष्टि से यह कल्याण थाट का माना जा सकता है। आदि स्वर का यद्यपि उल्लेख नहीं है तथापि सरगम की दृष्टि से सा वादी म संवादी माना जा सकता है। क्योंकि अधिकांशतया ग्रन्थकार सरगम का प्रारम्भ आदि स्वर से करते हैं। और इसमें क्योंकि सा से सरगम प्रारम्भ हुआ है, अत: आदि या वादी स्वर सा तदनुसार संवादी म है। गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग ध नि ध ग मं म ग ध नि सां
अवरोह – सां नि ध ग मं म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग ध नि ध ग मं म ग सा ध़ नि़ सा

सम्प्रति राग पहाडी बिलावल थाट का औडव जाति का राग विशेष रूप से प्रचलित है। यद्यपि इसमें म नि वर्जित हैं फिर भी अत्यल्प रूप में शुद्ध म नि का प्रयोग किया जा सकता है। विशेष रूप से भूपाली से बचाने के लिये कहीं कहीं इनका प्रयोग आवश्यक है। परन्तु अत्यल्प प्रयोग होने से ये लगभग वर्जित ही हैं। अतएव जाति औडव मानी जाती है। कुछ विद्वान् (*संगीत सागर*) सम्पूर्ण जाति का मानते हैं। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। दोनों प्रकारों का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

(१) आरोह – सा रे ग प ध सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ सा रे ग प ध प म प ध प ग रे सा

(२) आरोह – सा रे ग॒ ग ग प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग॒ ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ ग म प ध नि॒ नि ध प म ग॒ ग रे सा

## राग देवगिरि

धहीना देवगिर्युक्ता षाडवा सर्वसम्मता ॥४०॥

सरगम – स रे ग म प नी स स नी नी नी प म रे स स रे म प ध प म म म ग रे स स रे ग म प म ग रे स नी स स रे ग म प ध ध प म ग म प म म प ध प म म ग रे स ॥४०॥

### मूलार्थ

ध स्वर वर्जित षाडव जाति का देवगिरि राग सभी को मान्य है। इसकी सरगम इस प्रकार की है –

सा रे ग म प नि सां सां नी नी प म रे सा, सा रे म प ध प म म म ग रे सा, सा रे ग म प म ग रे सा ऩी सा सा रे ग म प ध ध प म ग म प म म प ध प म म रे सा

### विवृति

इस राग को धहीन बनाकर ग्रन्थकार ने षाडव जाति का माना है किन्तु ध का प्रयोग सरगम में प के बीच में कई स्थलों में दिखाया है। जिससे यह सम्पूर्ण जाति का राग बनता है। इसमें वादी स्वर का भी उल्लेख न होने से केवल सरगम की दृष्टि से ही वादी संवादी स्वर का निश्चय किया जा सकता है। सरगम में म स्वर तथा स स्वर अधिक प्रयुक्त हुए हैं। सरगम का प्रारम्भ स स्वर से है। अधिकतर रागों के सरगम का प्रयोग ग्रन्थकार आदि (वादी) स्वर से करते हैं। इससे इसका वादी संवादी सा म को ही मानना उचित ज्ञात होता है। पञ्चम स्वर भी मुख्य रूप से दिखाई पड़ता है। अत: संवादी के रूप में उसका ग्रहण किया जा सकता है। देवगिरि बिलावल में संवादी स्वर पञ्चम ही है किन्तु सरगम में प की अपेक्षा म का प्रयोग अधिक है स्वरों का स्वरूप भी उसी दृष्टि

से है। अतः म संवादी मानना यहाँ उचित है। इसके गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर माना जा सकता है। थाट बिलावल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध प म ग रे स

इसमें ध का प्रयोग यद्यपि ग्रन्थकार द्वारा प्रतिज्ञा वाक्य में वर्जित है जिससे यह षाडव जाति का राग बना है परन्तु सरगम में सम्पूर्ण जाति प्रकट हुई है। तथापि प के मध्य में धैवत का प्रयोग अपनी अत्यल्पता को ही बतलाता है। अतः षाडव जाति का राग ग्रन्थकार द्वारा स्वीकार किया गया। किन्तु चलन की दृष्टि से सरगम इसे षाडव सम्पूर्ण जाति का बनाती है।

सम्प्रति देवगिरि राग का स्वतन्त्र स्वरूप उतना प्रचार में नहीं है जितना देवगिरि बिलावल का है। परन्तु वह बिलावल का भेद कहा जायेगा न कि देवगिरि का।

*संगीत सागर* नामक पुस्तक में सम्पूर्ण जाति का बिलावल देवगिरि राग का उल्लेख है जिसका आरोह अवरोह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा

कर्नाटक पद्धति में देवगिरि राग प्रसिद्ध है जिसका संक्षेप में परिचय इस प्रकार है –

मेल थाट – धवलाम्वरी
आरोह – सा रे॒ म॑ प ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म॑ ग रे॒ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म॑ प ध॒ नि॒ ध॒ प म॑ ग रे ग सा
वादी संवादी – ग ध
समय – प्रातःकाल

## राग पञ्चम

पहीनो पञ्चमो ज्ञेयो रिहीनो वा धहीनकः ।

रिधौ वा कोमलौ ज्ञेयौ मतीव्रेण समन्वित:।।४१।।
षाडवौडवभेदेन चतुर्द्धा परिकीर्तित: ।

सरगम – स ग रे ग म ध नी स नी ध म ग स स ग म ध ध नी ध नी स
म ग स रे ध नी ध म स ग म ग स नी ध नी स स ।।४१।।

मूलार्थ

राग पञ्चम में प स्वर पूर्णतया वर्जित है। कुछ आचार्य रे को तो कुछ ध को वर्जित मानते है। रे॒ ध॒ कोमल तथा मं स्वर तीव्र प्रयुक्त होता है। इस प्रकार प तथा रे वर्जित होने से षाडव और प ध वर्जित होने से औडव जाति के होने से दो प्रकार, रे॒ ध॒ कोमल अथवा शुद्ध मानने पर दो प्रकार बनने से चार प्रकार का यह राग बनता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा ग रे॒ ग मं ध॒ नी सां नी ध॒ मं ग सा सा ग मं ध॒ ध॒ नी ध॒ नी सां मं गं
सां रें ध॒ नी ध॒ मं सा ग मं ग सा ऩी ध॒ ऩी सा सा

विवृति

ग्रन्थकार ने इस राग के चार भेद माने हैं परन्तु स्वयं पञ्चम वर्जित मं तीव्र रे॒ ध॒ कोमल षाडव जाति का भेद स्वीकार कर सरगम में दिखलाया है। यद्यपि वादी स्वर का उल्लेख नहीं है तथापि सा से सरगम का प्रारम्भ होने से सा म वादी संवादी माने जा सकते हैं। इसके गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे॒ ग मं ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ मं ग रे॒ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे॒ ग म ध॒ नि ध॒ म ग सा
थाट – मारवा

सम्प्रति पञ्चम राग का तथा उसके प्रभेदों उत्तर तथा दक्षिण पद्धति के रागों का विवरण इस प्रकार है –

| उत्तर भारतीय | दक्षिण पद्धति |
|---|---|
| (१) पञ्चम (भैरव थाट) | (१) पञ्चम राग |
| (२) पञ्चम (मारवा थाट) | (२) अमृतपञ्चम |
| (३) पञ्चम (मारवा थाट) | (३) आदिपञ्चम |

(४) कोकिला पञ्चमी
(५) रुद्र पञ्चम
(६) ललित पञ्चम

(४) कन्नडपञ्चम
(५) कोकिलपञ्चम
(६) गौड़पञ्चम
(७) दिव्यपञ्चम
(८) धौतपञ्चम
(९) नवनीतपञ्चम
(१०) नागपञ्चम
(११) पूर्णपञ्चम
(१२) भूपालपञ्चम
(१३) रम्यपञ्चम
(१४) ललितपञ्चम
(१५) हंसपञ्चम

उत्तर भारतीय

(१) पञ्चम – इसका थाट भैरव है। प स्वर वादी तथा संवादी सा है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल दोनों ग॒ तथा शेष शुद्ध स्वर प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म प ध॒ नि ध प म ग॒ रे॒ ग म ग॒ रे॒ सा।

(२) पञ्चम – इसका थाट मारवा है। वादी म संवादी सा है। दोनों मध्यम तथा दोनों रे का प्रयोग होता है। आरोह में रे प अवरोह में प वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म॑ ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म॑ म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे॒ ग म॑ ध नि ध म॑ म ग रे॒ सा

भातखण्डे जी की क्रमिक पुस्तकमाला में इसका दो प्रकार से आरोह अवरोह इस प्रकार है –

(१) आरोह – सा रे॒ ग ग म॑ ध नि सां

अवरोह – सां नि ध म॑ म ग रे॒ सा

(२) आरोह – सा रे॒ ग म म॑ प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म॑ म ग रे सा

(३) पञ्चम – इसका थाट मारवा है। म वादी संवादी सा है। इसमें कोमल रे॒ तथा दोनों मध्यम का प्रयोग होता है। आरोह में रे प तथा अवरोह में प के वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म म॑ ग म॑ ध नि ध सां

अवरोह – सां नि ध म॑ म ग म॑ ग रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा म म॑ ग म ध नि ध म॑ म ग म॑ ग रे

(४) कोकिला पञ्चमी – इस राग का थाट तोड़ी है। वादी ध संवादी ग है। रे॒ ग॒ ध॒ कोमल तथा तीव्र म॑ स्वर लगते है। आरोह में म॑ वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ प ध॒ नि सां

अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग॒ प ध॒ नि ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ सा

(५) रुद्र पञ्चम – इस राग का थाट चक्रवाक है। वादी ध संवादी ग है। रे॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे प अवरोह में प वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म नि॒ ध॒ सां

अवरोह – सां नि॒ ध म ग रे॒ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ सा

(६) ललित पञ्चम – इस राग का थाट भैरव है। म वादी तथा स संवादी है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल दोनों मध्यम शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में प वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ स ग म म॑ ग म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प ध॒ म॑ म प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ सा ग म म॑ ग म ध॒ नि ध॒ प ध॒ म॑ म प ग रे॒ सा

### दक्षिण भारतीय

(१) पञ्चम राग – इस राग का थाट (मेल) खरहरप्रिय है। वादी म संवादी सा है। ग॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ध म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ध म प नि॒ ध प म ग॒ रे सा

(२) अमृतपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) दिव्यमणि है। इसका वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल म॑ तीव्र ध॑ तीव्र (उनीसवीं श्रुति) तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। प वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग॒ म॑ ध॑ नि सां
अवरोह – सां नि ध॑ म॑ ग॒ सा रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म॑ ध॑ नि ध॑ म॑ ग॒ सा रे॒ सा

(३) आदिपञ्चम – इसका थाट (मेल) दिव्यमणि है। वादी प संवादी सा है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल म॑ तीव्र ध॑ तीव्र (उनीसवीं श्रुति) शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ग म वर्जित होने जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे प ध॑ नि सां
अवरोह – सां नि ध॑ नि प म॑ ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ प ध॑ नि ध॑ नि प म॑ ग॒ रे॒ सा

(४) कन्नडपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) चारुकेशी है। इसका वादी ग संवादी नी है। इसमें ध॒ नि॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध है। आरोह में ध अवरोह में रे वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि सां

अवरोह – सां नि ध नि प म ग सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प नि ध नि प म ग सा

(५) कोकिलपञ्चम – इसका थाट (मेल) झालक वराली है। वादी स्वर प संवादी सा है। इसमें रे ध कोमल ग अति कोमल (छठी श्रुति) तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसमें म वर्जित है तथा चलन मध्म सप्तक में ही अधिक है। गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – प़ ध़ नि़ सा रे ग रे

अवरोह – सां नि ध प ध नि़ सा

मुख्य स्वर समुदाय – प़ ध़ नि़ सा रे ग रे, ध प ध, नि़ सा

जाति – षाडव-औडव

(६) गौड़पञ्चम – इस राग का थाट (मेल) वरुणप्रिय है। वादी म संवादी सा है। इसमें ग कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ग ध तथा अवरोह में ध के वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां

अवरोह – सां नि प म ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि प म ग रे ग रे सा

(७) दिव्यपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) सरसांगी है। इसका वादी स्वर सा संबादी म है। इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह – सा नि ध प म ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे सा

(८) धौतपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) धातुवर्धिनी है। इसका वादी ग संवादी स है। इसमें रें तीव्र (छठवीं श्रुति) कोमल ग तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ध वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग॒ म प नि प सां
अवरोह – सां नि ध प म रें ग॒ म रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग॒ म प नि प सां नि ध प म रें

(९) नवनीतपञ्चम – इस राग का थाट वरुणप्रिय है। वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें कोमल ग॒ तीव्र ध॑ (उनीसवीं श्रुति) तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रे तथा अवरोह में ध ग वर्जित होने से जाति षाडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म ध॑ प ध॑ नि सां
अवरोह – सां नि प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म ध॑ प ध॑ नि प म रे सा

(१०) नागपञ्चम – इसका थाट (मेल) गौरी मनोहरी है। वादी स्वर म संवादी स्वर सा है। इसमें ग॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे ग तथा अवरोह नि प वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – स म प नि ध सां
अवरोह – सां ध म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म प नि ध सां ध म ग॒ रे सा

(११) पूर्णपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) मायामालवगौड़ है। इसका वादी ग तथा संवादी स्वर ध है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। तार सप्तक में चलन नहीं है। नि स्वर वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। इसके गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है – ,

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒
अवरोह – ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म प ध॒ प म ग रे॒ सा

(१२) भूपालपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) झालकवराली है। इसका वादी स्वर सा संवादी प है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल ग॒ अति कोमल म॑ तीव्र तथा नि स्वर शुद्ध है। तीनों सप्तक में चलन है। नि स्वर के आरोह में वर्जित होने से तथा अवरोह में ग नि स्वर वर्जित होने से इसकी जाति षाडव-औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ रे॒ ग॒ प म॑ ध॒ सां
अवरोह – सां प म॑ ध॒ म॑ सा रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ रे॒ ग॒ प म॑ ध॒ म॑ सा रे॒ सा

(१३) रम्यपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) माररंजनी है। इसका वादी स्वर ग संवादी स्वर ध है। चलन तीनों सप्तक में है। इसमें ध॒ कोमल नि॒॒ अतिकोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसमें अवरोह में सभी स्वर तथा अवरोह प नि वर्जित होने से इसकी जाति सम्पूर्ण औडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध॒ नि॒॒ सां
अवरोह – सां ध॒ म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध॒ नि॒॒ सां ध॒ म ग रे

(१४) ललितपञ्चम – इस राग का थाट (मेल) मायामालवगौड़ है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसके अवरोह में पञ्चम वर्जित है तथा अवरोह में इसका प्रयोग वक्र है। फलतः इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर म संवादी सा है। गायन-वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ म प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म ध॒ म प म ग रे॒ सा

(१५) हंसपञ्चम – इस राग का थाट कीरवाणी है। इसमें ग॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके आरोह में रे तथा अवरोह में प स्वर का प्रयोग न होने से जाति षाडव-षाडव है। इस राग का वादी स्वर ग॒ संवादी स्वर नि है। रात्रि का द्वितीय प्रहर इसके गायन-वादन के लिये उपयुक्त है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प नि ध॒ नि प सां
अवरोह – सां नि ध॒ म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग॒ म प नि ध॒ नि प सां नि ध॒ म ग॒

# राग मारश्री

मारश्री सादिमा ज्ञेया रिगकोमलसंयुता ।
मतीव्रेण समायुक्ता पूर्णोक्ता शास्त्रवेदिभि: ॥४२॥

सरगम – स ग म प नी नी ध ध प म ग म म प नी स स रे स नी प ध
प म ग म म प नी नी ध ध प म म ग रे स ॥४२॥

मूलार्थ

मारश्री राग में आदि स्वर सा है। इसमें रे॒ तथा ग॒ स्वर कोमल और म॑ स्वर तीव्र है। यह राग शास्त्रकारों के द्वारा सम्पूर्ण जाति का कहा गया है।

सा ग॒ म॑ प नी नी ध ध प म॑ ग म॑ म॑ प नी सां सां रे॒ं सां नी प ध प म॑ ग॒
म॑ म॑ प नी नी ध ध प म॑ म॑ ग॒ रे॒ सा

विवृति

मारश्री राग एक प्राचीन राग है। इसका उल्लेख न तो उत्तर भारतीय न ही दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में मिलता है। थाट की दृष्टि से उत्तर भारतीय दश थाटों में यद्यपि तोड़ी के कुछ निकट है परन्तु पूर्णतया मेल नहीं खाता। दक्षिण पद्धति में यह सुवर्णाङ्गी थाट (मेल) के साथ पूर्ण साम्यता रखता है। अतः इसे उसी थाट का मानना अधिक उचित है। इसे ग्रन्थकार ने सम्पूर्ण जाति का राग स्वीकार किया है। किन्तु ऋषभ का आरोह में अल्प प्रयोग इसकी सम्पूर्णता में बाधक बन रहा है। साथ ही धैवत का आरोह में प्रयोग सरगम में नहीं दिखाया गया। सरगम के आधार पर इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म॑ प नि सां
अवरोह – सां नि प ध प म॑ ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म॑ प नि नि ध प म ग॒ ग॒
थाट – सुवर्णाङ्गी या तोड़ी
समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
जाति – औडव सम्पूर्ण
वादी-संवादी – सा एवं प

मारश्री राग में ऐसा प्रतीत होता है कि यह श्री राग का ही एक प्रकार है। परन्तु

इसके चलन तथा थाट आदि में पर्याप्त भिन्नता होने से इसका स्वतन्त्र स्वरूप अधिक उपस्थित होता है। अतः इसे स्वतन्त्र रूप में स्वीकार करना ही अधिक उचित है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस राग का प्रचलन कम था। इसीलिए इस राग का उल्लेख प्रायः प्राप्त नहीं होता।

## राग विभास

विभासः सादिमः प्रोक्तो रिधौ यत्र च कौमलौ ।
मनी तीवौ त्रिधा प्रोक्तो महीनो वा निहीनकः ।।४३।।
उभाभ्यां वा विहीनश्च सम्पूर्णौडवषाडवः ।

सरगम – स रे ग प ध स ध प ग रे स स नी नी ध ध स नी ध प ग
प ग रे ग रे स ध ध प ग ग रे रे स स रे ग प ध ग प प ग ग रे ग रे
ग रे स स स स रे ग रे स नी ध ध स रे ग प ग प प ध ध स ध प ग
रे स ।।४३।।

### मूलार्थ

विभास राग का आदि स्वर सा कहा गया है इसमें रे॒ तथा ध॒ स्वर कोमल हैं। इस राग के तीन प्रकार प्रसिद्ध हैं। एक सम्पूर्ण जाति का जिसमें रे॒ ध॒ के कोमल होने के साथ मं निं तीव्र स्वर हैं। दूसरा षाडव जाति का जिसमें म अथवा नि स्वर प्रयुक्त नहीं होते, तथा तीसरा औडव जाति का जिसमें म नि का प्रयोग नहीं होता।

सा रे॒ ग प ध॒ सां ध॒ प ग रे॒ सा, सां नीं नीं ध॒ ध॒ सां नीं ध॒ प ग प ग रे॒
ग रे॒ सा ध॒ ध॒ प ग ग रे॒ रे॒ सा, सा रे॒ ग प ध॒ ग प प ग ग रे॒ ग रे॒ ग रे॒ सा,
सा सा सा रे॒ ग रे॒ सा ऩीं ध़॒ ध़॒ सा रे॒ ग प ग प प ध॒ ध॒ सां ध॒ प ग रे॒ सा

### विवृति

विभास राग एक प्रसिद्ध राग है जिसके सम्प्रति दो प्रकार प्रचलित हैं। परन्तु ग्रन्थकार ने इसके तीन स्वरूप स्वीकार किये हैं। और स्वरों का वही स्वरूप सभी में माना है। इस राग में ग्रन्थकार द्वारा रे॒ ध॒ को कोमल तथा म नी को तीव्र स्वीकार करने से इसे पूर्वी थाट के अन्तर्गत माना जा सकता है यद्यपि इसमें तीन प्रकारों का उल्लेख ग्रन्थकार ने किया है। परन्तु सरगम में मात्र दो ही प्रकार प्राप्त हैं। एक औडव और एक षाडव, सम्पूर्ण जाति का इसमें उल्लेख नहीं है। ग्रन्थकार ने सरगम में कहीं भी मध्यम

स्वर का प्रयोग नहीं किया है। इसके दो प्रकारों का स्वरूप इस तरह है –

(१) जाति – षाडव-षाडव
आरोह – सा रे॒ ग प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग प ध॒ ध॒ नीं नीं ध॒ ध॒ प ग रे॒
समय – प्रातः

(२) आरोह – सा रे॒ ग प ध॒ सां
अवरोह – सां ध॒ प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग प ध॒ प ग रे॒ सा रे॒ सा
समय – प्रातः

तीसरा प्रकार जिसके सरगम का यद्यपि उल्लेख नहीं है तथापि उसका स्वरूप ग्रन्थकार के कथन के आधार पर इस प्रकार होगा –

आरोह – सा रे॒ ग मं प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नीं ध॒ प मं ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सां नीं नीं ध॒ ध॒ प मं प ग रे॒, ग ग रे॒ सा रे॒ सा
समय – प्रातः

यद्यपि विवेचन से इस राग का थाट पूर्वी सिद्ध होता है। तथापि पूर्व के दो प्रकारों में भैरव थाट का स्वरूप अधिक दिखाई पड़ता है। तृतीय स्वरूप के विषय में पूर्वी थाट मानना उचित है। किन्तु ग्रन्थकार की दृष्टि से यदि विचार किया जाय तो पूर्वी भी उचित माना जा सकता है।

सम्प्रति विभास राग भैरव तथा मारवा थाट में प्राप्त है। *संगीत सागर* में लेखक प्रभुलाल गर्ग ने अपने रागों के विवरण में जिस विभास राग का उल्लेख किया है वह बिलावल थाट का प्रतीत है। यदि उसे भी स्वीकार किया जाय तो तीन प्रकार इसके भी विभिन्न थाटों से स्वीकार किये जा सकते हैं –

(१) बिलावल थाट – विभास

*संगीत सागर* में इसकी क्रम संख्या 377 पृ. सं. 134 है। यह औडव जाति का है। सभी स्वर शुद्ध है। इसमें मात्र आरोह एवं अवरोह का प्रदर्शन है –

आरोह – सा रे ग प ध सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा

यद्यपि स्वरों का स्वरूप भूपाली या देशकार के समान है पर चलन के आधार पर इसे गाया-बजाया जा सकता है। फिर उन दो रागों की इसमें छाया आने से इसकी पहचान कुछ न कुछ अवश्य प्रभावित होगी। इसके भी गायन-वादन का समय प्रातः तथा सा वादी एवं प संवादी माना जा सकता है।

भैरव थाट-विभास

इस राग का ध॒ वादी तथा ग संवादी है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके आरोह एवं अवरोह में म नि वर्जित होने से जाति औडव-औडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग प ध॒ प सां
अवरोह – सां ध॒ प ग प ध॒ प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग प ध॒ ध॒ प ग प ध॒ प ग रे॒ सा

मारवा थाट विभास

यह राग सम्पूर्ण जाति का है। ध वादी तथा ग संवादी। इसमें रे॒ कोमल तथा म॑ तीव्र प्रयुक्त होता है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म॑ ग प ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म॑ ग प ध नि ध प म॑ ध म॑ ग रे॒ सा

ग्रन्थोक्त विभास राग का स्वरूप इस समय अप्रचलित सा है। केवल औडव स्वरूप ही प्रचलित है जिसका थाट भैरव माना जाता है।

## राग सौराष्ट्री

सौराष्ट्री त्रिविधा ज्ञेया रिपहीना रिहीनका ।
पहीना वा समाख्याता मतीव्रा कोमलर्षभा ।।४४।।

सरगम – प ध नी स रे ग म म ग रे स नी ध ध नी स रे स रे नी स नी
ध ध नी स रे ग म नी ध म म ग म रे स नी नी स रे नी स नी ध म ग
रे ग रे स नी ध नी स ॥४४॥

मूलार्थ

सौराष्ट्री राग तीन प्रकार का जानना चाहिये। एक रे प वर्जित, दूसरा रे वर्जित, तीसरा प वर्जित। इस राग में तीव्र मध्यम तथा कोमल ऋषभ का प्रयोग होता है।

प ध नी सां रें गं मं मं गं रें सां, ऩी ध़ ध़ ऩी सा रे सा रे ऩी सा ऩी ध़ ध़
ऩी सा रे ग म नी ध म म ग म ग रे सा नी नी सां रें नी सां नी ध ग ग
रे ग रे सा ऩी ध़ ऩी सा

विवृति

ग्रन्थकार ने इस राग में रे कोमल म तीव्र तथा शेष स्वरों को शुद्ध स्वीकार किया है। जिससे यह मारवा थाट के अन्तर्गत आता है। इसके तीन प्रकार ग्रन्थकार ने स्वीकार किये हैं। रे प वर्जित अर्थात् औडव जाति का, रे अथवा प वर्जित होने से षाडव जाति का। ग्रन्थकार ने सरगम में केवल प्रारम्भ में पञ्चम का प्रयोग किया है। और सभी जगह प का प्रयोग न करके प वर्जित रूप को अधिक महत्व दिया है। यद्यपि ग्रन्थकार ने वादी स्वर का उल्लेख नहीं किया है तथापि सरगम में चलन के आधार म वादी तथा सा संवादी हैं। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

(१) प हीन सौराष्ट्री का परिचय
आरोह – सा रे ग म ध ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि ध ध नि ध म ग रे ग रे सा
समय – सायंकाल
थाट – मारवा
वादी-संवादी – म सा

(२) रे हीन सौराष्ट्री का परिचय
आरोह – सा ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म प ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – प ध नि सां नि ध प म म ग म ग
वादी-संवादी एवं थाट पूर्ववत्

(३) रे प हीन सौराष्ट्री का परिचय

आरोह – सा ग म॑ ध नि सां

अवरोह – सां नि ध म॑ ग सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा नि नि ध नि सां नि ध म॑ म॑ ग म॑ ग

थाट वादी संवादी एवं समय पूर्ववत् इस राग का सम्प्रति उल्लेख सौराष्ट्र नाम से प्राप्त होता है, जो इस नाम से उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय दोनों पद्धतियों में प्रसिद्ध है।

उत्तर भारतीय सौराष्ट राग

इस राग का थाट भैरव मानना अधिक उचित होगा। आरोह में पञ्चम अवरोह में रे नि वर्जित होने से जाति षाडव-औडव है। वादी म संवादी सा, गायन-वादन समय प्रातःकाल है। इसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म ग म ध नि सां

अवरोह – सां ध प म ग सा सा ध प म ग सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ग म ध प म ग सा

दक्षिण भारतीय सौराष्ट्र राग

इस राग का थाट मायामालव गौड़ है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें रे ध कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं। उत्तर भारतीय पद्धति में यह भैरव थाट के समान है। इसका ध वादी ग संवादी है गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – प ध नि सां नि ध ध प म ग म ग रे म ग रे ग सा

सौराष्ट्र का एक प्रकार 'कन्नड सौराष्ट्र' का उल्लेख दक्षिण पद्धति में प्राप्त होता है जिसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म ग म ध प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म ग सा

थाट – नाटकप्रिय

वादी-संवादी – म सा

समय – प्रातःकाल

# राग सोरठी

सोरठी च रिहीनोक्ता निगौ यत्र च कौमलौ ।
नितीव्रा वा गतीव्रा वा निगहीनाऽथवा मता ॥४५॥
एवं षोडशधा ज्ञेया शास्त्रविद्भिरुदाहृता ।

सरगम – रे म प रे स रे स नी ध ध प ध प म ग रे रे रे स स रे प म प
स स स नी ध प ध प म ग रे रे स स स नी ध प ध म प ग रे रे रे रे स
रे म म प नी ध प ध प म ग रे स वा। प ध नी स रे ग म ग रे स रे नी
ध प म प ध नी स रे ग म प ध नी स नी ध प म ग रे स रे ग रे स नी
ध ध नी ध नी ध प म प म प ध नी स ॥४५॥

## मूलार्थ

सोरठी राग रे स्वर वर्जित है। इसमें नि_ तथा ग_ स्वर कोमल हैं। एक प्रकार में नीं तीव्र है, दूसरे में ग॑ तीव्र है। तीसरा प्रकार नि ग स्वर रहित है। इस प्रकार शास्त्रज्ञ विद्वान् गणों के द्वारा यह राग सोलह प्रकार का माना गया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

रे म प रे सा रे सा नी_ ध ध प ध प म ग_ रे रे रे सा, सा रे प म प सां सां
सां नी_ ध प ध प म प ग_ रे रे सा सा, सां नी_ ध प ध म प ग_ रे रे रे रे सा
रे म म प नी_ ध प ध प म ग_ रे सा, अथवा प ध नीं सां रें गं_ मं गं_ रें सां
रें निं ध प म प ध नीं, सा रे ग_ म प ध नीं सां नीं ध प म ग_ रे सा रे ग
रे सा, नीं ध ध नीं ध नीं ध प म प म प ध नीं सां

## विवृति

मूलग्रन्थ में ग्रन्थकार ने प्रारम्भ में ही इस राग का ऋषभ से वर्जित स्वरूप माना। किन्तु सरगम में सर्वप्रथम ऋषभ स्वर का ही प्रयोग किया। और उसी स्वर से इस राग का प्रारम्भ किया जिससे उनके कथन में वदतोव्याघात दोष आपततः सिद्ध होता है। किन्तु अपने आगे के कथन में भी नि ग हीना कथन से उनका अभाव स्वीकार किया है। किन्तु रे का अभाव स्वीकार नहीं किया। उदाहृत सरगमों के दोनों प्रकार में सभी स्वरों का प्रयोग है। प्रारम्भ में ग का आरोह में अभाव अवश्य ही उल्लिखित है। ग्रन्थोक्त सरगम के आधार पर इस राग का परिचय इस प्रकार है –

प्रथम प्रकार

थाट – काफी
आरोह – सा रे म रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म प नि॒ ध प प ध प म ग॒ रे रे रे सा
वादी-संवादी – म सा
जाति – औडव सम्पूर्ण
समय – दिन का द्वितीय प्रहर

द्वितीय प्रकार

थाट – काफी
आरोह – सा रे ग॒ म प ध नि॑ सां
अवरोह – सां नि॑ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर प्रकार – सा रे ग॒ रे सा नि॑ ध ध नि॑ ध नि ध प म प म प
वादी-संवादी – सा प
जाति – सम्पूर्ण
समय – मध्याह्न

सोरठी राग इस समय सोरठ राग के रूप में प्रसिद्ध है जिसका परिचय इस प्रकार है –

राग सोरठ – राग सोरठ का जनक खमाज थाट है। इसका वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर ध है। इसमें दोनों नि का प्रयोग होता है। आरोह में ग ध के वर्जित होने से इसकी औडव सम्पूर्ण जाति है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर प्रकार इस रूप में है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां रें नि॒ ध म प ध म रे ऩि सा
मुख्य स्वर स्वरूप – सा रे म प नि सां रें नि॒ ध म प ध म रे ऩि सा

सोरठ का यह प्रकार ग्रन्थकार द्वारा उक्त "ग तीव्रा वा" से समर्थित है जिसमें नी कोमल ग तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध होंगे, जिसका स्वरूप लगभग पूर्वोक्त जैसा ही होगा।

ग्रन्थकार ने इसके सोलह प्रकारों का संकेत किया है। किन्तु उनका उल्लेख या विवरण प्राप्त नहीं होता।

## राग देश

देशः पूर्णो रिस्वराद्यो देशभेदादनेकधा ।
चतुष्षष्टिविधो ज्ञेयः शास्त्रविद्भिरुदाहृतः ॥४६॥
यस्य देशस्य या छाया तद्युक्तः समुदीरितः ।

सरगम – रे रे म म म म प प प स स नी ध ध प म प प रे रे स नी नी ध प म ग रे म म ग रे रे स नी स स स, 'वा' रे नी स रे स रे ग रे प ध नी स नी ध प म ग रे स, स नी प नी स रे स म प नी स नी ध प ध प म प ध प म ग रे स, 'वा' स रे म प ध प म ग रे ग रे स रे नी ध प ध प म ग रे स रे ऩी स प नी स रे स ॥

मूलार्थ

देश राग सम्पूर्ण जाति का है। इसका आदि स्वर 'रे' है। यह देशभेद से अनेक प्रकार का माना जाता है। शास्त्रज्ञों के द्वारा देश राग चौंसठ प्रकार का माना गया है। यह देश राग जिस देश में प्रचलित है उस देश (की छाया) के स्वरूप को लेकर उससे युक्त ही यह विद्वानों के द्वारा कहा गया है। इसका सरगम इस प्रकार है –

रे रे म म म म प प प सां सां नी ध ध प म प प रे रे सा नी नी ध प म ग रे म म ग रे रे सा ऩी सा सा सा, अथवा रे ऩी सा रे सा रे ग रे प ध नी सां नी ध प म ग रे सा, सा ऩी प़ ऩी सा रे सा म प नी सां नी ध प ध प म प ध प म ग रे सा, अथवा सा रे म प ध प म ग रे ग रे सा रे नी ध प ध प म ग रे सा रे ऩी सा प़ ऩी सा रे सा

विवृति

ग्रन्थकार ने स्वरों के विषय में कोई निर्देश नहीं दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं तथा आरोह-अवरोह में प्रत्येक स्वरों का प्रयोग होता है। परन्तु सरगम देखने से स्वरों के प्रयोग के विषय में कुछ दूसरी धारणा बनती है। इसमें अथवा शब्द के माध्यम से कुल तीन सरगम प्रदर्शित हैं। प्रथम सरगम के आधार पर इसका

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि ध प म ग रे सा ऩि सा

यह स्वरूप बनता है। दूसरे सरगम के आधार पर इसका

आरोह – सा रे ग रे प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग रे प ध नि सां नि प नि ध प म प ध प म ग रे, सा रे ऩि सा

यह स्वरूप बनता है। तीसरे सरगम के आधार पर इसका

आरोह – सा रे म प ध प नि सां
अवरोह – सां नि ध प ध प म ग रे स रे ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध प म ग रे सा रे ऩि सा

यह स्वरूप प्राप्त होता है। इन तीनों प्रकारों में प्रथम औडव सम्पूर्ण, द्वितीय तृतीय षाडव सम्पूर्ण जाति के हैं। द्वितीय के आरोह में म स्वर तथा तृतीय के आरोह में ग स्वर का प्रयोग नहीं हुआ। पूर्णतया सम्पूर्ण जाति का यह राग नहीं बैठता है। अवरोह में अवश्य सम्पूर्ण जाति बनती है। यदि पूर्णतया इसकी सम्पूर्ण जाति स्वीकार की जाय तो इसका सरगम को आधार रूप में ग्रहण करने पर आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर इस प्रकार बनते हैं –

आरोह – सा रे ग रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर – सा रे ग रे म प ध नि प नि ध प म प ध प म ग रे सा रे ऩि सा

ग्रन्थकार ने देश राग में रे स्वर को आदि स्वर अर्थात् वादी स्वर माना है। अत: संवादी प स्वर माना जायेगा। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर माना जायेगा। स्वरों की दृष्टि से इसका बिलावल थाट मानना चाहिये।

सम्प्रति देश राग का पूर्णतया प्रचार है किन्तु ग्रन्थोक्त देश किञ्चित् भिन्न है। इस राग का परिचय इस प्रकार है –

आधुनिक देश राग

इस राग का थाट खमाज है जिससे अवरोह नी स्वर कोमल है। आरोह में ग ध वर्जित

होने से औडव सम्पूर्ण इसकी जाति है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे ग नि़ सां
मुख्य स्वर – रे म प नि ध प प ध प म ग रे ग नि़ सा

ग्रन्थकार ने चौंसठ प्रकारों का संकेत दिया है जिसका विवरण प्राप्त नहीं होता।

## राग मल्हारदेश, सोरठदेश, जैजैवन्तीदेश

मल्हारदेशो विज्ञेयो मल्हारस्वरभूषितः ।
सोरठीस्वरसंयुक्तः सोरठाद्यः समीरितः ॥
जैजैवन्तीयुतो वापि तत्पूर्वः समुदीरितः ।

मूलार्थ

यह देश राग जब मल्हार के स्वरों से युक्त होता है तब मल्हार देश कहा जाता है। जब सोरठी के स्वरों से युक्त होता है तो सोरठी देश कहा जाता है तथा जब जैजैवन्ती के स्वरों से युक्त होता है तो जैजैवन्ती देश राग कहा जाता है।

विवृति

ग्रन्थकार ने देश राग के अन्य प्रकार अन्य रागों के संयोग से स्वीकार किये हैं। मल्हार के संयोग से मल्हार देश, सोरठी के संयोग से सोरठी देश तथा जैजैवन्ती के संयोग से जैजैवन्ती देश राग स्वीकार किया है जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

(१) मल्हार देश – इस राग में आरोह में मल्हार अंग तथा अवरोह में देश अंग की छाया रहती है। फलतः इसका थाट काफी हो जाता है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर होता है। वादी म संवादी स है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस तरह है –

आरोह – सा रे म रे सा म रे प नि॒ ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा
मुख्य स्वर स्वरूप – सा म रे प नि॒ ध नी सां नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा

(२) सोरठ देश – इस राग में आरोह में सोरठी तथा अवरोह में देश राग अंग की

छाया रहती है। सोरठी राग का ग्रन्थकार ने विस्तार से उल्लेख किया है। उसके विवरण से वह काफी थाट का माना गया है। अतः उसके स्वरों की प्रधानता होने पर सोरठ देश भी काफी थाट के अन्तर्गत माना जायेगा। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि रहेगा। वादी स्वर रे संवादी प माना जायेगा। आरोह में ग नि कोमल तथा अवरोह में केवल नी स्वर कोमल रहेगा। इसका शेष विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा
मुख्य स्वर प्रकार – रे म प रे सा नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा

(३) जैजैवन्ती देश – इसके आरोह में जैजैवन्ती अंग तथा अवरोह में देश अंग का प्रभाव रहता है। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

वादी-संवादी – रे एवं प
आरोह – सा रे ग प नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा
मुख्य स्वर – सा रे ग म ध प ध म रे ग॒ रे सा, नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा
समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर
थाट – खमाज

## राग सावेरी

सावेरी पादिमा प्रोक्ता सम्पूर्णस्वरभूषिता ।।४७।।

सरगम – प ध ध स रे रे ग रे स नी ध प म प म स ग रे स स रे म प
ध ध नी ध नी ध ध प म म ग रे स ग रे स रे म प ध प म प प रे ।।४७।।

मूलार्थ – सावेरी राग का आदि (वादी) स्वर प है इसमें सभी शुद्ध स्वर प्रयुक्त होते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका सरगम इस प्रकार है –

प ध ध सां रें रें गं रें सां नी ध प म प म सा ग रे सा सा रे म प प ध ध
नी ध नी ध ध प म म ग रे सा ग रे सा रे म प ध प म प प रे

विवृति

ग्रन्थकार ने इसमें सभी स्वर शुद्ध स्वीकार किये हैं जिससे इसका थाट बिलावल सिद्ध

होता है। सरगम में प्रयुक्त स्वरों की दृष्टि से इस राग का चलन मध्य एवं तार सप्तक में रहेगी। प स्वर के वादी होने से संवादी स्वर रे होना चाहिए क्योंकि सरगम की दृष्टि से वही उपयुक्त जान पड़ता है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल होना चाहिये। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म प प ध ध नि ध नि ध प म ग रे
जाति – षाडव सम्पूर्ण

सरगम की दृष्टि से इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण नहीं है। उत्तर भारतीय पद्धति में सावेरी राग का परिचय इस प्रकार प्राप्त होता है –

(१) राग सावेरी

थाट – भैरव
वादी-संवादी – प स
समय – प्रात:काल
आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध प नि ध प म ग रे सा
जाति – औडव सम्पूर्ण

(२) शुद्ध सावेरी राग

थाट – बिलावल
वादी-संवादी – 'म' 'सा'
जाति – औडव
समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म रे म प ध प म म रे सा

दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में इसके अनेक प्रकार हैं जिनका विवरण इस प्रकार है –

(१) सावेरी
(२) कलासावेरी
(३) कल्लोलसावेरी
(४) जयसावेरी
(५) धीरसावेरी
(६) भोगसावेरी
(७) मेचसावेरी
(८) शुद्धसावेरी
(९) सिह्मेलसावेरी
(१०) हिन्दोलसावेरी

**(१) सावेरी** – इस राग का थाट मायामालवगौड़ है जो भैरव थाट के समान है। वादी प संवादी सा है। आरोह में ग नि वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। रे ध कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इस राग का विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध नि ध प म ग रे ग रे सा

**(२) कलासावेरी** – इस राग का थाट हनुमत्तोड़ी है। वादी स्वर प एवं संवादी स्वर सा है। इसमें रे ग नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे ग रे सा

**(३) कल्लोलसावेरी** – इस राग का थाट माररंजनी है। वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें ध कोमल नी अतिकोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन समय प्रातःकाल है। इसका विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध म प सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध म प नि ध प म ग रे सा

(४) जयसावेरी – इस राग का थाट मानवती है। वादी स्वर म संवादी सा है। इसमें रे कोमल ग अति कोमल र्ध तीव्र शेष स्वर शुद्ध हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा म रे ग म प र्ध नि सां
अवरोह – र्ध प म ग रे सा ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म रे ग म प र्ध प म ग रे सा ऩि सा

(५) धीरसावेरी – इस राग का थाट धातुवर्धनी है। वादी स्वर प तथा संवादी स्वर सा है। इसमें रें तीव्र ध कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। अवरोह में नि वर्जित होने से सम्पूर्ण षाडव जाति है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग म प ध नि सां
अवरोह – सां ध प म ग रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग म प ध नि सां ध प म ग रें ग रें सा

(६) भोगसावेरी – इस राग का थाट सालंग है। वादी स्वर प तथा संवादी स्वर सा है। इसमें रे ध कोमल ग नि अतिकोमल तथा तीव्र मध्यम है। इसमें आरोह ग अवरोह में नि स्वर वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। इसका चलन मन्द्र एवं मध्य सप्तक में ही अधिक है। गायन-वादन समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे मं प ध नि
अवरोह – ध प मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे मं प ध नि ध प मं ग रे

(७) मेचसावेरी – इस राग का थाट रघुप्रिय है। इसका वादी प संवादी सा है। इसमें रे कोमल ग अतिकोमल तीव्र मं का प्रयोग होता है। आरोह में ग ध तथा अवरोह में ध का प्रयोग न होने से जाति औडव-षाडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे मं नि सां
अवरोह – सां नि प मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे मं प नि प मं ग रे ग रे सा

(८) शुद्धसावेरी – इस राग का थाट धीर शंकराभरण है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग में ग नि का आरोह तथा अवरोह में प्रयोग न होने से जाति औडव-औडव है। प वादी तथा संवादी सा है। इसका गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर का समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध प म रे सा

(९) सिह्मेलसावेरी – इस राग का थाट नागानंदिनी है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं, पर धं तीव्र प्रयुक्त होता है। इसमें म वादी सा संवादी है। इसके गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग म प धं नि सां
अवरोह – सां नि धं नि प ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग म प धं नि धं नि प म ग
वर्ज्य स्वर – ऋषभ
जाति – षाडव-षाडव

(१०) हिन्दोलसावेरी – इस राग का थाट गांगेयभूषणी है। इसका म वादी सा संवादी है। ध॒ स्वर कोमल रें तीव्र एवं सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग के आरोह में रे तथा अवरोह में ग का प्रयोग वर्जित है। इससे इसकी जाति षाडव-षाडव है। गायन व वादन का समय प्रात:काल है। इसका पूर्ण परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि प ध॒ म रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प म ध॒ नि प ध॒ म रें

## राग गान्धार

गंधारो मादिमः प्रोक्तः सम्पूर्णो रिधकोमलः ॥४८॥

सरगम – म म प ध ध म ग स रे प प प ध ध ध स स स नी ध प प म प प ध ध म ग ग रे स रे रे रे रे स स नी नी नी नी स ध नी स स स रे रे रे स स स स स नी नी नी ध प स रे रे ग ग प म ग म म ध ध ग ग रे स स ॥४८॥

### मूलार्थ

गान्धार राग में आदि स्वर म है। इस राग में रे तथा ध कोमल है। इसका सरगम इस प्रकार है –

म म प ध ध म ग सा रे प प प ध ध ध सां सां सां नी ध प प म प प
ध ध म ग ग रे सा रे रे रे रे सा सा ऩी ऩी ऩी सा ध ऩी सा सा सा रे रे रे
रे सा सा सा सा सा नी नी नी ध प सा रे रे ग ग प म ग म म ध ध म ग
रे सा सा

### विवृति

गान्धार राग में रे ध स्वर कोमल प्रयुक्त होते हैं इसलिए इसका थाट भैरव है। वादी स्वर म के होने से संवादी स्वर सा है। गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इसका चलन वक्र है। जाति सम्पूर्ण है। इसका पूर्ण परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प म प ध ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म प ध म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प रे प ध ध नि ध प म प ध म ग रे

गान्धार राग का तथा उसके अनेक प्रकारों का उल्लेख उत्तर एवं दक्षिण भारतीय पद्धतियों में प्राप्त होता है। उत्तर भारतीय पद्धति में गान्धार एवं रुद्र-गान्धार हैं। दक्षिण पद्धति में इसका एक भेद हंस गान्धार राग प्रसिद्ध है।

(१) गान्धार (उत्तर भारतीय) – इस राग का थाट आसावरी है। इसका वादी ध तथा संवादी ग है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। आरोह में ग प वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है।

इस राग का आरोह, अवरोह आदि परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प ध म प ग रे रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म ध नि ध प ध म प ग रे रे सा

(२) रुद्र गान्धार – इस राग का आसावरी थाट है। इसका वादी म संवादी सा है। इसमें ग ध नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध हैं। अवरोह में प रे का प्रयोग वर्जित होने से इसकी सम्पूर्ण औडव जाति है। गायन-वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ रे म प म ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ रे म प म ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ सा

दक्षिणभारतीय राग

हंसगान्धार – इस राग का थाट माररंजनी है। इसका वादी म संवादी सा है। इसमें ध॒ कोमल तथा नी॒॒ अतिकोमल प्रयुक्त होता है। इसमें ध नि का आरोह में प्रयोग न होने से इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। इसके गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प सां
अवरोह – सां नि॒॒ ध॒ प ध॒ म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प सां नि॒॒ ध प ध॒ म ग

इस राग से मिलता हुआ राग गान्धारी है। किन्तु उसका चलन दूसरा है। इसलिए इससे भिन्न ही मानना चाहिए।

## राग देवगान्धार

देवपूर्वोऽथ गान्धारो ज्ञेयो भैरववत्सदा ।।४९।।

सरगम – ध नी स रे ग म प ध प म स रे स नी ध ध नी स रे स नी ध
ध नी स रे ग म ग रे स नी ध ध नी स रे स नी ध ध नी स रे स नी ध
ध नी स रे ग म ग रे स नी ध नी नी स नी ध प म ग रे स ।।४९।।

मूलार्थ

देवगान्धार राग को सर्वदैव भैरव के समान ही समझना चाहिए। अर्थात् इसमें भी रे॒ ध॒ कोमल तथा ध आदि स्वर प्रयुक्त होता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

ध़॒ नी़ सा रे॒ ग म प ध॒ प म सा रे॒ सा नी़ ध़॒ ध़॒ नी़ सा रे॒ सा नी़ ध़॒ ध़॒ नी़
सा रे॒ ग म ग रे सा नी़ ध़॒ ध़॒ नी़ सा रे॒ सा नी़ ध़॒ ध़॒ नी़ सा रे॒ सा नी़ ध़॒ ध़॒
नी़ सा रे ग म ग रे॒ सा नी ध॒ नी नी सां नी ध॒ प म ग रे॒ सा

विवृति

ग्रन्थकार ने देवगान्धार राग को गान्धार राग का एक प्रकार माना है। इसमें स्वर वही प्रयुक्त होते हैं जो गान्धार में, किन्तु स्वरूप भैरव के समान हैं। इसके सरगम के प्रयोग से इस राग की चलन मन्द्र एवं मध्य सप्तक में अधिक प्रतीत होती है। इसका पूरा परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़॒ नि़ सा रे॒ ग म प म सा रे सा ध़॒ नि़ ध़॒ ध़॒ नि़ सा
वादी-संवादी – ध॒ रे॒
समय – प्रातःकाल
जाति – सम्पूर्ण

सम्प्रति सम्प्राप्त देवगान्धार राग का परिचय इस प्रकार है –

थाट – आसावरी
वादी-संवादी – ध एवं ग
समय – दिन का द्वितीय प्रहर
आरोह – सा रे म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प ध॒ ग प ग॒ रे सा रे ग म प ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध॒ म प ग॒ सा रे सा रे नि़॒ सा रे ग म
जाति – षाडव सम्पूर्ण
चलन – उत्तराङ्गप्रधान

देवगान्धार राग का परिचय इससे कुछ भिन्न रूप में *संगीत सागर* सं. १६७ तथा *राग कोष* सं ६८ दिया गया है।

## राग जयश्री

जयश्री मादिमा ज्ञेया धैवतर्षभकोमला।
मतीव्रा कथिता पूर्णा शास्त्रज्ञैः सर्वसम्मता ॥५०॥

सरगम – म प प प ध स रे ग ग ग ग ग म म ध प म प रे स ग ग म
प ध म प स रे स नी ध नी रे स नी ध प ॥५०॥

मूलार्थ

जयश्री राग में आदि स्वर म का प्रयोग जानना चाहिये। इस राग में रे॒ ध॒ कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। शास्त्रकारों ने इसे सम्पूर्ण जाति का राग स्वीकार किया है। इस राग की सरगम इस प्रकार है –

म॑ प प ध॒ प रे॒ ग ग ग ग ग म॑ म॑ ध॒ प म॑ प रे॒ सा ग ग प ध॒ म॑ प सां रें
सां नी ध॒ नी रें सां नी ध॒ प

विवृति

जयश्री राग के परिचय में ग्रन्थकार ने रे॒ ध॒ कोमल तथा म॑ को तीव्र माना है। इससे राग का पूर्वी थाट सिद्ध होता है। मध्यम इसका वादी स्वर होने से षड्ज संवादी मानना उचित होगा। सरगम के आधार पर इस राग का चलन वक्र है तथा यह राग मध्य एवं तीव्र सप्तक में अधिक भाषित होता है। मन्द्र में इसका चलन अल्प है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ सा ग म॑ प ध॒ म॑ प सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ प रे॒ ग म॑ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – म॑ प ध॒ प रे॒ ग म॑ ध॒ प म॑ प रे॒ सा

सरगम में स्वरों के प्रयोग के आधार पर इस राग की जाति षाडव सम्पूर्ण है। दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में जय श्री राग का जो परिचय प्राप्त होता है वह इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प ध॒ नि ध॒ सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प ध॒ नि ध॒ प म ग॒ रे
वादी-संवादी – म एवं सा
गायन-वादन का समय – रात्रि प्रथम प्रहर
जाति – सम्पूर्ण

इस राग का थाट कीरवाणी है।

## राग कल्याणी

कल्याणी बहुधा शुद्धस्वरा ज्ञेया विचक्षणैः।
यद्रागस्वरसंयुक्ता तत्पूर्वा कथिता च सा ।।५१।।

सरगम – रे ग म प ध म प म ग रे रे ग ग म प ध नी स म ग रे सा, ग ग रे नी स प नी नी नी नी स रे रे ग रे रे ग म म प म ग म ग रे नी रे रे ग म ग रे स ।।५१।।

मूलार्थ

कल्याणी राग में सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। ऐसा बुद्धिमानों को जानना चाहिये। यह राग जिस राग के स्वरों से संयुक्त होता है इस राग के नाम को इसके पूर्व में संयुक्त करने पर यह एक दूसरे प्रकार को धारण करता है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

रे ग म प ध म प म ग रे रे ग ग म प ध नी सां मं गं रें सां गं गं रें ऩी
सां प़ ऩी ऩी सा रे रे ग रे रे ग म म प म ग म ग रे ऩी रे रे ग म ग रे सा

विवृति

इस राग के वादी स्वर के विषय में ग्रन्थकार ने कुछ नहीं कहा किन्तु सरगम में जो स्वरों का चलन है उसके आधार पर इस राग का वादी स्वर ग होना चाहिए तथा संवादी नि स्वर को होना चाहिए। गायन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ग म प ध म प म ग रे ऩि रे रे ग म ग रे सा
थाट – बिलावल

राग कल्याणी के स्वर साम्प्रतिक बिलावल राग के समान है। इस समय कल्याणी नाम का कोई राग प्रसिद्ध नहीं है परन्तु अन्य रागों के साथ में मिलकर इसके अनेक प्रभेद अवश्य प्राप्त होते हैं, जैसे (१) पूर्वकल्याणी (२) यमुनाकल्याणी (३) श्याम कल्याणी (४) हमीरु कल्याणी।

इनका परिचय इस प्रकार है –

(१) पूर्वकल्याणी – इस राग का थाट गमनश्रम है। जाति सम्पूर्ण रे॒ कोमल तीव्र मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका वादी ध संवादी ग है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग मं प ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग मं प ध नि ध सां। नि ध प मं ग रे॒ ग रे॒ सा

(२) यमुनाकल्याणी – इस राग का थाट मेचकल्याणी है। इसमें तीव्र मध्यम शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। निषाद का प्रयोग वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका वादी स्वर ध तथा संवादी ग है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं प ध सां
अवरोह – सां ध प मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग प मं प ध प मं ग

(३) श्याम कल्याणी – इस राग का थाट रूपवती है। इसमें रे॒ ग॒ कोमल तीव्र धैवत तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका वादी स्वर 'प' संवादी स्वर 'सा' है। आरोह में रे वर्जित होने से जाति षाडव-सम्पूर्ण है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा म ग॒ म प धं नि सां
अवरोह – सां नि प धं नि प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म ग॒ म प ध॒ नि प म ग॒ रे॒ सा

(४) हमीरु कल्याणी – इस राग का थाट मेचकल्याणी है। इसमें तीव्र मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे ग का प्रयोग न होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। वादी स्वर प संवादी स्वर सा तथा गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा प मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प ग मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा प मं प ध नि ध प ग मं ग रे सा

ये चारों राग कर्नाटक पद्धति के हैं। उत्तर भारतीय पद्धति में कल्याणी से सम्बन्धित राग प्रसिद्ध नहीं हैं। कल्याण राग से सम्बन्धित राग अवश्य हैं। कल्याण राग से सम्बन्धित राग दक्षिण भारतीय पद्धति में भी है। किन्तु प्रसंग यहाँ कल्याणी राग का है। अत: कल्याण का विवेचन यहाँ नहीं दिया जा रहा।

## राग आभीरी

आभीरी गादिमा ज्ञेया धैवतर्षभवर्जिता ।
सम्पूर्णा षाडवा कैश्चित् (उक्ता), रिधकोमलसंयुता ।।५२।।

सरगम – ग म ध प नी स स स नी ध प म प म ग रे स नी नी नी स स
स नी स रे ग म प प प म ग रे स नी नी नी स स स स प प स स स नी
नी प म ग रे स स स स स ग रे स रे स रे स नी नी नी स स ।।५२।।

मूलार्थ

आभीरी राग का आदि अर्थात् वादी स्वर ग है इसमें धैवत एवं ऋषभ वर्जित हैं। यह मुख्यत: सम्पूर्ण जाति का तथा कुछ विद्वानों के द्वारा षाडव जाति का भी माना गया है। इसमें रे ध कोमल माने जाते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

ग म ध प नी सां सां सां नी ध प म प म ग रे सा। ऩी ऩी ऩी सा सा सा
ऩी सा रे ग म प प प म ग रे सा ऩी ऩी ऩी सा सा सा सा प प सां सां सां
नी नी प म ग रे सा, सा सा सा सा ग रे सा रे सा रे सा ऩी ऩी ऩी सा सा

विवृति

ग्रन्थकार ने आभीरी राग के अनेक भेद बतलाये हैं। प्रथम रे ध वर्जित औडव जाति का, दूसरा सम्पूर्ण जाति का, तीसरा षाडव जाति का धैवत वर्जित राग। सम्पूर्ण जाति के राग के रे ध कोमल प्रयुक्त होते हैं। षाडव जाति के राग में रे कोमल होगा। औडव में तो रे ध दोनों वर्जित ही हैं। प्रस्तुत सरगम सम्पूर्ण एवं षाडव जाति का है। औडव जाति के राग की सरगम नहीं दिया गया। इन सभी का आरोह अवरोह इस प्रकार हो सकता है –

औडव जाति का आभीरी
आरोह – सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग सा

षाडव जाति का आभीरी
आरोह – सा रे॒ ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग रे॒ सा

सम्पूर्ण जाति का आभीरी राग
आरोह – सा रे॒ ग म प ग ध॒ प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म प म ग रे॒ सा नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ग म प ध॒ प़ म प म ग रे॒

इस राग का वादी स्वर ग के होने से संवादी स्वर नि है। गायन-वादन प्रात: दिन का प्रथम प्रहर तथा थाट भैरव है।

इस समय आभीरी राग आभेरी नाम से भी प्रसिद्ध है जिसका सम्पूर्ण परिचय इस प्रकार है।

इस राग का थाट आसावरी, ग वादी, नि संवादी, तथा गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इसमें रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे ध का प्रयोग वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग॒ म प ध॒ प नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा

*संगीत सागर* में आभीरी राग के संक्षिप्त परिचय में केवल आरोह-अवरोह दिया गया है जो इस प्रकार हैं –

आरोह – सा ग॒ रे ग॒ म नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा

इसके आधार पर इसका थाट आसावरी, जाति औडव सम्पूर्ण, वादी-संवादी ग नि, तथा गायन-वादन का समय प्रात:काल होता है।

कर्नाटक पद्धति में भी आभेरी प्रसिद्ध है जिसका परिचय इस प्रकार है –

थाट – नटभैरवी, जाति – औडव सम्पूर्ण,
वादी-संवादी – ग तथा नि, समय - प्रात:

आरोह – सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा

## राग सारंग

सारंगरागिनी ज्ञेया शुद्धा गान्धारवर्जिता ।
गकोमला, गतीव्रात्र मतीव्रा धैवतोऽपि च ।।
नितीव्रा वा धसंयुक्ता निषादस्वरकोमला ।
एवं बहुविधा ज्ञेया पंचविंशतिधाथवा ।।५३।।

सरगम – स स रे म प ध नी ध ध म रे स स प प नी स रे म प ध प म
रे स स रे म प नी स स नी रे स रे नी स ध प म ध म रे प म रे स ।।५३।।

### मूलार्थ

साारंग रागिनी को शुद्ध स्वर वाली जानना चाहिये। इसमें गान्धार स्वर वर्जित है। इस राग के पच्चीस भेद शास्त्रकारों ने बतायें है। इसके किसी भेद में ग॒ कोमल है, किसी में गं तीव्र है, किसी में मं तीव्र है, किसी में धैवत तीव्र है, किसी में नीं तीव्र है, कोई ध से युक्त है तो कोई सारंग राग कोमल निषाद स्वर भूषित है। इस प्रकार यह अनेक प्रकार का है। इस राग की सरगम इस प्रकार है –

सा सा रे म प ध नी ध ध म रे सा सा प़ प़ ऩी सा रे॒ म प ध प म रे म
सा रे म प नी सां सां नी रें सां रें नी सां ध प म ध म रे प म रे सा

### विवृति

ग्रन्थकार ने सांरग राग को शुद्ध स्वर वाला माना है। उस आधार से इसका थाट बिलावल होता है। केवल ग स्वर वर्जित होने से जाति षाडव-षाडव है। वादी स्वर रे संवादी प है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इसका सरगम के आधार पर इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध नि ध म रे प म रे सा

ग्रन्थकार ने इस राग के पच्चीस भेद माने हैं। परन्तु सरगम में ग वर्जित शुद्ध स्वरों वाले मुख्य भेद का ही विवरण दिया है। शेष का केवल ग कोमल, ग तीव्र म तीव्र तथा ध तीव्र, नी तीव्र अथवा ध से युक्त कोमल निषाद युक्त इन शब्दों से संकेत किया है।

सम्प्रति सारंग राग के अनेक प्रकार प्रचलित हैं। जिस सारंग का विवरण ग्रन्थकार ने दिया है। इसका नाम इस समय शुद्ध सारंग है स्वर वही हैं। परन्तु राग के चलन तथा स्वरों के प्रयोग में सामान्य अन्तर है। उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय पद्धतियों में सम्प्राप्त सारंग के प्रभेद इस प्रकार हैं –

| उत्तर भारतीय पद्धति | दक्षिण भारतीय पद्धति |
|---|---|
| (१) सारंग | (१) सारंग |
| (२) कुसुमसारंग | (२) कुसुमसारंग |
| (३) गौड़सारंग | (३) प्रतापसारंग |
| (४) पूर्वीसारंग | (४) भ्रमरसारंग |
| (५) बड़हंससारंग | (५) मारुवसारंग |
| (६) मदमावत सारंग | (६) वृन्दावनसारंग |
| (७) मध्यमादसारंग | (७) विजयसारंग |
| (८) मियाँ की सारंग | (८) शुद्धसारंग |
| (९) वृन्दावनीसारंग | (९) हिंदोलसारंग |
| (१०) शुद्धसारंग | |
| (११) शुद्धासारंग | |
| (१२) सामन्तसारंग | |

(१) सारंग – सारंग राग का थाट यमन है। वादी ग संवादी स्वर ध है। इसमें तीव्र मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। अवरोह निषाद वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण षाडव है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग मं प ध नि सां

अवरोह – सां ध प मं रे ग मं रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग मं प ध प मं रे ग मं रे सा

(२) कुसुमसारंग – इस राग का थाट षण्मुखप्रिय है। इसमें ग_ ध_ नि_ कोमल तीव्र मध्यम तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग हुआ है। इसका वादी स्वर स तथा संवादी प है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। आरोह में गान्धार वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म॑ प ध_ नि_ सां
अवरोह – सां नि_ ध_ प म॑ ग_ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म॑ प ध_ नि_ ध_ प म॑ ग_ रे

(३) गौड़सारंग – इस राग का थाट कल्याण है। इसका वादी स्वर ग तथा संवादी स्वर ध है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका चलन वक्र तथा जाति सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग रे म ग प म॑ ध प नि ध सां
अवरोह – सां ध नि प ध म॑ प ग म रे प रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे म ग प म॑ ध प ध म॑ प ग म रे प रे सा

(४) पूर्वीसारंग – इस राग का थाट पूर्वी तथा जाति सम्पूर्ण है। वादी स्वर प तथा संवादी सा है। इसमें रे_ ध_ कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। इसके गायन-वादन का समय सूर्यास्त का है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार प्रकार है –

आरोह – सा रे_ ग म॑ प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध_ प म॑ प म॑ ग रे_ ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे_ ग म॑ प म॑ ग रे_ ग सा

(५) बड़हंससारंग – इस राग का थाट काफी है। यह राग औडव जाति का है। इसका वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। इसमें दोनों नि का तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। इसमें ग एवं ध स्वरों का प्रयोग नहीं होता। इसके गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि_ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि_ प म रे सा रे म प नि प नि सां नि प म रे सा

**(६) मदमावतसारंग** – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। इसमें कोमल ग॒ एवं दोनों नि तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। इस राग की जाति ध स्वर के न होने से षाडव है। गायन-वादन का समय मध्याह्नकाल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ म प नि॒ नि नि॒ प म ग॒ रे सा

**(७) मध्यमादसारंग** – इस राग का थाट काफी है। आरोह अवरोध में ग ध वर्जित होने से जाति औडव है। वादी स्वर रे संवादी प है। इसमें कोमल नी॒ तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म प नि॒ सां नि॒ प म रे सा

**(८) मियाँ की सारंग** – इस राग का थाट काफी है। ग स्वर वर्जित होने से जाति षाडव है। इसमें दोनों नी का तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। इसका वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। गायन एवं वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ध़ नि़ सा रे प म रे प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध सां नि॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध़ नि़ सा रे प म रे प ध नि सां, नि ध सां नि॒ प म रे

**(९) वृन्दावनीसारंग** – इस राग का थाट काफी है। ग ध दोनों स्वर वर्जित होने से जाति औडव है। इसका वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ सा रे म रे म प नि॒ प म रे सा

**(१०) शुद्धसारंग** – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। इसमें दोनों म तथा नी का प्रयोग होता है। शेष स्वर शुद्ध रूप में प्रयुक्त होते हैं। ग

स्वर वर्जित होने से इसकी जाति षाडव है। इसके गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प म म॑ प नि सां
अवरोह – सां नि॒ प म म॑ प ध प म रे नि़ सां
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प म म॑ प नि॒ प म म॑ प ध प म रे

(११) शुद्धासारंग – इस राग का थाट कल्याण है। वादी स्वर रे संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इस राग में ग स्वर वर्जित होने इसकी जाति षाडव है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा म रे म॑ प ध म॑ प नि सां
अवरोह – सां नि ध प म॑ प म रे नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – म रे म॑ प म रे सा नि़ ध़ सा नि़ रे सा

(१२) सामन्तसारंग – इस राग का थाट काफी है। वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। आरोह में ग ध तथा अवरोह में ग का प्रयोग वर्जित होने से इसकी जाति औडव-षाडव है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके गायन-वादन का समय मध्याह्न है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि़ सा रे म प नि॒ ध प म रे नि़ सा

दक्षिण भारतीय पद्धति में भी सारंग के अनेक प्रकार विभिन्न थाटों में प्रचलित हैं जिनका विवरण इस प्रकार है –

(१) सारंग – इस राग का थाट (मेल) वाचस्पति है। इसमें नि कोमल तीव्र म॑ शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसके अवरोह में ग का प्रयोग वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण षाडव है। इसका वादी रे संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय मध्याह्न मात्र है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म॑ प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म॑ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म॑ प ध नि॒ ध प म॑ रे

(२) कुसुमसारंग – इस राग का थाट (मेल) षण्मुखप्रिय है। इसमें ग् ध् नि् कोमल तथा तीव्र मं का प्रयोग होता है। इसके आरोह में ग वर्जित होने से इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण है। वादी स्वर रे संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे मं प ध् नि् सां
अवरोह – सां नि् ध् प मं ग् रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध् नि ध् प मं ग् रे मं ग् रे सा

(३) प्रतापसारंग – इस राग का थाट (मेल) कोसल है। इस राग में तीव्र रे॒ मं तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका वादी स्वर सा संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग सा
मुख्य स्वर का समुदाय – सा रें ग मं प ध नि ध प मं ग

(४) भ्रमरसारंग – इस राग का थाट (मेल) षण्मुखप्रिय है। इसमें ग् ध् नि् कोमल तीव्र मं तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका चलन कुछ वक्र है। अवरोह में नि का प्रयोग वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण षाडव है। इसका वादी स्वर रे संवादी प है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग् मं प मं ध् नि् सां
अवरोह – सा ध् प मं ग् रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग् मं प मं ध् नि् सां ध् प मं ग् रे

(५) मारुवसारंग – इसका थाट (मेल) सुवर्णांगी है। इसमें रे॒ ग् कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। इसके अवरोह में निषाद वर्जित होने से जाति सम्पूर्ण षाडव है। वादी स्वर रे संवादी प है। गायन-वादन का समय मध्याह्नकाल है। इसका चलन केवल मन्द्र तथा मध्य सप्तक तक ही होता है। तार सप्तक में कथमपि प्रयोग नहीं होता। यहाँ तक कि थाट सप्तक के सा तक का भी प्रयोग वर्जित है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ऩि सा रे॒ ग् मं प मं ध नि

अवरोह – ध प म॑ ग_ रे_ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ऩि सा रे_ ग_ म॑ प म॑ ध प म॑ ग_ रे_ सा

(६) वृन्दावनसारंग – इस राग का थाट (मेल) स्वरप्रिय है। जो उत्तर भारतीय थाट काफी के सन्निकट है। इसमें ग_ नि_ कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। ध स्वर का प्रयोग न होने से जाति षाडव है। इसका वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय मध्याह्नकाल है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग_ रे म प नि_ सां

अवरोह – सां नि_ प म रे ग_ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग_ रे म प नि_ प म रे ग_ सा

(७) विजयसारंग – इस राग का थाट (मेल) हेमवती है। इस राग में ग_ नि_ कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। इसका वादी स्वर सा संवादी स्वर म है। गायन-वादन का समय मध्याह्नकाल है। आरोह में ध अवरोह में रे स्वर वर्जित होने से जाति षाडव है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग_ म॑ प नि_ सां

अवरोह – सां नि_ ध प म ग_ सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग_ म॑ प नि_ ध प म॑ ग_ सा

(८) शुद्धसारंग – इस राग का थाट (मेल) ऋषभप्रिय है। इसमें तीव्र म॑ कोमल ध_ अतिकोमल नि_ का प्रयोग होता है। वादी स्वर सा संवादी स्वर म है। गायन-वादन का समय मध्याह्नकाल है। आरोह में रे_ ध_ तथा अवरोह में नि स्वर वर्जित होने से जाति औडव-षाडव है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म॑ प नि_ सां

अवरोह – सां ध_ प म॑ ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म॑ प नि_ सां ध_ प म॑ ग रे

(९) हिंदोलसारंग – इस राग का थाट (मेल) राग वर्धनी है। इस राग में ध_ नि_ कोमल रे॑ तीव्र प्रयुक्त होता है। इसका वादी स्वर प संवादी रे॑ है। इसका चलन वक्र है। आरोह में ध स्वर वर्जित होने से जाति षाडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग म प सां नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प नि॒ ध॒ म ग म रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग म प नि॒ ध॒ म ग म रें सा

## राग नटनारायण

नटनारायणो ज्ञेयश्शुद्धतीव्रमसंयुतः ।
गांधाररहितः कैश्चिद् अन्यैर्धैवतवर्जितः ॥५४॥
पूर्णश्च षाडवश्चैव द्विविधः परिकीर्तितः ।

सरगम – स रे म प नी स स नी प प ध प म प म रे ग रे स रे स नी स
रे म रे ग रे ग रे स रे ग रे म रे स स नी नी म म प म म ग रे रे स नी
स रे ग रे स नी स स ॥५४॥

### मूलार्थ

नटनारायण राग में तीव्र एवं शुद्ध दोनों मध्यम का प्रयोग होता है। इसमें कुछ आचार्य गान्धार स्वर वर्जित करते हैं। कुछ आचार्य धैवत एवं ऋषभ स्वर वर्जित मानते हैं। यह राग संपूर्ण एवं षाडव दो प्रकार का माना जाता है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा रे म प नी सां सां प प ध प मं प म रे ग रे सा रे सा ऩी सा रे म रे ग
रे ग रे सा रे ग रे म रे सां सां नी नी मं मं प म ग रे रे सा ऩी सा रे ग रे
सा ऩी सा सा

### विवृति

इस राग में दोनों मध्यम तथा शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग हुआ है, इससे राग का थाट यमन है। यद्यपि ग्रन्थकार ने इस राग में गान्धार वर्जित तथा धैवत वर्जित दो मत प्रदर्शित कर स्वतः इसे औडव सम्पूर्ण जाति का राग मानना है। इसका वादी स्वर रे संवादी स्वर प है। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि प ध प मं प म रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प नि प ध प मं प म रे ग रे

नटनारायण राग सम्प्रति दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में नटनारायणी नाम से षाडव सम्पूर्ण जाति का है। इसके आरोह में पञ्चम वर्जित है। सभी स्वर शुद्ध होने से इसे हरिकाम्भोजी (मेल) थाट में रखा जा सकता है। वादी स्वर ध संवादी ग है। इसके गायन-वादन का समय प्रात:काल है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म ध नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प म ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म ध नि ध प म ग म रे ध़ प म ग म रे सा

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में भी नटनारायण राग प्रसिद्ध है जिसका थाट (मेल) है। इसमें दोनों नि का प्रयोग देखा जाता है। इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर ग एवं संवादी नी है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध नि॒ नि नि॒ ध प म ग प म ग रे सा

## राग श्याम

श्यामस्तु गादिम: प्रोक्तो यत्र तीव्रतरस्तु म: ।।५५।।

सरगम – ग ग म प ध ध ध प म प ध प ग ग ग म प ग ग रे स स नी
रे रे स स ग रे रे स नी ध प ध म ग रे ग प प म ग रे स स नी ग ग स
स ।।५५।।

मूलार्थ

श्याम राग का आदि (वादी) स्वर ग है। इस राग में म अति तीव्र प्रयुक्त होता है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ग ग मॆं प ध ध ध प प़ प प ध प ग ग ग मॆं प ग ग रे सा सा ऩी रे रे
सा सा ग रे रे सा, नी ध प ध मॆं ग रे ग प प प प मॆं ग रे सा सा ऩी ग
ग सा सा

विवृति

इस राग में तीव्रतर मँ का प्रयोग हुआ है, शेष स्वर शुद्ध माने गये हैं। इसलिये इसका थाट (मेल) कल्याणी है। ग वादी मानने पर संवादी स्वर नि माना जायेगा। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर मानना उचित है। इस राग की जाति षाडव सम्पूर्ण है। आरोह में नि का प्रयोग सरगम में दिखलाई नहीं पड़ता। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ऩि रे सा ग रे ग प मँ प ध सां

अवरोह – सां नि ध प ध मँ ग रे ग प मँ ग रे सा

मुख्य स्वर समुदाय – सा ऩि रे सा ग रे ग प मँ प ध नि ध प ध मँ ग रे सा

प्रचलित या न्यून प्रचलित साम्प्रतिक रागों में श्याम राग का प्रचलन नहीं दिखाई पड़ता।

## राग इमनी (यमनी)

इमनी गादिमा प्रोक्ता मध्यमस्वरवर्जिता ।
मतीव्रा च गतीव्रा च बहुधा शास्त्रसम्मता ।।
श्यामपूर्वाथकल्याणपूर्वा ज्ञेया विचक्षणैः ।
वेलावल्यादिमा चैव नटपूर्वाथवा युता ।।
एवं द्वादशधा स्पष्टा नादविद्याविशारदैः ।।५६।।

सरगम – ग ग रे स स नी स रे रे ग रे ग ध प ग ग रे ग रे स, स रे रे ग ध प प ध नी ध प ग ग रे रे स, नी स रे ग, वा- ग ग रे नी स रे ग ध प म ग रे स, स नी स रे ग ध प प म म ग ग रे स स, नी स रे ग म प ध नी स नी ध प म ग रे स नी स रे ग ग, वा- म प ध प म ग रे स नी ध ध नी स रे ग म प ध प म म ग रे रे स नी स नी नी स रे ग ग वा प म म ग रे स नी स रे ग ध प म ग रे स नी ध प ध नी स रे ग म ध नी ध प म म प म म ग रे स रे ग ग वा ।।५६।।

मूलार्थ

राग इमनी (यमनी) का आदि स्वर ग है। इसमें मध्यम स्वर वर्जित, तीव्र मध्यम युक्त,

तीव्र ग युक्त, आदि अनेक प्रकार शास्त्रसम्मत हैं। यह श्याम राग पूर्ववाला (श्यामयमनी) कल्याण राग पूर्ववाला (कल्याण यमनी) बेलावली राग पूर्ववाला (बेलावली यमनी) और नटराग पूर्ववाला (नटयमनी) आदि रूप में नादविद्या के विशारद विद्वानों के द्वारा बारह प्रकार का स्वीकार किया गया है। इसका स्वरविस्तार सरगम इस प्रकार का है –

म वर्जित स्वरूप – ग ग रे सा सा ऩी सा रे रे ग रे ग ध प ग ग रे ग रे सा, सा रे रे ग ध प प ध नी ध प ग ग रे रे सा ऩी सा रे ग,

अथवा मं तीव्र युक्त यमनी का स्वरूप – ग ग रे सा, ऩी सा रे ग ध प मं ग रे सा, सा ऩी सा रे ग ध प प मं मं ग ग रे सा सा, ऩी सा रे ग मं प ध नी सां नी ध प मं ग रे सा सा ऩी सा रे ग ग,

अथवा गं तीव्र वाला राग इमनी – म ध प म गं रे सा ऩी ध़ ध़ ऩी गं रे गं म प ध प म म गं रे रे सा ऩी सा ऩी ऩी सा रे गं गं

अथवा मं गं तीव्र स्वर वाला राग इमनी – प मं मं गं रे सा ऩी सा रे गं ध प मं गं रे सा ऩी ध़ प़ ध़ ऩी रे गं मं ध नी ध प मं मं गं रे सा रे गं गं

विवृति

इमनी राग का मुख्य अर्थात् वादी स्वर ग है। इसमें मध्यम स्वर वर्जित है। दूसरे प्रकार में तीव्र मं का प्रयोग होता है। तीसरे प्रकार में गं तीव्र का तथा चौथे प्रकार में तीव्र मं के साथ-साथ तीव्र गं का भी प्रयोग किया गया है। इन चारों प्रकारों का क्रमशः परिचय इस प्रकार है –

(१) आरोह – सा रे ग ध प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग ग रे सा ऩि सा रे रे ग रे ग ध प ध नि ध प ग ग रे रे सा ऩि सा रे ग

(२) आरोह – सा रे ग ध प मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग ग रे सा ऩि सा रे ग ध प मं मं ग ग रे सा ऩि सा रे ग ग

(३) आरोह – सा रे गं म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ध प म गं रे सा ऩि
मुख्य स्वर समुदाय – म ध प म गं रे सा ऩि ध़ ध़ ऩि सा रे गं गं

इसका परिचय देते हुए ग्रन्थकार ने 'बहुधा स्मृता' ऐसा कहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक सामान्य दूसरा मं तीव्र स्वर वाला, तीसरा गं तीव्र स्वर वाला और चौथा मं गं दोनों तीव्र स्वर वाला राग इन्हें अभिमत है। तभी इन्होंने चौथा स्वर विस्तार भी दिया है। जिसके आधार पर चौथे का पूर्ण परिचय इस प्रकार है –

(४) आरोह – सा ऩि सा रे गं ध प मं ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं गं रे सा ऩि
मुख्य स्वर समुदाय – प मं गं रे सा ऩि सा रे गं ध प मं गं रे सा ऩि सा रे गं गं

यमन के इन चार प्रकार के स्वर सरगमों का उल्लेख मूल कार ने अवश्य किया है। किन्तु इसके अलावा इन्होंने श्यामपूर्वा, कल्याणपूर्वा, वेलावलीपूर्वा, नटपूर्वा शब्द से श्यामयमनी, कल्याणयमनी, वेलावलीयमनी इन चार का उल्लेख करते हुए बारह भेद स्वीकार किए हैं। सम्प्रति इन रागों का स्वरूप दृष्टि गोचर नहीं होता है। किन्तु यमनी को पूर्व में रखकर यमनी कल्याण का यमन कल्याण, यमनी बिलावल के साथ साथ यमनी मांझ राग का भी उल्लेख प्राप्त होता है। श्यामयमनी, कल्याणयमनी, वेलावलीयमनी और नटयमनी का उल्लेख मूलकार ने किया है। परन्तु इनका परिचय प्राप्त नहीं होता।

यमन कल्याण यमनी बिलावल तथा यमनी मांझ का परिचय इस प्रकार है –

(१) यमन कल्याण – इस राग का थाट कल्याण है। पूर्व में इस राग का भी नाम कल्याण था किन्तु पश्चात् शुद्ध मध्यम का भी कुछ मुख्य स्थलों में प्रयोग करने से इसे यमन कल्याण कहा जाता है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका वादी स्वर ग तथा संवादी नी है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि रे ग म ग मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि रे ग मं प म ग म ग रे ऩि रे सा

(२) यमनी बिलावल – इस राग का थाट कल्याण है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण है। वादी स्वर पञ्चम और संवादी स्वर षड्ज है। गायन का समय प्रात:काल दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि ग॒ ग म रे ग प मं प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध नि ध प मं प ग म रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प मं प ग म रे ग रे सा ऩि ध़ ऩ ऩि रे ग

(३) यमनी मांझ – इस राग का थाट कल्याण है। यह वक्र सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर ग एवं संवादी स्वर नि है। इसमें भी दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। वर्जित स्वर कोई नहीं है। गायन-वादन का समय मध्यरात्रि १२ से ३ बजे तक का है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार का है –

आरोह – ऩि रे सा म ग प मं ध प नि रें सां
अवरोह – सां नि ध नि प मं रे म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि॒ रे सा म ग प मं ध प नि प मं रे म ग रे सा

राग यमनी का निरूपण करते हुए ग्रन्थकार ने इसके चार स्वरूपों का वर्णन किया। जिनका विवेचन पूर्व में किया गया है। मध्यम वर्जित यमन राग का स्वरूप सम्प्रति उस रूप में प्रसिद्ध नहीं हैं। फिर भी कुछ संगीतज्ञ इस स्वर के रूप में देशकार राग को मानते हैं जिसमें मध्यम वर्जित मानकर सा रे ग प ध नि सां। सां नि ध प ग रे सा आरोह अवरोह माना है। सम्प्रति प्रचलित देशकार में नि वर्जित माना गया है। यमनी का मं तीव्र स्वरूप राग यमन के रूप या कल्याण के रूप पर्याप्त प्रसिद्ध है। गं तीव्र यह स्वरूप उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में तो नहीं दिखायी देता, दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में भी तीव्र गान्धार युक्त यह राग प्रचलन में नहीं है। सम्भवतः कभी रहा हो। गं मं दोनों तीव्र स्वरूप का राग भी सम्प्रति प्रचलन में नहीं है। मूलकार ने चार रागों का सरगम दिखलाया जो यमनी राग से प्रचलन में उस समय रहे होंगे और चार रागों का उल्लेख किया। जिससे कुल आठ रागों का स्वरूप प्राप्त होता है। प्रश्न यह है कि अन्य और चार राग कौन थे जिन्हें मिलाकर कुल बारह भेद यमनी के बन जायें। यह एक अन्वेषण का विषय है।

## राग कुडाई

कुडाई सादिमा ज्ञेया षाडवा धैवतोज्झिता ।
सम्पूर्णा वा कैश्चिदुक्ता द्विविधा कीर्तिता बुधैः ।।५७।।

सरगम – स ग म प म रे ग रे स रे म ध नी स ध नी स प म ध नी स
रे ग म प म ध नी स रे स नी नी ध ध ध ध प म प ग रे सा ।।५७।।

मूलार्थ

कुडाई राग में आदि अर्थात् वादी स्वर सा है। इसलिए इसका संवादी स्वर मध्यम है। धैवत वर्जित होने से यह राग षाडव जाति का है। कुछ आचार्यों के मत में सम्पूर्ण जाति का माना गया है।

सा ग म प म रे ग रे स रे म ध नी सां प म ध नी सां, रे ग म प ध नी
सां रें सां नी नी ध ध ध प म प ग रे सा

विवृत्ति

राग कुडाई को ग्रन्थकार ने दो प्रकार का माना है – षाडव एवं सम्पूर्ण। षाडव में ध वर्जित है। वादी स्वर सा को माना है। अत: संवादी मध्यम उचित दिखाई देता है। इसमें विशेष कथन और कुछ नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि सभी स्वर शुद्ध ही प्रयुक्त होते हैं। इनका परिचय इस प्रकार है।

षाडव जाति का कुडाई –
आरोह – सा रे ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प नि प म ग रे म प म ग रे सा

इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर मानना चाहिए। वादी संवादी सा म ग्रन्थकार के अनुसार उचित है।

सम्पूर्ण जाति का राग कुडाई –
आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि़ सा रे ग म म प ध नि सां नि ध प म म ग रे सा
गायन-वादन समय – रात्रि प्रथम प्रहर
वादी-संवादी – सा एवं म
थाट-बिलावल

## राग नागध्वनि

नागध्वनी शुद्धतीव्रमध्यमा गनिकोमला ।
शुद्धस्वराथवा ज्ञेया सम्पूर्णा पादिमा स्मृता ।।५८।।

सरगम – प ध स रे ग ग रे स ध प म ग रे स नी ध प म ग रे ग रे प ध प ध म ग म ग रे स रे ग रे स रे ग म प ध नी ध प म प ध म प रे रे ग ग म म रे रे स स नी नी स रे स ॥५८॥

मूलार्थ

नागध्वनि राग में शुद्ध एवं तीव्र मध्यम कोमल ग तथा नि का प्रयोग है अथवा सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका आदि अर्थात् वादी स्वर 'प' है तथा चलन के आधार पर इसका संवादी स्वर रे है। इसका सरगम (चलन) इस प्रकार है –

प़ ध़ सा रे ग॒ ग॒ रे सा ध प म ग॒ रे सा नी॒ ध प म ग॒ रे प ध प ध म ग॒ म ग॒ रे सा रे ग॒ रे सा रे ग॒ म॑ प ध नी॒ ध प म॑ प ध म॑ प रे रे सा ग म म रे रे सा सा नी़॒ नी़॒ सा रे सा

विवृति

मूल पाठ में 'नागध्वनी' पाठ है परन्तु ध्वनि शब्द (ह्रस्व इकारान्त) ही शुद्ध है। नागध्वनि राग का विवरण प्रस्तुत करते हुए ग्रन्थकार ने इसके दो स्वरूप माने हैं। प्रथम वह जिसमें सभी स्वर शुद्ध नहीं है। अर्थात् दोनों मध्यम तथा ग॒ नि॒ कोमल स्वर लगते हैं। और द्वितीय वह है जिसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर प तथा संवादी रे है। इससे यह ज्ञात होता है कि इसका चलन मध्य एवं तार सप्तकों में अधिक रहेगा। प्रथम सप्तक में चलन अल्प रहेगा। इसका ग॒ नि॒ कोमल तथा दोनों मध्यमों का प्रयोग मानने पर काफी थाट का मानना उचित है। परन्तु सभी स्वर शुद्ध मानने पर इसका थाट का विलावल हो जाता है।

(१) दोनों मध्यम ग॒ नि॒ कोमल वाला नागध्वनि

आरोह – सा रे ग॒ रे सा रे ग॒ म॑ प ध नि॒ सां
अवरोह – सा नि॒ ध प म॑ प ध म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प॒ ध॒ सां रें गं॒ गं॒ रें सां ध प म ग॒ रे सा

इस राग का थाट काफी, गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर तथा जाति सम्पूर्ण है।

(२) शुद्ध स्वर वाला नागध्वनि

आरोह – सा रे ग रे सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म प ध म प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प ध सां रें गं गं रें सां ध प म ग रे सा
थाट – बिलावल, जाति – सम्पूर्ण, वादी-संवादी –प रे
गायन-वादन का समय – दिन का प्रथम प्रहर

नागध्वनि राग उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय दोनों संगीत पद्धतियों में विद्यमान है।

(१) उत्तर भारतीय पद्धति

आरोह – सा ग रे ग म ग म प प नि ध प नि प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध नि ध प म ध प म रे ग म ग रे ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग रे ग म ग म प प नि ध नि ध प म ध प म रे ग म ग रे ग सा
वादी-संवादी – ग तथा ध
समय – रात्रि का दूसरा प्रहर, जाति – सम्पूर्ण, थाट – बिलावल

(२) दक्षिण भारतीय

आरोह – सा रे सा म ग म प नि ध म प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि ध नि प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे सा म ग म प नि ध म प नि ध नि प म ग सा
जाति – सम्पूर्ण-षाडव, समय – रात्रि का प्रथम प्रहर, वादी-संवादी – सा एवं म

नागध्वनि राग उत्तर एवं दक्षिण भारतीय दोनों पद्धतियों में पूर्णतया प्रसिद्ध है। दक्षिण भारतीय संगीत पद्धतियों में नाग शब्दपूर्वक लगभग २८ राग हैं, जैसे नागकुन्तली, नागगन्धर्व, नागगांधारी आदि पर वे सब पृथक् कई थाटों से सम्बन्धित है। वे नागध्वनि के प्रकार नहीं माने जा सकते।

## राग शङ्कराभरण

शंकराभरणो ज्ञेयो गान्धारस्वरवर्जितः ।
शुद्धमध्यमसंयुक्तः शुद्धतीव्रनिसंयुतः ॥
गान्धारस्वरसंयुक्तः शङ्करः परिकीर्तितः ।
सम्पूर्णो वाथ कैश्चित्तु प्रोक्तो गानविशारदैः ॥५९॥

सरगम – स रे म प ध नी स स नी ध म म प म रे स, स नी ध प ध नी
स रे म ग म प, म ग रे स रे ग म प ग रे ग म ग रे प स नी ध नी स रे
नी स ध नी स स ॥५९॥

मूलार्थ

गान्धार स्वर वर्जित शुद्ध मध्यम से युक्त शुद्ध एवं तीव्र निषाद युक्त शङ्कराभरण राग जानना चाहिए और इसमें गान्धार स्वर को संयुक्त कर देने पर यह शङ्कर राग कहा गया है। इसे कुछ गानविद्या के विद्वान्जन सम्पूर्ण जाति का कहते हैं तथा स्वीकार करते हैं। इसका स्वर समुदाय इस प्रकार है –

सा रे म प ध नी सां सां नीं ध म म प म रे सा, सा ऩी ध़ प़ ध़ ऩीं सा रे
म ग म प म ग रे सा रे ग म प, म ग रे सा रे ग म प ग रे ग म ग रे प
सां नी ध नी सां रें नी सां ध नि सां सां

विवृत्ति

राग शङ्कराभरण में मूलकार ने गान्धार स्वर को वर्जित माना है तथा शुद्ध मध्यम, शुद्ध एवं तीव्र नि का प्रयोग स्वीकार किया है। यह राग षाडव-षाडव जाति का इस विवेचन से सिद्ध होता है। मूलकार के प्रतिपादन के आधार पर राग शङ्कराभरण का परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां निं ध प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध निं ध प म म म प म रे
जाति – षाडव-षाडव, वादी-संवादी – सा तथा म
थाट – बिलावल, गायन-वादन का समय – रात्रि द्वितीय प्रहर

इस राग का उल्लेख सम्प्रति अत्यल्प है। कर्नाटक संगीत पद्धति में भी यह अप्रसिद्ध सा है। वहाँ इसे धीर शंकराभरण थाट (मेल) के अन्तर्गत कथमपि रख सकते हैं किन्तु मूलकार के अनुसार स्वरों में अन्तर आता है। धीर शंकराभरण राग में सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। जबकि प्रकृत शंकराभरण में शुद्ध मध्यम एवं तीव्र निषाद का प्रयोग कहा गया है और थाट को अगर राग मानकर कर आश्रय राग के रूप में स्वीकार किया जाय तो यह राग बिलावल के समान शुद्ध स्वर वाला होगा। रागकोष में इस राग का न तो कर्नाटक पद्धति में, न ही उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में उल्लेख है। *संगीत*

*सागर* नामक पुस्तक में भी कई रागों का अत्यल्प परिचय आरोह-अवरोह के रूप में दिया गया है जहाँ इसका परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह –सां नि प म ग रे सा

इससे अधिक इस राग परिचय प्राप्त नहीं होता। मेरे मत में बिलावल के म ग म रे इस स्वरूप को न दिखा कर मूलकार के अनुसार म म प म रे इस रूप का प्रयोग किया जाय और गान्धार वर्जित कर दिया जाय तो शङ्कराभरण राग का स्वरूप अधिक अच्छा हो। इस आधार पर इसमें शुद्ध नि का प्रयोग मात्र स्वीकार किया जाना चाहिए ऐसा मानने पर इसका परिचय यह होना चाहिए –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म म प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध नि ध प म म प म रे सा
थाट – बिलावल या धीर शंकराभरण (द. भा. सं.)
वादी-संवादी – सा तथा ग
वादन-गायन का समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर
जाति – षाडव-षाडव

इसके अतिरिक्त मूलकार ने राग शंकर का उल्लेख किया है और शंकराभरण के समान सभी स्वरों का यथावत प्रयोग मानते हुए गान्धार का प्रयोग स्वीकार करके सम्पूर्ण जाति का स्वीकार किया है। इस राग का पूर्ण परिचय इस प्रकार होता है –

शङ्कर

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां निं ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा निं ध़ प़ ध़ नि़ सा रे म म प म ग रे सा रे सा नि़ सा ध़ नि़ सा सा
वादी-संवादी – सा म
गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
थाट – विलावल
जाति – सम्पूर्ण

सम्प्रति उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में प्राप्त राग शङ्कर का विवरण –

थाट – बिलावल, समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर

वादी-संवादी – प तथा सा
जाति – औडव-षाडव
आरोह – सा ग प नि ध सां
अवरोह – सा नि प नि ध सां नि प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि ध सां नि ऽ प ग प रे ग सा

मूलकार ने "सम्पूर्णो वाथ कैश्चित्तु" इस कथन से शंकर के और भी प्रकार स्वीकार किए हैं, ऐसा प्रतीत होता है। उस आधार से पूर्वोक्त शंकर राग का भी प्रभेद ग्रहण किया जा सकता है।

## राग बड़हंसी

बडहंसी निपूर्वा स्याद् गनीवेलावल्या: स्वरै: ।
ज्ञेया च ऋषभाद्येषा विद्वद्भि: परिकीर्तिता
तीव्रमध्यमसंयुक्ता रागमेलादनेकधा ॥६०॥

सरगम – रे रे ग प प ध नी स स स स ध नी नी स नी म प ग म म ग
रे रे स स ग ग ग प प ध नी नी स नी ध प ग ॥६०॥

मूलार्थ

बड़हंसी राग का मूल स्वर (वादी स्वर) 'नी' है। ग एवं नी का प्रयोग वेलावली राग के स्वरों के अनुसार होता है। इसका आदि स्वर विद्वज्जन ऋषभ स्वर को मानते हैं। इसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। अन्य रागों के मेल से इसके अनेक भेद होते हैं। इसका सरगम इस प्रकार हैं –

रे रे ग प प ध नी सां सां सां सां ध नी सां मं प ग मं मं ग रे रे सा सा ग
ग ग प प ध नी नी सां नी ध प ग

विवृत्ति

मूलकार ने बड़हंसी राग में तीव्र मध्यम को छोड़कर सभी स्वरों को शुद्ध माना है तथा किसी स्वर को वर्जित नहीं माना। किन्तु प्रदर्शित सरगम के आधार पर यह वक्र चलन

वाला सम्पूर्ण जाति का राग ज्ञात हो रहा है। जिसका पूर्ण परिचय इस प्रकार माना जा सकता है –

आरोह – सा रे ग प ध नि सां
अवरोह – सां ध नि सां मं प ग मं ग रे सा ग प ध नि सां नि ध प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे रे ग प ध नि सां मं प ग मं ग रे सा

वादी स्वर नि तथा संवादी स्वर ग है। थाट-राग के स्वर चलन के आधार पर इस राग का थाट यमन माना जायेगा। गायन का समय है रात्रि का द्वितीय प्रहर।

मूलकार ने बड़हंसी को "रागमेलादनेकधा" इस कथन से अनेक प्रकार का माना है। पर उसका कोई स्वरूप प्रदर्शित नहीं किया। सम्प्रति इस प्रकार के रागों में बड़हंसी स्वयं काफी थाट में है जिसे बड़हंस सारंग के नाम से जाना जाता है, प्रसिद्ध है तथा बलहंस राग कलहंस, रक्त हंस, धवल हंसी, नलिनहंसी, भ्रमरहंसी राग भी इस क्रम के राग माने जा सकते हैं।

बलहंस राग

थाट – खमाज
आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म रे म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प म प ध नि॒ ध प म रे म ग सा
वादी-संवादी – सा तथा म
गायन-वादन का समय – पूर्वाह्न
जाति – षाडव सम्पूर्ण

कलहंस राग

थाट – आसावरी (चारुकेशी)
आरोह – सा रे ग म प ध॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – म प ध॒ सां नि॒ ध॒ प प म ग रे ग रे सा
वादी-संवादी – ध, रे, समय – प्रात:
जाति – षाडव सम्पूर्ण

रक्तहंस

थाट – काफी, जाति – औडव,
आरोह – सा रे म प ध सां
अवरोह – सां नि॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म प ध सां नि॒ प म रे
वादी-संवादी – रे तथा प
समय – दिन द्वितीय प्रहर

धवलहंसी – धवलहंसी राग कर्नाटक पद्धति का राग है। इसका (मेल) थाट सिंहेन्द्र मध्यम है। जाति-औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। वादी स्वर सा संवादी म है।

इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म॑ प ध॒ सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म॑ प ध॒ नि ध॒ प म॑ ग॒ रे ग॒ रे सा

नलिनहंसी – यह राग कर्नाटक पद्धति का शूलिनी थाट (मेल) से जन्य है। जाति-सम्पूर्ण-षाडव है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है। वादी स्वर रे संवादी ध है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रें ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म रें सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रें ग म ध प नि ध प म रें

भ्रमरहंसी – यह कर्नाटक पद्धति का सिंहेन्द्र मध्यम थाट (मेल) से जन्य है। इसकी जाति षाडव-षाडव है। गायन-वादन का समय सायंकाल है। वादी ग संवादी नि है। इसमें तीव्र म॑ तथा ग॒ ध॒ कोमल और अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म॑ प नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग॒ म॑ प नि ध॒ प म॑ ग॒

जैसा कि पूर्व में ही कहा गया था कि राग बड़हंसी से मिलता राग बड़हंस सारंग राग प्राप्त है। यद्यपि केवल नाम की ही साम्यता दिखलाई पड़ती है। इसमें स्वरों आदि की कोई साम्यता नहीं दिखलाई पड़ती। *संगीत सागर* पुस्तक में सम्पादक प्रभुलाल गर्ग ने अपने *रागकोष* में एक बड़हंस राग का उल्लेख किया है। किन्तु उसका भी स्वरूप इससे नहीं मिलता। इन दोनों का विवरण इस प्रकार है –

बड़हंस सारंग

थाट – काफी, वादी-संवादी – रे प
समय – दिन का द्वितीय प्रहर, जाति – औडव
आरोह – सा रे म प नि सां
अवरोह – सां नि॒ प म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे म प नि॒ प म रे सा

बड़हंस

थाट – खमाज, जाति – सम्पूर्ण
समय – दिन का द्वितीय प्रहर
वादी-संवादी – ग तथा नि
आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग म प ध नि नि॒ ध प म ग रे सा

## राग बरवा

रागिनी बरवा ज्ञेया गनिकोमलसंयुता ।
शुद्धतीव्रमसंयुक्ता सम्पूर्णा शास्त्रसम्मता ।।६१।।

सरगम – रे रे रे ध ध प प प ग ग म म प म म म प प ध ध म म म म
म म नी स स रे म ग रे स ग ग रे स स नी नी ।।६१।।

मूलार्थ

रागिनी बरवा में ग॒ नि॒ कोमल, शुद्ध तीव्र मध्यम, शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें सभी सातों स्वरों का प्रयोग शास्त्रसम्मत है। इसका सरगम इस प्रकार हैं –

रे रे रे ध ध प प प ग॒ ग॒ म॑ म॑ प म॑ म॑ म॑ प प ध ध म॑ म॑ म॑ म॑ म॑ म॑ नी़
सा सा रे म ग॒ रे सा ग॒ ग॒ रे सा सा नी़ नी़

विवृति

ग्रन्थकार बरवा राग में ग॒ नि॒ कोमल, शुद्ध तीव्र मध्यम स्वरों का प्रयोग मानकर इसे सम्पूर्ण जाति का राग मानता है। परन्तु सरगम की दृष्टि से यह सम्पूर्ण जाति का राग वक्र-चलन का स्पष्ट होता है। इसका सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार माना जा सकता है –

आरोह – सा रे म ग॒ रे ध प ध म नि॒ सां
अवरोह – सां रें मं गं रें सां नि॒ सां नि॒ ध प म॑ प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ध ध प ग॒ म॑ प म॑ प ध म नि़॒ सा रे म ग ग रे सा

वादी रे संवादी प स्वर प्रतीत होता है। गायन-वादन का समय प्रातःकाल है।

सम्प्रति प्राप्त बरवा राग में ग॒ नि॒ कोमल अवश्य है पर म शुद्ध ही प्रयोग में है तथा आरोह में ग स्वर वर्जित होने से षाडव सम्पूर्ण जाति का राग माना जाता है। इसका सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म प ग॒ रे ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध प म प ग॒ रे ग॒ सा

वादी रे संवादी प, गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। इस राग का थाट काफी है।

यह राग, *रागकोष* ग्रन्थ में इसी प्रकार दिया गया है। इसके आरोह में सभी स्वर शुद्ध तथा ग को वर्जित माना गया है। इन्होंने इसमें दोनों नी का प्रयोग माना है।

भातखण्डे जी ने राग बरवा का जो विवरण दिया है उसके अनुसार यह सम्पूर्ण जाति का वक्र-चलन का राग है। जिसका पूर्ण विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ रे सा रे म प ध म प प ध सां, प ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध म ध प ग॒ रे ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ रे सा रे नि़॒ सा नि सा रे म प ग॒ रे ग सा
वादी-संवादी – रे तथा प
थाट – काफी

गायन-वादन समय – मध्याह्न

भातखण्डे जी द्वारा प्रदर्शित विवरण में भी अवरोह में निस्वर शुद्ध तथा अवरोह में दोनों गान्धार का प्रयोग हुआ है। इससे यह स्पष्ट है कि इन्हें दोनों नि तथा गान्धार स्वर अभीष्ट है।

यद्यपि ग्रन्थकार के द्वारा स्वीकृत सम्पूर्ण जाति के इस राग का प्रभेद भातखण्डे ने माना है पर ग नि का तथा मध्यम का प्रयोग तथैव नहीं माना।

## राग बहार

बहारो धादिमो ज्ञेयो वसंतीस्वरसम्मतः।
रागमेलाद् बहुविधो ज्ञेयः प्रोक्तः पुरातनैः ॥६२॥

सरगम – ध नी प म ग म म प प नी नी नी प ध नी स रे नी ध प प प
प प प नी नी स स स ध नी स रे स रे ध नी स प ध नी स ग ग ग ग
ग स रे रे नी स नी स प ध रे नी स ध प नी स रे नी स प ॥६२॥

मूलार्थ

राग बहार का आदि स्वर धैवत जानना चाहिये। इसामें राग बसन्त के स्वर भी अभिमत माने जाते हैं। अनेक रागों के मेल से यह राग पुरातन विद्वानों के द्वारा अनेक प्रकार का कहा गया है। इस राग का सरगम इस प्रकार है –

ध नी प म॑ ग म॑ म॑ प प नी नी नी प ध नी सां रें नी ध प प प प प प नी
नी सां सां सां ध नी सां रें॒ सां रें॒ ध नी सां प ध नी सां ग ग ग ग ग सा
रे॒ रे॒ ऩी सा ऩी सा प ध रें॒ नी सां ध प नी सां रें॒ नी सां प

विवृति

राग बहार का आदि स्वर (वादी) ग्रन्थकार ने 'ध' को स्वीकार किया है। फलतः द्वितीय प्रमुख स्वर (संवादी) 'ग' को मानना पड़ेगा। सरगम प्रयोग की दृष्टि से यह वक्र-चलन का षाडव, सम्पूर्ण जाति का राग है। मूलकार इसमें स्वरों का विवरण न देकर "वसंती स्वरसम्मता" कहकर राग बसंती के स्वरों का स्वरूप मानता है। ग्रन्थकार ने अपने राग विवरण में वसन्तिका का उल्लेख किया है और उसमें रे॒ कोमल म॑ तीव्र माना है।

(श्लोक सं० २७) सम्भवत: ग्रन्थकार को इसमें यही स्वर अभिमत है। इस राग का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ऩि सा ग म॑ प नी प ध नि सां
अवरोह – सां नि प नी ध प म॑ ग सा रे॒ ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ ऩि सा ग म॑ प नी प ध नी प म ग

गायन-वादन का समय रात्रि ९-१२ है। चलन मध्य सप्तक का उत्तरांग में अधिक है। ग्रन्थकार इसे अनेक रागों के मेल से अनेक प्रकार का माना है।

सम्प्रति प्राप्त राग बहार का विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा म म प ग॒ म ध नि सां
अवरोह – सां नि॒ प म प ग॒ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा म प ग॒ म नि॒ ध नि सां
वादी-संवादी – म सा
गायन-वादन का समय – मध्यरात्रि
जाति – षाडव-षाडव

अन्य रागों के सम्मिश्रण से सम्प्राप्त बहार राग के प्रभेद इस प्रकार हैं –

(१) राग बसन्त बहार – राग बसन्तबहार बसन्त और बहार इन दो रागों के मेल से बना है। इसमें बसन्त के पूर्वी एवं बहार के काफी थाट का होने से यह राग किसी भी थाट के अन्तर्गत नहीं आता। इसमें रे॒ रे, ग॒ ग, म॑ म, ध ध॒ नि नि॒ इन स्वरों का दोनों रूपों में प्रयोग होता है। यह वक्र-चलन वाला राग है। इसे वक्र सम्पूर्ण जाति का राग कहा जाता है। वादी स्वर तार सप्तक का सां और संवादी पञ्चम है। गायन-वादन का समय रात्रि का तृतीय प्रहर (१२-३) है। इसका आरोह, अवरोह तथा चलन इस प्रकार है –

आरोह – सा म म प ग॒ म नि॒ ध नि सां
अवरोह – रें॒ नि॒ ध॒ प म॑ ग म॑ ऽ ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – म॑ ध॒ रें॒ सां नि॒ ध॒ प म॑ ग म॑ऽग रे सा। सा म ऽ म म म प म ग म म नि॒ प

(२) भैरवबहार – भैरव एवं बहार राग से निर्मित यह राग भैरव एवं काफी थाट से सम्बद्ध है। अत: किसी एक थाट के अन्तर्गत नहीं है। इसमें रे रे॒ ग ग॒ नि नि॒ स्वरों का

दोनों रूप में प्रयोग होता है। इसका म वादी तथा सा संवादी है। गायन-वादन समय प्रात:काल है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प म, म ध नि॒ सां रे॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म, ग रे॒ ग॒ रे॒ सा ऩि रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि ध़ सा सा ऩि सा रे॒ सा ऩि सा नि॒ ध़ ऩि रे सा रे॒ ग म
प म म ध॒ नि॒ सां सां नि ध प म ग रे॒ ग रे॒ सा

(३) परजबहार – यह राग परज एवं बहार राग के सम्मिश्रण से बना है जिसके कारण पूर्वी एवं काफी थाट के अन्तर्गत माना जाता है। कोई एक थाट इसका नहीं बन पाता। इसका सा वादी एवं प संवादी है। इसमें दोनों ग म ध नि का प्रयोग होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का चौथा प्रहर (३-६) है। इसकी जाति वक्र सम्पूर्ण है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग म॑ प ध॒ प नि॒ ध नि सां
अवरोह – सां रें ग॒ं रें सां नि॒ ध प म ग म॑ ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़॒ सा ग म प ध॒ प म ग म॑ ग रे॒ सा

## राग विहाग

विहाग: शङ्करोत्पन्नो रिधवर्जो रिवर्जक: ।
धवर्जो वा गनी तीव्रौ शुद्धतीव्रमसंयुत: ।।६३।।
एवं बहुविधो ज्ञेयश्शास्त्रे प्रोक्त: पुरातनै: ।

सरगम – नी स स ग म प नी नी स नी प म प म ग स नी प म नी स ग
म प नी स स ग म प नी स नी नी नी स प म ग म प ग म ग स नी नी
प म प नी नी स ग म प नी, वा – नी ध प म नी स नी ध प म ग रे स
नी नी प नी स ग म प नी स नी स नी ध प म ग म ग रे स नी ।।६३।।

मूलार्थ

राग शङ्कर से उत्पन्न राग विहाग में रे ध को वर्जित मानकर केवल रे अथवा केवल ध को वर्जित मानकर ग नी को तीव्र मानकर एवं शुद्ध तथा तीव्र म को मानकर पुरातन आचार्यों ने इस राग के अनेक प्रकार शास्त्रों में बतलाये हैं। इस प्रकार इस राग को अनेक भेदों वाला जानना चाहिए। इसका सरगम इस प्रकार है –

ऩीं सा गं म प नीं नीं सां नीं प म प मं गं सा ऩीं प़ म़ ऩीं सा गं म प नीं
सां, सा गं म प नी सां नी नी नी सं प मं गं म प गं म गं सा, नीं नीं प
म प नीं नीं सां ग म प नी,
अथवा
नीं ध प म नीं सां नीं ध प म गं रे सा ऩीं ऩीं प़ ऩीं सा ग मं प नीं सां नीं
सां नीं ध प मं गं म गं रे सा ऩीं

विवृति

इस राग को ग्रन्थकार ने रे ध को वर्जित मानकर या केवल रे या केवल ध को वर्जित मानकर, ग और नी का तीव्र तथा मध्यम का शुद्ध एवं तीव्र प्रयोग मान कर अनेक प्रकार का माना है। किन्तु सरगम के प्रथम भाग में रे ध वर्जित एवं शुद्ध तीव्र मध्यम युक्त राग का परिचय दिया है जो औडव जाति का राग बनता है। तथा द्वितीय भाग में आरोह में रे ध को वर्जित माना है तथा अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग किया है जिससे यह राग औडव सम्पूर्ण जाति का बनता है। ग्रन्थकार ने इस राग में ग नी का तीव्र प्रयोग स्वीकार किया है जिससे यह द्योतित होता है कि ग नि का प्रयोग क्रमशः आठवीं, इक्कीसवीं श्रुति में न होकर नवमी तथा बाइसवीं श्रुति में मानना पड़ेगा। इस राग के दोनों प्रकारों का विवेचन एवं पूर्ण विवरण इस प्रकार है –

(१) प्रथम प्रकार

आरोह – नि़ सा गं म प निं सां
अवरोह – सां निं प म प मं गं सा
मुख्य स्वर समुदाय – म प मं ग सा निं़ प़ म़ प़ निं़ सा गं म प निं सां

राग के गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आदि स्वर (वादी) का कथन इसमें नहीं है। परन्तु सरगम के आधार पर इसका ग वादी एवं नि संवादी स्वर स्पष्ट हो रहा है। इसका जाति औडव-सम्पूर्ण है।

(२) द्वितीय प्रकार

आरोह – सा गं म प निं सां
अवरोह – सा निं ध प मं गं म गं रे सा नि़
मुख्य स्वर समुदाय – निं ध प म निं सां। नि ध प मं ग सा निं निं प़ निं सां निं
ध प मं गं म गं रे सा निं़

इसकी जाति औडव-षाडव है। वादी संवादी वही ग नि है। गायन-वादन समय रात्रि का तृतीय प्रहर ही है।

इस राग को शङ्करोत्पन्ना कहा है। ग्रन्थकार ने शंकराभरण राग के विवेचन में शुद्ध मध्यम युक्त सम्पूर्ण जाति का राग माना है। फलतः विहाग राग भी तीव्र मध्यम एवं शुद्ध मध्यम युक्त माना गया है। इसका द्वितीय प्रकार शंकरा के अधिक समीप है। शंकरा का सरगम इस प्रकार ग्रन्थकार ने दिया है – सा रे ग म प ग रे ग म ग रे प निं ध नि सां इसमें 'ग म प ग रे ग म ग रे' इस स्वर की कुछ साम्यता बनती है। दोनों प्रकारों का थाट बिलावल कहा जा सकता है। सम्प्रति प्राप्त राग विहाग एवं उसके प्रकार –

(१) राग विहाग

इस राग का थाट बिलावल है। वादी 'ग' तथा संवादी नि है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। जाति औडव सम्पूर्ण है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं प ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि़ सा ग म प मं प ग म ग

कुछ विद्वान् इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर ही मानते है।

(१) मारू विहाग – इस राग का थाट कल्याण है। इसमें दोनों मध्यम का प्रयोग होता है। वादी स्वर ग एवं संवादी स्वर नि है। आरोह में ऋषभ एवं धैवत के वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा ग मं प नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं ग मं ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – मं ग मं ग रे, सा, सा नि़ सा म ग प मं ग रे, सा

(२) हेम विहाग – इस राग का थाट बिलावल है। इसमें हेम और विहाग का मिश्रण है। वादी सा तथा संवादी प है। इसके आरोह में धैवत का प्रयोग वक्र रूप में है तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग कथमपि नहीं होता। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग म प ध प नि सां
अवरोह – सां नि प ध प ग, म प ग म ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि सा ग रे सा ऩि प़ ध़ प़ सा सां नि प ध प ग म प ग
म ग म रे सा

(३) छायाविहाग – यह छाया एवं विहाग के मेल से बना है। वादी संवादी ग नि तथा गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। जाति औडव सम्पूर्ण है। इसका थाट बिलावल है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग म प नि सां रें सां
अवरोह – सां नि प नि ध प प रे ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग म प नि सां रें सां नि प नि ध प प रे ग म ग रे सा

(४) नट विहाग – इस राग का थाट बिलावल है। इसमें दोनों निषाद एवं अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ध वर्जित होने से इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण है। इसका वादी ग संवादी नि है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। कुछ गुणी जन इस राग का वादी संवादी सा प स्वरों को क्रमशः मानते हैं। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प ग म नि॒ ध प ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प ग म ग सा रे रे ग ग म नि॒ ध प ग म ग

(५) पटविहाग – इस राग का थाट बिलावल है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रे ध वर्जित होने से जाति औडव सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर ग एवं संवादी नि है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि ध प ध नि प ध म प ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म प म ग रे सा ऩि प़ ऩि सा

(६) चाँदनीविहाग – इसका थाट बिलावल, जाति औडव-सम्पूर्ण तथा वादी ग और संवादी नि है। आरोह में रे ध वर्जित है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इस राग में दोनों निषाद लगते हैं। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प मं प ध नि॒ सां नि॒ ध प ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग म प नि सां नि प मं प ध नि॒ (सां) नि ध प ग म ग

इस प्रकार विहाग से सम्बन्धित अनेक रागों का स्वरूप प्राप्त होता है। ग्रन्थ में प्रथम प्रदर्शित रे ध वर्जित राग विहाग जिसका सरगम प्रथम दिया गया है दोनों मध्यम युक्त प्रसिद्ध नहीं है। किन्तु द्वितीय विहाग का जो स्वरूप सरगम के रूप में दिया गया है उसका प्रचलन आरोह में रे ध वर्जित एवं अवरोह में सम्पूर्ण अर्थात् औडव सम्पूर्ण जाति का जिसमें दोनों मध्यम का प्रयोग होता है, प्रचलित है। केवल ध वर्जित राग विहाग का प्रयोग तथा केवल रे वर्जित राग विहाग का प्रयोग देखने में सम्प्रति नहीं आता। सम्भवत: ग्रन्थकार के समय रहा हो। यदि इस समय उसकी परिकल्पना की भी जाय तो उन दोनों का आरोह अवरोह क्रमश: इस प्रकार होगा –

(१) रे वर्जित राग विहाग

आरोह – ऩि सा ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प मं प ग म ग सा

(२) ध वर्जित आरोह – ऩि सा रे ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प मं प ग म ग रे सा

शेष परिचय विहाग के समान होगा। पर इनका नामकरण क्या हो और इनसे मिलते जुलते रागों से इनके चलन से बचाव कैसे किया जाय यह एक अत्यधिक विश्लेषण का विषय है।

## राग भीमपलासी

भीमपूर्वा पलासी स्यात् कौमलौ सनिगौ रिधौ ।।६४।।

सरगम – ध प प म प प प प म प प म ग म प म म ग ग रे स स नी
नी स ग ग म म रे रे स स स स स नी नी ध प प ग रे स स स स रे ग
रे स नी ध स स ध प ।।६४।।

मूलार्थ

भीमपलासी राग में रे ग ध नि इन कोमल स्वरों का प्रयोग होता है। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ध॒ प प म प प प प म प प म ग॒ म प म म ग॒ ग॒ रे॒ सा सा नी॒ नी॒ सा ग॒
ग॒ म म रे॒ रे॒ सा सा सा सा सा नी॒ नी॒ ध प प ग॒ रे॒ सा सा सा सा सा रे॒ ग॒
रे॒ सा नी॒ ध॒ सा सां ध॒ प

विवृति

भीमपलासी राग का ग्रन्थकार ने पूर्ण परिचय नहीं दिया। क्या इसका आदि स्वर है, कौन स्वर वर्जित है इसका कोई उल्लेख नहीं है। आरोह के स्वरों का सरगम में भी स्पष्ट प्रदर्शन नहीं है। किन्तु जो कुछ झलक दिखायी पड़ती है उसके अनुसार इसमें आरोह में रे ध वर्जित दिखायी पड़ते हैं। फलत: इसकी जाति औडव सम्पूर्ण होगी। ग्रन्थकार ने इसमें रे ग ध नि इन स्वरों को कोमल कहा है जिससे इसका थाट भैरवी सिद्ध होता है। जिसके आधार पर गायन-वादन का समय प्रात: होने चाहिए। किन्तु सम्प्रति इस राग का गायन-वादन् का समय मध्याह्न माना गया है। सम्प्रति प्रचलित भीमपलासी में रे ध कोमल नहीं अपितु शुद्ध लगते हैं। तथा उसका वादी संवादी ग नि क्रमश: माने जाते हैं। किन्तु इसमें सरगम के आधार पर सा वादी प संवादी स्वर अधिक स्पष्ट हो रहे हैं।

इस राग में भीम एवं पलासी दो रागो का मिश्रण इसके नाम से प्रतीत होता है। परन्तु सम्प्रति एक स्वतन्त्र राग के रूप में इसका पूरा प्रचार है। किञ्च ग्रन्थस्थ भीमपलासी में रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ स्वर कोमल होने से भैरवी थाट है तथा सम्प्रति प्राप्त भीमपलासी में केवल ग॒ नि॒ कोमल होने से काफी थाट है। सम्प्रति भीम एवं पलासी राग लगभग अप्रचलित से हो गये हैं। जिसमें पलासी का तो स्वरूप परिचय बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है। ग्रन्थस्थ एवं सम्प्रति प्राप्त भीमपलासी एवं भीम तथा पलासी राग का परिचय क्रमश: इस प्रकार है –

भीमपलासी ग्रन्थस्थ

आरोह – नि॒ सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ म प म ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि॒ नि॒ सा ग॒ म प म ग॒ म प ध॒ प प म प
थाट – भैरवी
जाति – औडव-सम्पूर्ण
समय – दिन ९-१२ स्वर प्रयोग रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल म शुद्ध

भीमपलासी आधुनिक

आरोह – नि॒ सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि॒ सा म म प ग॒ म ग॒ ग॒ रे सा
थाट – काफी, जाति – औडव-सम्पूर्ण
समय – दोपहर १२-३, स्वर प्रयोग ग॒ नि॒ कोमल शेष स्वर शुद्ध

राग भीम

इस राग का थाट काफी है। इसमें ग॒ नि॒ के कोमल तथा शुद्ध दोनों प्रकार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में रे॒ ध॒ वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। इसका वादी सा तथा संवादी प है। गायन-वादन का समय मध्याह्न १२-३ है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार हैं –

आरोह – नि॒ सा ग म प नि॒ सां
अवरोह – गं॒ रें सां नि॒ ध प ध म प ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि॒ सा ग म प म प नि॒ सां गं॒ रें सां नि॒ सां नि॒ ध प
ध म प ग

पलासी (पलाश्र) – यह राग इस समय दुर्लभप्राय है। बहुत बड़े गुणीजन ही सम्भवत: जानते हैं। *संगीत सागर* नामक पुस्तक में राग पलासी नाम से एक राग दिया गया है जिसमें दोनों ग दोनों नि तथा कोमल ध स्वर प्रयुक्त होते हैं। इसमें सभी स्वर आरोह-अवरोह में लगते हैं। अत: इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। राग के स्वरूप की दृष्टि से वादी ग संवादी नि है। थाट काफी यद्यपि प्रतीत होता है पर ध कोमल का प्रयोग इसमें अतिरिक्त दिखायी देता है। तथापि राग के चलन की दृष्टि से काफी थाट ही उचित है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ ग म प ध॒ नि॒ नि सां
अवरोह – सां नि नि॒ ध ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग॒ ग म प ध॒ नि॒ ध ध॒ प म ग॒

# राग यजेसंज्ञ

खम्भावत्याः समुत्पन्नो रिधौ यत्र च कोमलौ ।
मतीव्रः यजेसंज्ञस्तु रागमेलादनेकधा ।।६५।।

सरगम – स रे ग म म म प ध ध प म ध ध प म म म ग रे ग ग ग म म ग
रे स स नी स स ग म प ध नी स रे नी स स ।।६५।।

मूलार्थ

खम्भावती राग से समुत्पन्न जिसमें रे॒ ध॒ कोमल तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है उस राग का नाम यजेसंज्ञ है। अन्य रागों के साथ सम्बन्ध होने पर इसके अनेक प्रभेद होते हैं। इसकी सरगम इस प्रकार है –

सा रे॒ ग म॑ म॑ प ध॒ ध॒ प म॑ ध॒ ध॒ प म॑ म॑ ग रे॒ ग ग ग म॑ म॑ ग रे॒ सा सा
नी सा सा ग म॑ प ध॒ नी सां रें॒ नीं सां सां

विवृति

राग यजेसंज्ञ सम्प्रति कहीं प्रसिद्ध नहीं है। रे॒ ध॒ कोमल तथा म॑ तीव्र के प्रयोग से यह पूर्वी थाट का सिद्ध होता है। सरगम के आधार पर यह सम्पूर्ण जाति का है। इसका वादी स्वर ध॒ तथा ग संवादी स्वर प्रतीत होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म प ध॒ प म ध॒ नि सां रें॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म॑ प ध॒ नि सां रें॒ नि सां ध॒ ध॒ प म॑ म॑ ग रे॒ ग ग
म॑ म॑ ग रे॒ सा

राग खम्भावती के स्वर प्रयोग का जो स्वरूप है उसमें निषाद कोमल शेष स्वर शुद्ध हैं तथा आदि स्वर ध है। स्वरों की दृष्टि से यह राग उससे पूर्णतया भिन्न है। फिर खम्भावती समुत्पन्ना कथन का तात्पर्य क्या है? इसका उत्तर यही हो सकता है कि चलन की स्थिति से साम्यता हो पर यह भी नहीं है। सम्भवतः शास्त्रकार आदि स्वर एवं राग की प्रकृति को लेकर ही इसे खम्भावती समुत्पन्ना कहा है।

## राग पूरवी

गौरीस्वरसमुत्पन्ना पूरवी रिधकोमला ।
मतीव्रशुद्धयुक्ता वा सम्पूर्णोक्ता स्वरादिमा ॥६६॥

सरगम – स रे स नी नी स रे ग ग म प म ग म प प म म ग ग ग ग रे
स स नी ध प ध नी नी स म ध स स नी स प ग म म ॥६६॥

मूलार्थ

गौरी राग के स्वरों से समुत्पन्न राग को ग्रन्थकार ने पूरवी राग माना है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल एवं म॑ तीव्र माना गया है। शुद्ध म का प्रयोग भी माना जाता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसकी आदि स्वर म माना जाता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा रे॒ सा ऩी ऩी सा रे॒ ग ग म॑ प म॑ ग म॑ प प म॑ म॑ ग ग ग ग रे॒ सा सा
नी ध॒ प ध॒ नि नि सां म ध सां सां नी सां प ग म॑ म॑

विवृति

ग्रन्थकार ने राग पूरवी का जो स्वर प्रदर्शित किया है इससे इसका थाट पूर्वी होता है। स्वरों के प्रदर्शन से ग्रन्थोक्त सम्पूर्ण जाति का एवं स्वरों के प्रदर्शन से म वादी तथा सा संवादी होता है। वादी-संवादी की दृष्टि से गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर कहा जा सकता है। विकल्प में शुद्ध म का प्रयोग भी ग्रन्थकार स्वीकार करते हैं जिससे यह बात समझ में आती है कि राग के सौन्दर्य की दृष्टि से विवादी स्वर के रूप में शुद्ध म का प्रयोग बीच-बीच में दिखाया जा सकता है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ सा नि़ सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म॑ प ग म रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ सा नि़ नि़ सा रे ग ग म॑ प ग म ग म॑ प प म॑ म॑

पूरवी राग को ग्रन्थकार ने गौरी राग से उत्पन्न माना है। ग्रन्थकार गौरी राग में रे॒ ध॒ कोमल तथा म॑ को तीव्र मानता है और ग को वर्जित मानता है। किसी के मत में उसका प्रयोग भी स्वीकार किया है। चलन भी लगभग इसी राग के समान है। (देखिए श्लोक सं० १० में) अतएव इसे गौरी राग समुत्पन्ना कहा जाना उचित है।

सम्प्रति प्राप्त राग पूरवी जिसे इस समय पूर्वी कहा जाता है जो अपने थाट का मुख्य राग है उसका परिचय संक्षेप में इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा रे॒ ग मं प मं ध॒ नि सां
अवरोह – सां रें॒ नि ध॒ प मं प ग म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि सा रे॒ ग रे॒ ग रे॒ म ग रे॒ ग रे॒ सा
थाट – पूर्वी, 'ग' वादी 'नि' संवादी
गायन-वादन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर

आधुनिक राग पूर्वी एवं ग्रन्थोक्त राग पूरवी लगभग समान रूप में हैं। अन्तर इतना ही है कि राग पूर्वी का वादी संवादी ग नि है पूरवी का म सा है। दोनों मध्यम का प्रयोग दोनों रागों में समान है। गान्धार के मध्य में या अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग लगभग दोनों को स्वीकार्य है।

## राग पीलू

श्रीरागतः समुत्पन्नो रिधकोमलसंयुतः ।
पीलूर्मध्यमगान्धारशुद्धतीव्रसमन्वितः ।।६७।।

सरगम – रे ग रे ग नी स रे ग म प म ग ग नी स़ रे ग म प म ग रे स
नी स रे ग म प म म ग म ग नी स रे ।।६७।।

मूलार्थ

श्री राग से समुत्पन्न जिसमें रे॒ ध॒ कोमल स्वर प्रयुक्त होते हैं तथा मध्यम और गान्धार का शुद्ध एवं तीव्र दोनों का प्रयोग होता है पीलू राग कहा जाता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

रे॒ ग रे॒ ग ऩी सा रे गं मं प म ग ग ऩी सा रे॒ गं मं प म ग रे सा ऩी सा रे
गं मं प म म ग म ग ऩी सा रे

विवृति

पीलू राग को ग्रन्थकार ने श्री राग से समुत्पन्न कहा है। इसमें रे॒ ध॒ कोमल तथा मध्यम एवं गान्धार के शुद्ध तीव्र दोनों प्रकार स्वीकार किए हैं। सम्प्रति उत्तर भारतीय संगीत

में गान्धार शुद्ध एवं कोमल ही प्रयुक्त होते हैं न कि तीव्र, फलत: गान्धार को यहाँ पर एक श्रुति ऊपर अर्थात् नवमी श्रुति में माना जायेगा जिसका कोई स्वर चिन्ह सम्प्रति अनुपलब्ध है तथापि तीव्र मध्यम के समान ऊपर खड़ी लाईन देकर स्वर चिन्ह कल्पित किया जा सकता है। श्लोक के विवेचन के आधार पर इसमें धैवत का प्रयोग होना चाहिये था पर सरगम में इसका प्रयोग ग्रन्थकार ने नहीं दिखाया। इससे यह प्रतीत होता है कि धैवत का प्रयोग अत्यल्प है। सरगम में स्वर प्रयोग की दृष्टि से इसका म वादी सा संवादी होना चाहिए तथा थाट पूर्वी होना चाहिए। गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर इसका होगा।

इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा रे॒ गं मं प ऩि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प मं प म ग रे॒ सा रे॒ ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग रे॒ ग ऩि सा रे॒ गं मं प म ग ग ऩि सा रे॒

इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण देखने में आती है क्योंकि आरोह में धैवत का प्रयोग नहीं दिखायी देता।

ग्रन्थकार इस राग को श्रीरागजन्य मानते हैं। श्री राग में ग्रन्थकार ने रे॒ ध॒ कोमल मं तीव्र माना है इसी कारण तत्सदृश स्वर इस राग में प्रयुक्त होने से इसको भी श्री राग जन्य माना है।

सम्प्रति प्राप्त पीलू राग का स्वरूप इस प्रकार है –

पीलू – इस राग का थाट काफी है वादी संवादी ग नि है। इसमें सभी स्वरों का प्रयोग होने के कारण जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। इसके गायन-वादन का समय दिन का तीसरा प्रहर (१२-३ दिन) है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग॒ रे ग॒ म प ध॒ प नि॒ ध प सां
अवरोह – नि॒ ध प म ग॒ ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – ऩि सा ग॒ ऩि सा ़प ध़॒ ऩि सा

ग्रन्थस्थ पीलू राग एवं साम्प्रतिक पीलू राग दोनों में कोमल धैवत प्रयुक्त होते हैं पर तीव्र म एवं कोमल रे का प्रयोग प्रचलित पीलू में नहीं है। दोनों का थाट भी भिन्न है। स्वरों के कारण थाट में भी अन्तर है।

# राग तैलंगी

तैलङ्गी गादिमा ज्ञेया छाया तद्देशजा मता ।
सम्पूर्णा च स्वरैः शुद्धा कैश्चित् तीव्रा स्वरोदिता ।।६८।।

सरगम – ग म प नी स स ग ग म प नी स ग म प नी नी स स नी स प
म ग नी स ग म म म ग रे रे स स ग म म प नी प नी प नी स नी प म ग
म ग नी नी प म ग रे स स नी प म नि स ग ।।६८।।

मूलार्थ

राग तैलंगी का आदि (वादी) स्वर ग है। इस राग में तैलंग देश से सन्बन्धित स्वरों की छाया विद्वान लोग मानते हैं। इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। कुछ लोग इसमें तीव्र स्वरों का प्रयोग मानते हैं। इसकी सरगम इस प्रकार है –

ग म प नी सां सां ग म प नी सां ग म प नी नी सां सां नी सां प म ग ऩी
सा ग म म म ग रे रे सा सा ग म प नी प नी प नि सां नी प म ग म ग
नी नी प म ग रे सा, सां नी प म ऩि सा ग

विवृति

इस राग को ग्रन्थकार ने सम्पूर्ण जाति का राग माना है पर आरोह में रे ध तथा अवरोह में ध का प्रदर्शन सरगम में नहीं किया इससे यह प्रतीत होता है कि यह राग औडव-षाडव जाति का है। सम्भवतः इनका अत्यल्प प्रयोग उसे स्वीकार्य हो पर उसका कोई निर्देश मूल में नहीं है। सम्पूर्ण शब्द से केवल अनुमान लगाया जा सकता है। मूल में "छाया तद्देशजा मता" का तात्पर्य दो प्रकार से स्पष्ट हो रहा है — (१) छाया राग तैलङ्गी राग के देश अर्थात् स्थान से उत्पन्न है। (२) इस राग में तैलंग देश के देशज संगीत का प्रभाव है। इसमें प्रथम तात्पर्य उचित नहीं है क्योंकि राग छाया (श्लोक संख्या ७५ में 'नटदेशजा प्रोक्ता') आगे विवेचित हो रही है। इसलिए छाया शब्द का तात्पर्य यहाँ प्रभाव मानकर पंक्ति का पूर्वोक्त द्वितीय तात्पर्य मानना उचित ज्ञात होता है। अतः तैलंगी में तैलंग देश के देशज संगीत का प्रभाव मानना उचित होगा। इस राग में ग के वादी होने से नि संवादी होगा तथा गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर माना जा सकता है। सम्पूर्ण शुद्ध स्वर के लगने से इसका थाट बिलावल माना जायेगा। परन्तु तीव्र स्वरों का प्रयोग यदि मतान्तर से माना जाये तो मं के तीव्र प्रयोग होने से यमन थाट कहना कथमपि उचित माना जा सकता है। प्रदर्शित सरगम के आधार पर इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – ऩि सा ग म प नि सां नि सां
अवरोह – सां नि प म ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – ग म प नि सां नी प म ग म ग

सम्प्रति तैलंग राग तिलंग के नाम से विख्यात है। इसका थाट खमाज तथा वादी संवादी ग नि हैं। जाति औडव-औडव है। इसमें अवरोह में कोमल नी का प्रयोग होता है। शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे ध पूर्णतया वर्जित है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर (९-१२) है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि॒ प म ग सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि॒ प ग म ग

ग्रन्थोक्त राग तैलंग तथा सम्प्रति प्रसिद्ध तिलंग में यही भेद है कि ग्रन्थोक्त राग के अवरोह में ऋषभ लगता है। तिलंग में नहीं लगता, शेष स्वरों की समानता है। किन्तु दोनों के चलन में अन्तर है। ग्रन्थोक्त तैलंग राग के स्वरों के प्रदर्शन के आधार पर मध्य सप्तम में उसका चलन अधिक रहेगा। जबकि तिलंग राग का चलन मध्यम एवं तार सप्तक दोनों में होता है। पर मन्द सप्तक में इन दोनों रागों का चलन अल्प दिखाई देता है।

## राग योगी बंगालिका

योगी बंगालिका प्रोक्ता रिधौ यत्र च कौमलौ ।।६९।।

सरगम – स स रे म म प ध ध प म प प म ध ध प म ग रे स स नी रे
रे स नी रे रे स नी ध प म प प म ध प म ग रे स ।।६९।।

मूलार्थ

योगी बंगालिका राग में रे॒ ध॒ कोमल एवं शेष स्वरों का शुद्ध प्रयोग होता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा सा रे॒ म म प ध॒ ध॒ प म प म ध॒ ध॒ प म ग रे॒ सा सा ऩी रे॒ रे॒ सा ऩी
रे॒ रे॒ सा नी ध॒ प म प प म ध॒ प म ग रे॒ सा

विवृति

योगी बंगालिका राग में कौन वादी स्वर है इसका उल्लेख नहीं है। पर राग के सरगम का प्रारम्भ सा स्वर से है तथा दूसरा स्वर म का प्रयोग पर्याप्त है। फलत: सा वादी म संवादी माना जा सकता है। सरगम में आरोह में ग का प्रयोग न होने से इसकी जाति षाडव सम्पूर्ण है। थाट इसका भैरव है। गायन-वादन का दिन का प्रथम प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म प ध॒ प म ध॒ नि सां
अवरोह – सां नि ध॒ प म प म ध॒ प म ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ म म प ध॒ ध॒ प म ध॒ प म ग रे॒ सा नि़ रे॒ रे॒ सा

इस राग का सम्प्रति कहीं प्रचार-प्रसार नहीं है।

## राग जानपुरी

जानपुर्या: स्वरो ज्ञेया तोडिका सदृशा बुधै:।
धैवतर्षभगान्धारनिषादस्वरकोमलै: ॥७०॥

सरगम – रे रे म नी नी स रे प म ग ग ग रे स स ग ग रे स स स स स
म म म म प प प ध ध ध प नी नी ध प नी नी ध प ध नी नी ध प ध
प प ग म ध प प ध म प ग ग ग म म ग रे स ॥७०॥

मूलार्थ

राग जानपुरी में राग तोडिका के समान ही स्वरों का प्रयोग गुणी जन विद्वानों को करना चाहिए। इस राग में रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ चारों स्वर कोमल प्रयुक्त होते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

रे॒ रे॒ म नी़॒ नी़॒ सा रे॒ प म॑ ग॒ ग॒ ग॒ रे॒ सा सा ग॒ ग॒ रे॒ सा सा सा सा सा म॑ म॑
म॑ म॑ प प प ध॒ ध॒ ध॒ प नी॒ नी॒ ध॒ प नी॒ नी॒ ध॒ प ध॒ नी॒ नी॒ ध॒ प ध॒ प प
ग॒ म॑ ध॒ प प ध॒ म प ग॒ ग॒ ग॒ म॑ म॑ ग॒ रे॒ सा

विवृति

राग जानपुरी को ग्रन्थकार ने तोडिका सदृश कहा है। राग तोडिका का परिचय ग्रन्थकार ने नहीं अपितु रोडिका का (श्लोक सं ८ में) परिचय दिया है। जिसमें रे॒ ग॒ ध॒ कोमल

तीव्र मध्यम का प्रयोग माना है जिसका प्रभाव इसमें माना जा सकता है क्योंकि इसमें भी वही स्वर हैं। पर मध्यम के विषय में कोई उल्लेख नहीं है और नि॒ को भी कोमल माना गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि तोडिका की जगह रोडिका पाठ यहाँ होना चाहिए। साथ ही इस राग में भी तीव्र मध्यम का प्रयोग करना चाहिए। इस राग का वादी स्वर ध संवादी ग होना चाहिए। गायन-वादन का समय दिन का प्रथम प्रहर, थाट भैरवी होना चाहिए। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ म॑ प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे॒ प म॑ ग॒ ध॒ प नि॒ नि॒ ध॒ प ध॒ म॑ प म॑ ग॒ रे॒ सा

सम्प्रति इससे मिलता हुआ राग जौनपुरी प्रसिद्ध है जिसका विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध॒ नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – म प नि॒ ध॒ प ध॒ म़ प ग॒ रे म प
थाट – आसावरी, वादी-संवादी – ध ग
गायन-वादन समय – दिन का प्रथम प्रहर

राग जानपुरी एवं जौनपुरी में चलन का स्वरूप कुछ अवश्य मिलता है। पर तीव्र मध्यम दोनों को पर्याप्त अलग कर देता है। इसी कारण थाट में भी अन्तर दिखायी देता है। यदि इसमें शुद्ध मध्यम का प्रयोग स्वीकार किया जाय तो आधुनिक जौनपुरी एवं ग्रन्थोक्त जौनपुरी में पर्याप्त समानता मानी जायेगी। किन्तु उस अवस्था में भी ग्रन्थोक्त जानपुरी का थाट भैरवी ही रहेगा। मेरे विचार से तोडिका (रोडिका) सदृश इस कथन के कारण इसमें तीव्र मध्यम मानना उचित कहा जायेगा।

## राग अओठी

कल्याणात्समुत्पन्ना अओठी सर्वसम्मता ।
शुद्धस्वरा पादिमा वा निषादद्वयसंयुता ॥७१॥

सरगम – प ध स रे ग म म ग रे स नि प ध स रे ग म म ग रे स नी प ध प रे ग म प ध नी प ध स रे ग म प म ग रे स नी प नी स रे ग म प म ग रे म ग रे स ॥७१॥

मूलार्थ

कल्याण राग से समुत्पन्न राग अओठी सभी को अभिमत है। इसमें सभी स्वर शुद्ध हैं पर दोनों निषादों का प्रयोग होता है। इसका आदि स्वर प है। इस राग की सरगम इस प्रकार है –

प़ ध़ सा रे ग म म ग रे सा नी़ प ध सा रे ग म म ग रे सा नी़ प ध प रे
ग म प ध नी प ध सां रें गं मं पं मं गं रें सां नी़ प नी़ सां, रे ग म प म
ग रे म ग रे सा

विवृति

राग अओटी को कल्याण राग से उत्पन्न कहा है। पर कल्याण राग का उल्लेख न करके ग्रन्थकार ने राग कल्याणी का परिचय दिया है। सम्भवत: उसे ही कल्याण शब्द से कह रहा है क्योंकि उस राग में सभी स्वरों को शुद्ध माना है। अन्तर केवल इतना ही है कि उसमें सभी स्वर शुद्ध हैं और इसमें दोनों नि का प्रयोग ग्रन्थकार ने स्वीकार किया है। स्वर प्रयोगों की दृष्टि से सम्प्रति इसका थाट खमाज सिद्ध होता है क्योंकि अवरोह में कोमल नी का प्रयोग ही अधिक रुचिकर बनेगा। वादी स्वर प तथा संवादी सा होगा। गायन-वादन का समय वादी संवादी की दृष्टि के दिन का प्रथम प्रहर या द्वितीय प्रहर मानना उचित है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि़ ध प ध म प ग म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प ध सा रे ग म ग रे सा म प ध नि नि़ ध प ध म प ग रे सा

सम्प्रति अओठी राग का कोई विवरण कहीं प्राप्त नहीं होता।

यह अत्यन्त अप्रसिद्ध राग है।

## राग चैत्री गौरी

चैत्री गौरीसमुत्पन्ना मतीव्रार्षभकोमला ॥७२॥

सरगम – स स प प प स रे ग ग ग ग ग ग म प ध म प ग रे स ग ग
ग म म प ध म प ग रे रे स नी ध नी नी रे स नी ध प ॥७२॥

मूलार्थ

राग चैत्री गौरी राग से उत्पन्न है। इसमें ऋषभ कोमल तथा म॑ तीव्र प्रयुक्त होता है। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा सा प प प सा रे॒ ग ग ग ग ग ग म॑ प ध म॑ प ग रे सा ग ग ग म॑ म॑
प ध म॑ प ग रे॒ रे॒ सा नी ध नी नी रे॒ं सां नी ध प

मूलार्थ

ग्रन्थकार ने राग चैत्री को गौरी राग से समुत्पन्न कहा है जिसमें रे॒ ध॒ कोमल म॑ तीव्र स्वर माना है। तथैव इसमें म॑ तीव्र तथा ऋषभ कोमल है। फलत: गौरी राग समुत्पन्ना ग्रन्थकार का कथन उचित है। इस पूर्ण परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे॒ ग म॑ प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध म॑ प ग रे॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ग म॑ म॑ प ध म प ग रे॒ रे॒
थाट – पूर्वी, वादी स्वर प संवादी स्वर रे है।

इसके गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर है। आधुनिक प्रचलित रागों में चैत्री राग का विवरण कहीं भी प्राप्त नहीं होता।

## राग जैजैवन्ती

सौरठीत: समुत्पन्ना जैजैवन्ती च पादिमा ।
कोमलावत्र गांधारनिषादौ परिकीर्तितौ ॥७३॥

सरगम – प प प रे रे स रे ग ग ग ग ग म प प ग रे स नी नी नी स ग
ग रे स स नी नी नी नी प नी रे रे स नी नी प प म म म म म म ध प प
स स नी ध ध प म प स नी नी ध प प ॥७३॥

मूलार्थ

राग जैजैवन्ती राग सौरठी राग से समुत्पन्न माना गया है। इसमें ग और नि स्वर कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसका आदि स्वर प है। इस राग का सरगम इस प्रकार है –

प प प रे रे सा रे ग॒ ग॒ ग॒ ग॒ ग॒ म प प ग॒ रे सा नी॒ नी॒ सा ग॒ ग॒ रे सा सा

नी॒ नी॒ नी॒ नी॒ प़ नी॒ रे रे सा नी॒ नी॒ प प म म म म म म ध प प सां सां नी॒
ध ध प म प़ सां नी॒ नी॒ ध प

विवृति

इस राग को सौरठी राग से समुत्पन्न कहा गया है। राग सौरठी या सोरठी में भी नि ग कोमल स्वर लगते हैं। इसीलिए इसे सौरठी समुत्पन्ना कहा गया है। ग्रन्थ में रचनाकार ने राग सोरठी का उल्लेख (श्लोक संख्या ४५) किया है। यहाँ "सौरठीत: समुत्पन्ना" जैजैवन्ती को स्वीकार किया है। इससे दो बातें ज्ञात होती हैं। प्रथम यह कि सोरठी की जगह सौरठी लिपिकार के द्वारा असावधानी वश लिखा गया, द्वितीय यह की लेखक सोरठी और सौरठी दोनों शब्दों का व्यवहार सोरठी के लिए करते हैं। पर दोनों अवस्थाओं में स्वर तो वही रहेंगे। फलत: दोनों तात्पर्य मानने पर भी कोई हानि नहीं है। फिर भी सोरठी मानना अधिक उचित है। इसमें प वादी होने के कारण रे संवादी है। स्वरों की दृष्टि से यह राग सम्पूर्ण जाति का है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। इसका थाट काफी है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुद४ाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग॒ म प म ध प सां नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प नि॒ प म प ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प रे सा रे ग॒ ग॒ ग॒ प प ग॒ रे सा नि़ नि़ सा

राग जैजैवन्ती आधुनिक समय में भी पर्याप्त प्रसिद्ध है। सम्प्रति इसे खमाज थाट का राग माना जाता है। इसमें दोनों गान्धार एवं दोनों निषादों का प्रयोग किया जाता है। इसका वादी स्वर रे एवं संवादी प है। इसे रात्रि के तृतीय या चतुर्थ प्रहर में गाया-बजाया जाता है। इसमें शुद्ध नि का प्रयोग प के साथ एवं कोमल नि का धैवत के साथ प्रयोग किया जाता है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ध़ नि़ रे, रे ग म प नि सां
अवरोह – सां नि॒ ध प, ध ग म रे, ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ग॒ रे, नि़ सा ध़ नि़ रे

राग जैजैवन्ती के यद्यपि अन्य प्रकार प्राप्त नहीं होते तथापि ग्रन्थकार ने "जैजैवन्ती युतो वापि तत्पूर्व: समुदीरित:" (श्लोक सं० ४६) इस कथन से मह्लार के प्रभेदों में मल्हार जैजैवन्ती का उल्लेख किया है जिसका पूर्ण विवरण उसी स्थल पर दिया गया है।

## राग गौड़मल्हारी

गौडपूर्वमल्हारी स्यान्निषादस्वरकोमला ॥७४॥

सरगम – म म रे रे रे नी स रे म म ग ग म प प म प म ग रे म म म म
म म म रे ग म प ध ध स स ध प म ग रे ॥७४॥

मूलार्थ

गौड़मल्हारी राग में निषाद स्वर कोमल एवं शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

म म रे रे रे नि़ सा रे म म ग ग म प प म प म ग रे म म म म म म म
रे ग म प ध ध सां सां ध प म ग रे

विवृति

गौड़मल्हारी राग का परिचय अधिक न देकर ग्रन्थकार ने मात्र निषाद कोमल है, इतना परिचय दिया है। सरगम के प्रयोग में अवरोह में निषाद का प्रयोग नहीं किया। आरोह में भी अल्प प्रयोग दिखाया हैं। केवल नी के कोमल होने से इसे खमाज थाट के अन्तर्गत रख सकते हैं। राग का प्रारम्भ मध्यम से है। फलत: म वादी सा संवादी इस राग का होना चाहिए। सरगम की दृष्टि से सम्पूर्ण षाडव जाति का राग प्रतीत हो रहा है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का पूर्वार्ध प्रतीत होता है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि़ सा रे म ग म प ध नि सां
अवरोह – सां ध प म प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – म म रे रे नि़ सा रे म म ग म प म ग रे

सम्प्रति प्राप्त गौड़मल्हार का परिचय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग रे म ग रे सा रे प म प ध नि सां
अवरोह – सां ध नि प प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – रे ग रे म ग रे सा रे प म प ध सां ध प म
थाट – खमाज, वादी-संवादी – सा म, समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर

## राग छाया

छाया नटदेशजा प्रोक्ता बहुधा धादिमा स्मृता ।।७५।।

सरगम – ध ध प ध प ध प ग रे रे ग ध नी स ध ध प प ध ध प प रे
ग रे ग ध ध प प नी स रे रे ग ग प ध नी ध ध नी प म ग ग ग रे रे स
ध नी स ध प प प ध ग ग रे रे ध नी स ।।७५।।

मूलार्थ

राग छाया को नट एवं देश राग से जन्य माना गया है। आदि स्वर इसका धैवत है। इसका सरगम इस प्रकार है –

ध ध प ध प ध प ग रे रे ग ध नी सां ध ध प प ध ध प प रे ग रे ग ध
ध प प, ऩी सा रे रे ग ग प ध नी ध ध नी प प म ग ग ग रे रे स ध़ ऩी
सा ध प प प ध ग ग रे रे ध़ ऩी सा

विवृति

राग छाया को राग नट और देश से उत्पन्न कहा गया है क्योंकि दोनों को ग्रन्थकार सम्पूर्ण जाति का तथा शुद्ध स्वर युक्त मानता है। देश में रे को छाया में ध को आदि स्वर माना है। ग्रन्थकार यद्यपि नट नामक किसी पृथक् राग की चर्चा तो नहीं की पर नाटिका नटनारायण नट विलावल राग की राग की चर्चा (२८, ५४, ५६) अवश्य की है। राग नाट या नाटिका का आदि स्वर ग_ कहा गया है। इस छाया राग में सरगम की दृष्टि से अरोह में 'म' वर्जित होने से इसकी जाति षाडव-सम्पूर्ण है। वादी स्वर ध के होने से संवादी स्वर रे है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग प ध नि सां
अवरोह – सां ध प ध नि प म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा ध़ ऩि सा ध ध प ध ग ग रे रे सा ध़ ऩि सा

सम्प्रति राग छाया का सम्प्राप्त विवरण इस प्रकार है। राग छाया सम्प्रति एक अप्रचलित स्वरूप में है। अत्यन्त तपस्वी गुणीजनों के पास ही उसका ज्ञान है। सर्वत्र छाया नट ही अधिक प्रसिद्ध है। राग छाया में शुद्ध एवं कोमल निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण एवं सा वादी तथा प संवादी है। गायन-वादन

का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका थाट विलावल है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा ग म रे सा, ग म प ध नि सां
अवरोह – सां ध नि॒ प प रे सा ग म रे ग म रे ग
मुख्य स्वर समुदाय – प ग म रे सा ध़ प़ सा, सा म प प रे सा

राग छाया को ग्रन्थकार ने नट तथा देश से जन्य माना है। इसका तात्पर्य यह है कि इसमें राग नट तथा देश की स्वर संगतियों का प्रभाव है। ग्रन्थकार ने राग नट का विवरण नहीं दिया। पर राग देश का विवरण अवश्य दिया है। राग देश में सां नी ध ध प म प प रे रे सा यह चलन स्वरों का है। इसका प्रभाव राग छाया में ग्रन्थकार ने ध ध प रे इस रूप में दिखा है। इसी प्रकार राग नट का भी स्वरूप इस राग में है। यथा राग नट का सा रे, रे ग ग म ग रे सा रे सा सा ग रे रे ग ग म म प सा रे सा इत्यादि स्वर समुदाय का प्रभाव राग छाया के सा रे रे ग ग प ध नी ध ध नी इत्यादि स्वर समुदाय में दिखायी देता है। इसी आधार पर लेखक ने इसे नट देशजा कहा है।

## राग छायानट

छायापूर्वो ततः प्रोक्तः छायास्वरयुतः सदा ।
शुद्धतीव्रमसंयुक्तः सम्पूर्णो निस्वरादिमः ॥७६॥

सरगम – नी ध ध म प रे ग ग ग प म ग रे नी नी नी रे रे स स नी नी
रे रे रे रे ग ग ग ग म म रे नी नी नी रे रे स स ग ग म म प ध नी प रे
रे रे रे रे ग ग ग ग ग ग ग रे स, स नी स स नी स प म म नी स प ग
ग ग म प ग रे ॥७६॥

मूलार्थ

छाया राग के स्वरों से युक्त शुद्ध तीव्र मं से संयुक्त सम्पूर्ण जाति का छाया स्वर पूर्ववाला छायानट राग माना जाता है जिसका आदि स्वर नि है। इसका सरगम इस प्रकार है –

नी ध ध मं प रे ग ग ग प म ग रे ऩी ऩी ऩी रे रे सा सा ऩी ऩी रे रे रे रे
ग ग ग ग म म रे ऩी ऩी ऩी रे रे सा सा ग ग मं मं प ध नी प रें रें रें रें

रें गं गं गं गं गं गं गं रें सां सां नी सां, सां नी सां पं मं मं नी सां, प ग ग
ग म प ग रे

विवृति

छाया स्वरयुक्त छायानट में नी स्वर को आदि (वादी) स्वर मानकर दोनों मध्यम का प्रयोग किया है जिससे यह कल्याण थाट का बनता है। इसमें सभी स्वरों का प्रयोग होने से इसकी जाति सम्पूर्ण है। नि के वादी होने से संवादी ग स्वर होता है। वादी-संवादी की दृष्टि से इसके गायन-वादन का समय प्रातःकाल होगा।

इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा नि़ रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध मं प रे ग प म ग रे नि़ सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि ध ध मं प रे ग ग प म ग रे नि़ नि़ रे रे सा

आधुनिक छायानट से इसकी साम्यता कुछ न कुछ बनती है। जिसका विवरण इस प्रकार का है –

राग छायानट सम्प्रति कल्याण थाट का माना जाता है। इसमें दोनों मध्यम का तथा सभी स्वरों का प्रयोग होता है। इसलिए इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। इसके गायन-वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग का आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि ध सां
अवरोह – सां नि ध प मं प ध प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – प रे ऽ रे ग ऽ ग म ऽ म प ऽ ग म रे सा रे सा

## राग धानी (धनाश्री समुत्पन्न)

धनाश्रीतः समुत्पन्ना धानी गान्धारकोमला ।
मद्वयाभ्यां युता पूर्णा मद्वयेन विभूषिता ।।७७।।

सरगम – ध नी म ग ग म प ग प प म ग ग रे स रे नी स म स म ग रे
रे स नी नी प म म प नी स ग रे ग ग ।।७७।।

मूलार्थ

राग धानी धनाश्री राग से समुत्पन्न माना जाता है। इसमें गान्धार कोमल तथा दोनों मध्यम का प्रयोग होता है। यह एक सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका सरगम इस प्रकार है –

ध नी म ग ग मं प ग प प म ग रे सा रे ऩी सा म सा म ग रे रे सा, नी नी प मं मं प नी सां गं रें गं गं

विवृति

इस राग के विवेचन में ग्रन्थकार ने 'मद्वयाभ्यां युता' तथा 'मद्वयेन विभूषिता' कहा। एक ही बात को दो बार कहना संदेह उत्पन्न करता है। सम्भवत: इसमें ग्रन्थकार को दोनों निषाद अभिप्रेत हों और "नि द्वयाभ्यां युता" ऐसा पाठ होना चाहिए था क्योंकि धनाश्री से यह समुत्पन्न कही गयी है और धनाश्री में कोमल नी का प्रयोग होता है। और ग्रन्थकार अन्तर दिखाने के लिए शुद्ध कोमल दोनों निषाद का प्रकार मानता हो। पर लिपिकार से प्राप्त पुस्तक में (पाण्डुलिपि) मद्वयाभ्यां मद्वयेन यही पाठ है जिसमें मद्वयाभ्यां के स्थान पर निद्वयाभ्यां पाठ होना अधिक उचित है। मेरे विचार से स्वर चलन के आधार पर 'मद्वयाभ्यां' (जो व्याकरण की दृष्टि से भी अशुद्ध पाठ है) के स्थान पर 'निद्वयेन' होना चाहिए। जिससे पाठ भी शुद्ध रहेगा तथा पुनरुक्त दोष भी नहीं होगा। इसमें शुद्ध मध्यम का अवरोह में ग के साथ तथा तीव्र का आरोह में या प के बीच या साथ में प्रयोग होगा। नी का भी अवरोह में कोमल तथा ध के साथ आरोह में शुद्ध प्रयोग मान सकते हैं। इसका थाट काफी तथा जाति सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर ग एवं संवादी नी स्वर प्रतीत होता है। यद्यपि सरगम का प्रारम्भ ध से है पर सरगम में इसका अल्प प्रयोग उसे वादी स्वर से अलग करता है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ऩि सा ग मं प मं प नि ध नि सां
अवरोह – सां नि प मं प ग म ग रे सा रे ऩि सा
मुख्य स्वर समुदाय – ध नि म ग ग मं प ग प म ग रे सा रे ऩि सा

सम्प्रति प्राप्त राग धानी का विवरण इस प्रकार है –

जाति – औडव-औडव, थाट – काफी
वादी-संवादी – ग, नि

गायन-वादन का समय – रात्रि द्वितीय प्रहर
आरोह – सा ग॒ म प नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ प म ग॒ सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि़ नि़ सा प़ नि़ सा ग॒ म प म ग॒ सा नि़ सा

## राग धानी (सैन्धवी समुत्पन्न)

सैन्धवीतः समुत्पन्ना निगौ यत्र च कोमलौ ॥७८॥

सरगम – स रे म प ध नी ध प म प म म ग ग रे स नी स नी ध प म म
प प ध ध प म प म म ग रे रे स ॥७८॥

मूलार्थ

सैन्धवी राग से समुत्पन्न राग धानी में नि॒ ग॒ कोमल लगते हैं। शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका सरगम इस प्रकार है –

सा रे म प ध नी॒ ध प म प म म ग॒ ग॒ रे सा नी़ सा नी॒ ध प म म म प प
ध ध प म प म म ग॒ रे रे सा

विवृति

राग धानी के अनेक भेद ग्रन्थकार बता रहा है। पूर्व पद्य में उसे धनाश्री से उत्पन्न बताया गया था। दूसरे प्रकार में सैन्धवी से समुत्पन्न माना गया है। इसका थाट काफी तथा आरोह में 'ग' स्वर का सरगम में प्रयोग न होने से जाति षाडव सम्पूर्ण एवं वादी-संवादी ग, नि है। गायन-वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प ध नि॒ सां
अवरोह – सां नि॒ ध प म प ध प म ग॒ रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ध नि॒ ध प म प ध प म प म ग॒ रे सा

# राग सूहा एंव सुघराई

कर्नाटीतः समुत्पन्ना सूहा च निगकोमला ।

सरगम – प प म प प ग प म ग ग म रे स स स स रे रे रे म म प प प
प प प प प प रे नी स ॥७९॥

कर्नाटीतः समुत्पन्ना सुघराई निकोमला ।
गान्धारकोमला चैव सादिमा परिकीर्तिता ॥८०॥

### मूलार्थ

कर्नाटी राग से समुत्पन्न जिसमें ग नि कोमल प्रयुक्त होते हैं उसे राग सूहा कहा जाता है। इस राग का सरगम इस प्रकार है –

प प म प प ग_ ग_ प म ग_ ग_ म रे सा सा सा सा रे रे रे म म प प प प प
प प प प रे नी़_ सां

कर्नाटी राग से समुत्पन्न राग सुघराई जिसमें ग एवं नि स्वर कोमल प्रयुक्त होते हैं। इसका आदि स्वर सा कहा गया है।

### विवृति

कर्नाटी राग से इन दोनों सूहा एवं सुधराई राग को समुत्पन्न माना गया है। राग सूहा में ग_ नि_ कोमल शेष स्वर शुद्ध कहे गये हैं। पर ध का प्रयोग सरगम में नहीं है। नी का प्रयोग भी अल्प है। अतः इसकी जाति षाडव-षाडव प्रतीत होती है। सरगम के आधार पर प वादी और सा संवादी प्रतीत होता है। गायन-वादन का समय रात्रि का चतुर्थ प्रहर या अर्धरात्रि के बाद का है। इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे म प रें नि_ सां
अवरोह – सां नि_ प म प ग_ ग_ प म ग_ म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे म प ग_ ग_ प म ग_ म रे सा सा

सम्प्रति प्राप्त सूहा राग का स्वरूप इस प्रकार है –

राग सूहा काफी थाट जन्य औडव-षाडव जाति का राग है। इसमें आरोह में रे_ ध_ तथा अवरोह में ध वर्जित है। इसके गायन-वादन का समय दिन का द्वितीय प्रहर एवं

वादी संवादी स्वर ग नि है। इसमें ग नि कोमल प्रयुक्त होते हैं। इसका आरोह, अवरोह एवं मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – नि सा ग म प नि सां
अवरोह – सां नि प म प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – नि सा ग म प नि प म प ग रे सा

राग सुघराई का कोई सरगम ग्रन्थकार ने नहीं दिया। इससे यह प्रतीत होता है कि सूहा के ही स्वर सुघराई में प्रयुक्त होते हैं। अन्तर केवल इतना है कि सूहा नि ग कोमल शेष स्वर शुद्ध लगते हैं जबकि सुघराई में यद्यपि नि ग कोमल ही लगते हैं पर वादी स्वर स है तथा इसलिए संवादी स्वर प होना चाहिए। गायन-वादन समय मध्याह्न रहेगा।

इसका आरोह, अवरोह तथा मुख्य स्वर समुदाय इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म प ग म रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा रे ग म प ध प नि ध प म प ग रे सा

सम्प्रति प्राप्त सुघराई राग का विवरण इस प्रकार है –

आरोह – सा रे ग म प नि सां
अवरोह – सां ध नि प म म ग रे सा
मुख्य स्वर समुदाय – सा नि सा रे ग म रे सा नि प सा रे म प ग म रे सा
थाट – काफी
वादी-संवादी – प एवं सा
गायन-वादन का समय – मध्याह्नकाल
जाति – षाडव सम्पूर्ण

इस प्रकार इस ग्रन्थ में लगभग ८८ रागों का विवेचन ग्रन्थकार ने किया है। यह ग्रन्थ अपूर्ण है। इसका विवरण इतना ही उपलब्ध है। इस ग्रन्थ के सम्पादन में दो मातृकाओं को लिया गया। परन्तु एक मातृका में मात्र ६७ पद्य ही प्राप्त हैं। द्वितीय मातृका में यद्यापि ८०पद्य प्राप्त हुए हैं परन्तु ग्रन्थ की पूर्णता का कोई सङ्केत नहीं है। इसी कारण इस ग्रन्थ की अपूर्णता प्रतीत होती है।

◆◆

# ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ
('क' मातृका प्रथम पृष्ठ)

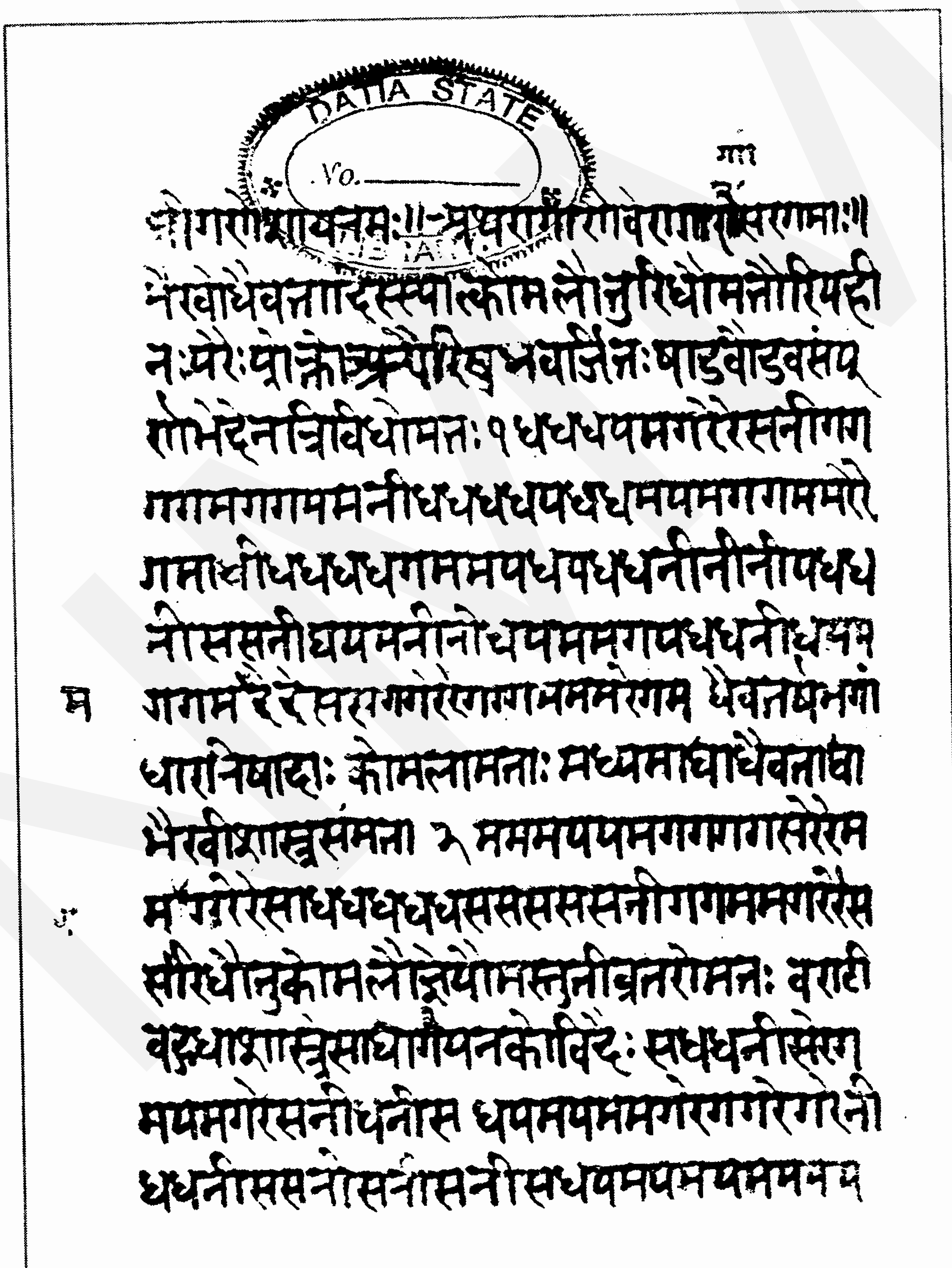


गरा रै
श्रीगणेशायनमः॥ अथ रागार्णवे रागाः सरगमाः॥
भैरवो धैवतादिस्यात्कोमलौ नु रिधौ मतौ रिपही
नः प्रैः प्रोक्तो ऽथ पौरिषु भवर्जितः षाडवौडवसंपू
र्णो भेदेन त्रिविधो मतः १ धधधपमगरेरेसनीगग
गगमगगममनीधपधधपधधमपमगगममरे
गमाधीधधधधगममपधपधधनीनीनीपधध
नीससनीधपमनीनीधपममगपधधनीधपम
म गगमरेरेसरेगमगरेगगगममगरेगम धैवतषड्जगां
धारनिषादः कोमलामताः मध्यमाद्या धैवताद्या
भैरवीशास्त्रसंमता २ मममपपमगगगगसेरेम
मगरेरेसाधधधधधससससनीगगममगरेस
सौरिधौनुकोमलौज्ञेयौ भस्तुनीव्रतरो मतः वराटी
वङ्ख्याशास्त्रसाधागौपनकोविदैः सधधनीसेरग
मपमगरेसनीधनीस धपमपममगरेगगरेगरेनी
धधनीससनीसनीसनीसधपमपमपममम

ग्रन्थ का अन्तिम पृष्ठ
('ख' मातृका अन्तिम पृष्ठ)

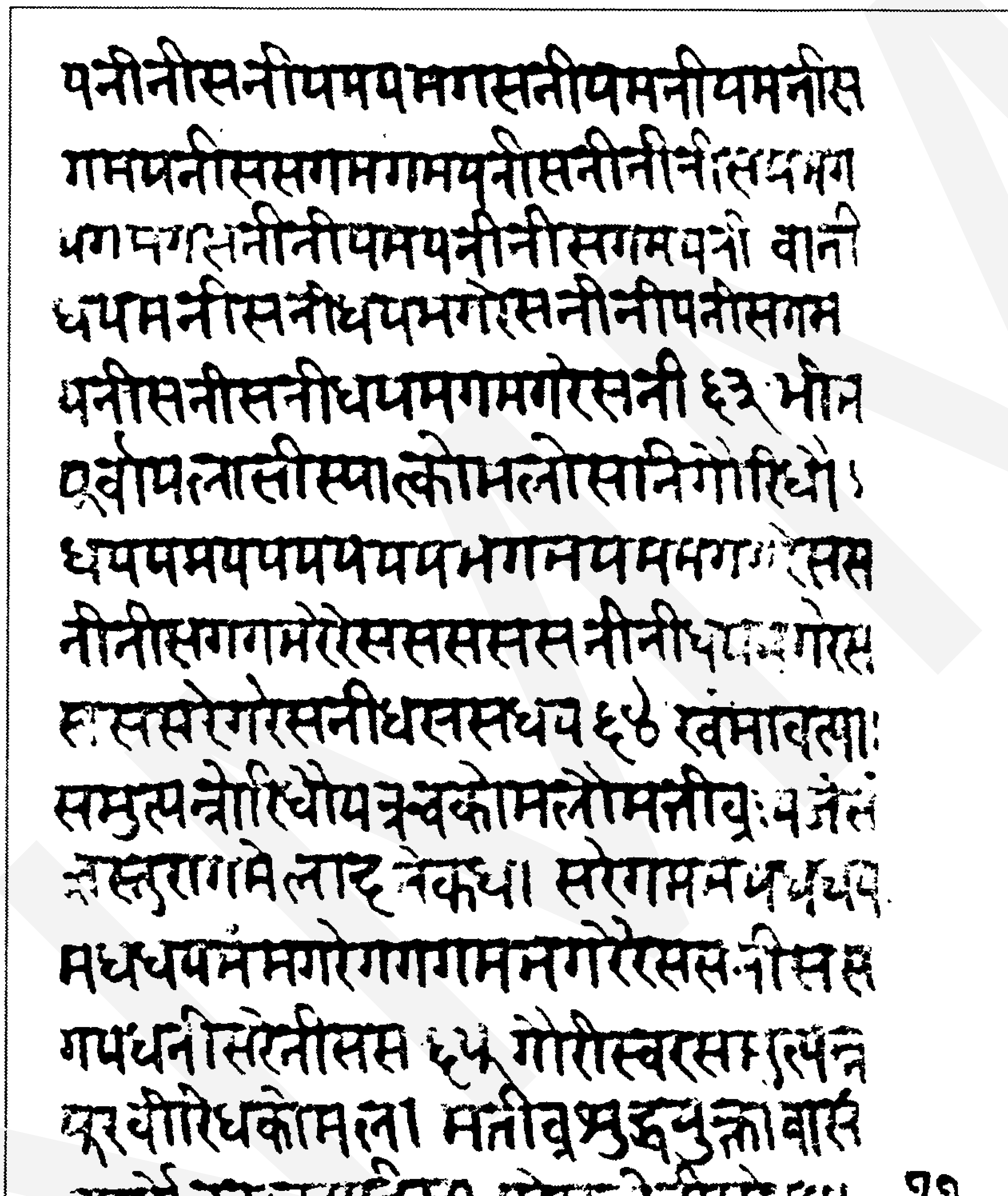
पनीनीसनीपमपमगसनीपमनीपमनीस
गमपनीससगमगमपनीसनीनीनीसपमग
मगपगसनीनीपमपनीनीसगमपनी वानी
धपमनीसनीधपमगरेसनीनीपनीसगम
पनीसनीसनीधपमगमगरेसनी ६३ भोग
वापत्नासीस्पात्कोमलोसानिगोरिधो।
धपपमपपपपपपमगगमपममगग रेसस
नीनीसगगमरेरेससससस नीनीप[illegible]गरेस
[illegible]ससरेगरेसनीधससधप ६४ खंमावती:
समुत्पन्नोरिधोपत्रकोमलोमत्तीव्र:मजे
[illegible]रागमेलाद् नेकधा। सरेगमम[illegible]
मधधपमंमगरेगगगममगरेरेससनीसस
गपधनीसरेनीसस ६५ गोरीस्वरस[illegible]त्पन्न
[illegible]धोरेधकोमला। मतीव्रभुद्धयुक्ता वारे
[illegible]रोक्तास्वरादिमा। सरेसनीनीसरेगग। ११

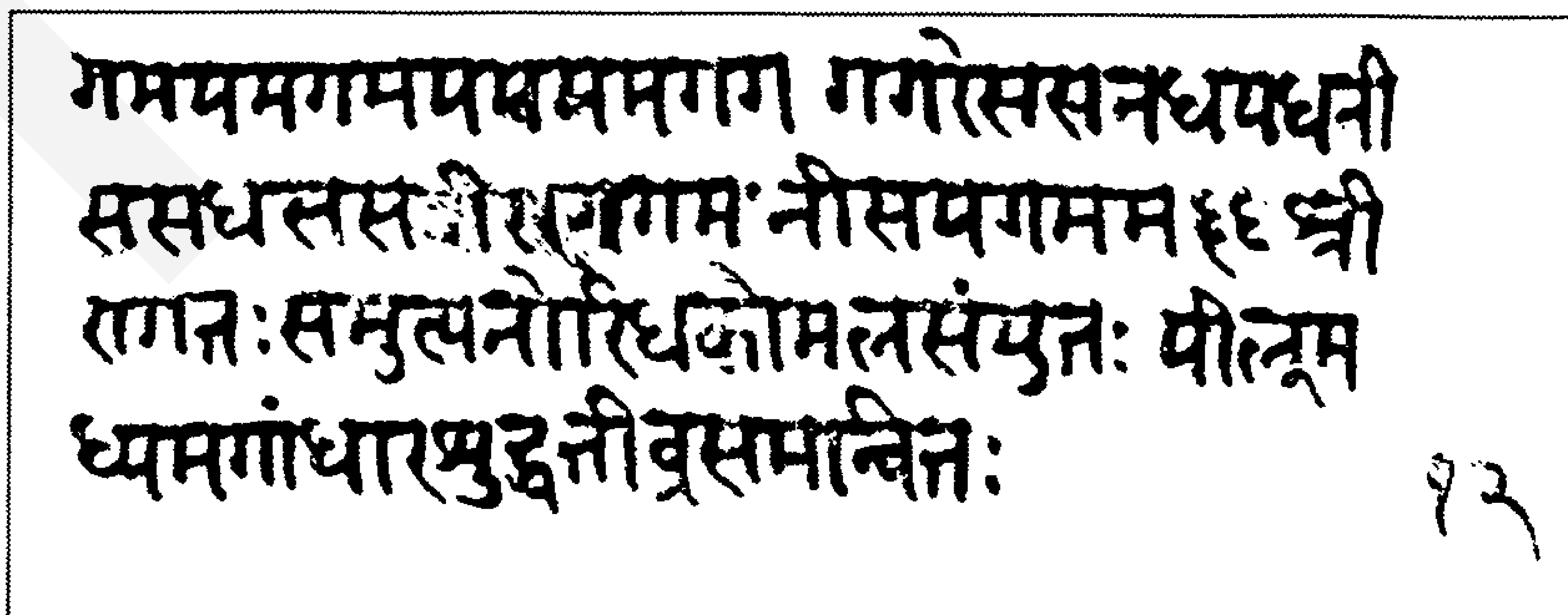
गमपमगमपममगग गगरेससनधपधनी
ससधससनी[illegible]गगम नीसपगमम ६६ श्री
रागन:समुत्पन्नोरिधकोमलसंयुत: पीलूम
ध्यमगांधारशुद्धतीव्रसमान्वित: १२

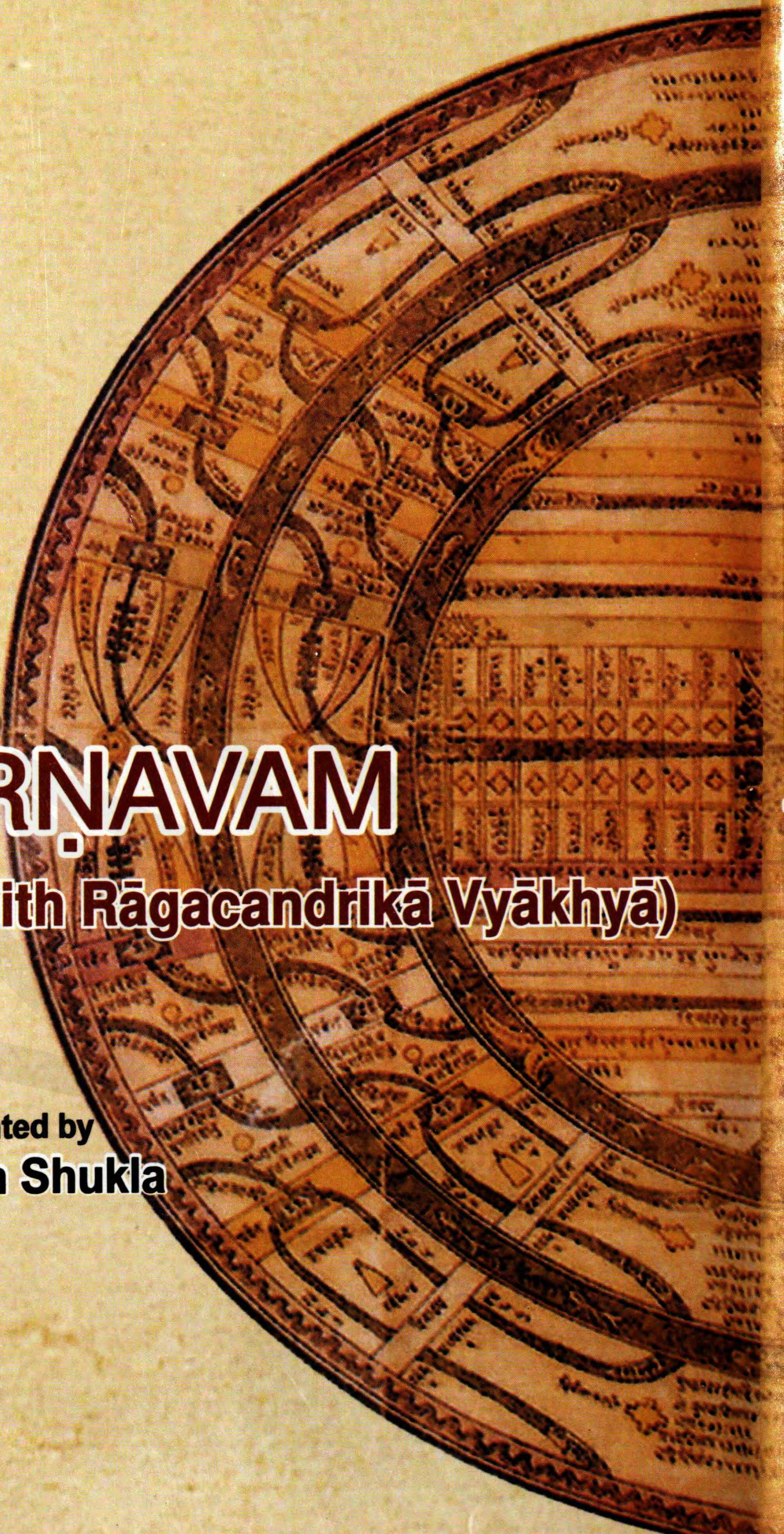

# RĀGĀRṆAVAM

## (with Rāgacandrikā Vyākhyā)

Edited & Commented by
**Bhagavatsharan Shukla**

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
॥ विज्ञानमुपास्व ॥
National Mission for Manuscripts